@Qpatrika @qaumipatrika hindi instagram.com/qaumipatrika

दिल्ली-हरियाणा-पंजाब-चण्डीगढ़-उत्तर प्रदेश से प्रसारित

बुधवार, 17 सितंबर 2025

# कौमी पत्रिका

राष्ट्रीय दैनिक अखबार

VISIT: www.qaumipatrika.in
Email: qpatrika@gmail.com

R.N.I. No. UP-HIN/2007/21472 सम्पादक - गुरचरन सिंह बब्बर वर्ष 18 अंक 308 qaumipatrikahindi 011-41509689, 23315814, 9312262300 गाजियाबाद संवत् 2077-78, पेज (12) मूल्य 3.00 रुपये (हवाई शुल्क 50 पैसे अतिरिक्त)

# महाराष्ट्र में 31 जनवरी 2026 तक स्थानीय निकाय चुनाव कराने का निर्देश

## •सुप्रीम कोर्ट का अहम फैसला

**एजेंसी**

**नई दिल्ली।** सुप्रीम कोर्ट ने महाराष्ट्र सरकार और राज्य चुनाव आयोग को 31 जनवरी, 2026 तक राज्य में स्थानीय निकाय चुनाव कराने का निर्देश दिया है। न्यायमूर्ति सूर्यकांत और जस्टिस जॉयमाल्या बागची की पीठ ने महाराष्ट्र के अधिकारियों को इस साल 10 अक्तूबर तक राज्य में परिसीमन प्रक्रिया पूरी करने का भी निर्देश दिया। शीर्ष न्यायालय ने इस बात पर भी आपत्ति जताई कि 6 मई को जारी उसके तर्कसंगत आदेश के बावजूद राज्य चुनाव आयोग इस संबंध में शीघ्र कार्रवाई करने में विफल रहा। तत्कालीन आदेश में स्थानीय निकाय चुनावों की अधिसूचना चार सप्ताह के भीतर और चुनाव चार महीने के

भीतर कराने का निर्देश दिया गया था। कोर्ट ने अब महाराष्ट्र में स्थानीय चुनाव कराने के लिए कार्यक्रम निर्धारित करते हुए समय सीमा में और विस्तार दे दिया है। कोर्ट ने यह भी स्पष्ट किया कि इस संबंध में आगे कोई विस्तार नहीं दिया जाएगा।

**2022 में यथास्थिति बनाए रखने का दिया था निर्देश**

इससे पहले 22 अगस्त 2022 को सुप्रीम कोर्ट ने राज्य चुनाव आयोग और महाराष्ट्र सरकार को स्थानीय निकायों की चुनाव प्रक्रिया के संबंध में यथास्थिति बनाए रखने का निर्देश दिया था। इससे पहले महाराष्ट्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की थी। इस याचिका में शीर्ष अदालत के उस आदेश को वापस लेने की मांग की गई थी, जिसमें राज्य चुनाव आयोग को निर्देश दिया गया था कि नई आरक्षण नीति उन 367 स्थानीय निकायों पर लागू नहीं होगी, जहां चुनाव प्रक्रिया पहले ही शुरू हो चुकी है। इसके बाद सरकार ने शीर्ष अदालत में याचिका दायर कर अपने आदेश को वापस लेने या उसमें संशोधन की मांग की थी।

### चुनाव आयोग को दी थी चेतावनी

शीर्ष अदालत ने 28 जुलाई 2022 को राज्य चुनाव आयोग को चेतावनी दी थी कि अगर उसने स्थानीय निकायों के लिए चुनाव प्रक्रिया को फिर से अधिसूचित किया तो उसके खिलाफ अवमानना की कार्रवाई की जाएगी। इससे पहले राज्य सरकार स्थानीय निकाय चुनावों में अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) को 27 प्रतिशत आरक्षण प्रदान करने वाला अध्यादेश लेकर आई थी।

# सूचना-जैविक व वैचारिक युद्ध से निपटने के लिए रहें सतर्क और तैयार, सुदर्शन चक्र की है तैयारी : रक्षा मंत्री

## 'भारत को 'सुदर्शन चक्र' मिशन के लिए मध्यम व दीर्घकालीन योजना तैयार करने की आवश्यकता'

**एजेंसी**

**नई दिल्ली।** भारत को 'सुदर्शन चक्र' मिशन के लिए मध्यम व दीर्घकालीन योजना तैयार करने की आवश्यकता है। मंगलवार को यह बात रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कही। रक्षा मंत्री ने तीनों सेनाओं की संयुक्तता पर बल दिया।उन्होंने सेनाओं का आह्वान करते हुए कहा कि वे युद्ध की पारंपरिक अवधारणाओं से आगे बढ़कर अपरंपरागत खतरों - जैसे सूचना युद्ध, वैचारिक युद्ध, इकोलॉजिकल एवं बायोलॉजिकल (जैविक) युद्ध - से निपटने के लिए सतर्क और तैयार रहें। उन्होंने कहा कि बदलते वैश्विक परिदृश्य, क्षेत्रीय अस्थिरता और उभरते सुरक्षा परिदृश्य के मद्देनजर देश की सुरक्षा प्रणाली का लगातार आकलन और समीक्षा आवश्यक है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह मंगलवार को कोलकाता में आयोजित संयुक्त कमांडर्स सम्मेलन 2025 को संबोधित कर रहे थे। रक्षा मंत्री ने कहा कि युद्ध की प्रकृति निरंतर बदल

रही है और हाल के वैश्विक संघर्षों ने यह साबित किया है कि तकनीक-समर्थ सेना आज की आवश्यकता है। उन्होंने कहा, 'आज के युद्ध इतने अचानक और अप्रत्याशित होते हैं कि उनकी अवधि का पूर्वानुमान लगाना कठिन है। यह दो महीने, एक वर्ष या पांच वर्ष भी चल सकता है। हमें तैयार रहना होगा और यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारी किसी आपात स्थिति से निपटने की क्षमता पर्याप्त बनी रहे। राजनाथ सिंह ने सेनाओं से आक्रामक एवं रक्षात्मक क्षमताओं के संतुलन के साथ प्रो-एक्टिव दृष्टिकोण अपनाने का आह्वान किया। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'सुदर्शन चक्र' के विजन को साकार करने के लिए पांच वर्षीय मध्यम अवधि की योजना और दस वर्षीय दीर्घकालीन योजना तैयार करने की आवश्यकता बताई।

# पीएम मोदी के 75वें जन्मदिन पर भाजपा शासित राज्यों में विशेष तैयारियां

## तमाम नेताओं ने दी बधाईयां

**एजेंसी**

**रायपुर।** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 75वें जन्मदिन के अवसर पर छत्तीसगढ़ के उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा ने उन्हें देश के लिए प्रेरणा स्रोत बताते हुए उनकी प्रशंसा की। साथ ही अन्य भाजपा शासित राज्यों के तमाम नेताओं ने उन्हें बधाईयां दी। उन्होंने कहा कि 17 सितंबर को पीएम मोदी का जन्मदिन है और इस अवसर पर 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक सेवा पखवाड़ा मनाया जा रहा है। प्रधानमंत्री हमेशा इस बात पर जोर देते हैं कि उनके जन्मदिन पर लोग सेवा कार्य करें। उन्होंने कहा, 'प्रधानमंत्री मोदी का मानना है कि जन्मदिन पर कुछ न करने के बजाय, हर व्यक्ति को अपने सामर्थ्य के अनुसार सेवा कार्य करना चाहिए। यह उनकी प्रेरणा का हिस्सा है।ह उपमुख्यमंत्री ने अपने निजी अनुभव साझा करते हुए कहा कि उन्हें पहले भी प्रधानमंत्री से मिलने और स्वागत करने का अवसर मिला, लेकिन पहली बार जब पीएम ने उनसे व्यक्तिगत रूप से बात की, वह उनके लिए अविस्मरणीय क्षण था। शर्मा ने बताया, 'नई जिम्मेदारी मिलने के बाद

मैं मुख्यमंत्री के साथ उनसे मिलने गया था। मुलाकात के बाद उन्होंने मुझे नाम से बुलाया और कुछ जिम्मेदारियां सौंपीं। यह मेरे लिए गर्व का पल था और मैं इसके लिए आभारी हूं।' प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन पर ओडिशा की उपमुख्यमंत्री प्रवती परिदा ने कहा कि कल हम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का 75वां जन्मदिन मनाएंगे और यह ओडिशा के लिए भी गर्व का क्षण है क्योंकि यह हमारी प्रमुख योजना सुभद्रा योजना की वर्षगांठ भी है। हम आंगनवाड़ी केंद्र में 7 दिनों तक धन्यवाद पीएम मोदी कार्यक्रम मनाएंगे। साथ ही 338 सीडीपीओ कार्यालय में हम धन्यवाद पीएम मोदी कार्यक्रम मनाएंगे। मैं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

# प्रधानमंत्री मोदी के जन्मदिन पर गीत 'नमो प्रगति दिल्ली-बाल स्वर से राष्ट्र स्वर तक' किया गया लॉन्च

**कौमी पत्रिका**

नई दिल्ली, 16 सितम्बर। दिल्ली सचिवालय भावनाओं, उल्लास और राष्ट्रभक्ति से भरे ऐतिहासिक क्षण का गवाह बना। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस के अवसर पर विशेष रूप से तैयार किए गए गीत 'नमो प्रगति दिल्ली-बाल स्वर से राष्ट्र स्वर तक' को औपचारिक तौर पर लॉन्च किया। इस गीत को दिल्ली के सरकारी स्कूलों के बच्चों ने अपनी आवाज में गाया है, जिसमें भारत की विविध भाषाओं के सुर समाहित हैं। यह गीत माननीय प्रधानमंत्री जी की राष्ट्र निर्माण यात्रा और 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के संकल्प का सशक्त प्रतीक है। मुख्यमंत्री ने बच्चों को विशेष बधाई दी, जिन्होंने प्यार और अपनेपन से सुंदर गीत और वीडियो तैयार किया और

विभिन्न भाषाओं में प्रधानमंत्री जी को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने इसे प्रधानमंत्री के लिए एक बहुत बड़ा और अनमोल उपहार बताया। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के सचिवालय पहुंचते ही दिल्ली के सरकारी स्कूलों के बच्चों ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। इसमें 50 से अधिक सरकारी विद्यालयों ने सक्रिय भागीदारी की, जिसमें गायन, नृत्य, फोटोग्राफी, वीडियोग्राफी और कोरियोग्राफी जैसी प्रतिभाओं का प्रदर्शन किया गया। साथ ही 400 से अधिक छात्रों ने इस विशेष गीत के रिकॉर्डिंग, रचना और प्रस्तुति में योगदान दिया, जो सीधे प्रधानमंत्री जी को समर्पित है। गीत के अलावा छात्रों ने 300 से अधिक हस्तनिर्मित शुभकामना कार्ड भी तैयार किए, जिनमें उन्होंने व्यक्तिगत जन्मदिन की बधाइयां लिखीं।

शेष पृष्ठ 3 पर

# देहरादून में बादल फटा

## ▸▸सोंग नदी में बह जाने से 4 लोगों की जान गई,
## ▸▸उत्तराखंड की टोंस नदी में ट्रैक्टर बहा-8 लोगों की मौत

**एजेंसी**

**देहरादून,** उत्तराखंड के देहरादून में मंगलवार सुबह 5 बजे बादल

फटा। इससे तमसा, कारलीगाड़, टोंस और सहस्त्रधारा नदी में जलस्तर बढ़ गया। सहस्त्रधारा समेत आसपास के कई इलाकों के घरों, दुकानों और मंदिरों में 5-6 फीट तक पानी भर गया। कई सड़कें भी बह गईं। विकास नगर में टोंस नदी में पानी का बहाव अचानक तेज होने से मजदूरों से भरी एक ट्रैक्टर-ट्रॉली नदी में बह गई। इसमें 8 लोगों की मौत हो गई और 4 लोग लापता हैं। वहीं, मालदेवता में सोंग नदी में 5 लोग बह गए, जिसमें से 4 के शव मिल गए हैं जबकि एक लापता है। तमसा नदी के किनारे बने टपकेश्वर महादेव मंदिर में पानी भर गया। यहां मौजूद दुकानें बह गईं। 2 लोग लापता हैं। सहस्त्रधारा में 5 लोगों को बचाया गया। SDRF, NDRF और स्थानीय प्रशासन की टीमें राहत और बचाव कार्य में जुटी हैं।

### महाराष्ट्र के कई जिलों में मूसलाधार बारिश से जनजीवन अस्त-व्यस्त

**मुंबई।** महाराष्ट्र के कई जिलों में खासकर मराठावाड़ा में पिछले चार दिनों से लगातार हो रही भारी बारिश से नदियों का जलस्तर तेजी से बढ़ गया है। बारिश का पानी लोगों के घरों में घुस जाने से जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हो गया है। बीड़ जिले में नदी किनारे रहने वाले 51 लोगों को नौसेना की मदद से सुरक्षित स्थल पर पहुंचाया है। इसे देखते हुए राज्य के आपदा प्रबंधन विभाग ने मंगलवार को बारिश प्रभावित जिलों को अलर्ट मोड पर रहने का निर्देश जारी किया है। महाराष्ट्र आपदा प्रबंधन विभाग के सूत्रों ने आज पत्रकारों को बताया कि पिछले चार दिनों से हो रही मूसलाधार बारिश से नेबीड़ जिले में लोगों का जीना दूभर कर दिया है। साथ ही फसलें लगभग बर्बाद हो गई हैं । बारिश से कांबली और कडी नदियाँ कई इलाकों में बाढ़ ला रही हैं और बड़े इलाके जलमग्न हो गए हैं। दोनों नदियों के किनारे बसे कई गांव बाढ़ के पानी में घिर गए हैं।

# मॉरीशस के प्रधानमंत्री ने अपनी यात्रा के अंतिम चरण में राष्ट्रपति से की मुलाकात

**एजेंसी**

**नई दिल्ली।** मॉरीशस के प्रधानमंत्री डॉ. नवीनचंद्र रामगुलाम ने आज राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति

द्रौपदी मुर्मु से मुलाकात की। इस मुलाकात के साथ ही उनकी 9 से 16 सितंबर तक की भारत की राजकीय यात्रा संपन्न हुई। इस दौरान उन्होंने मुंबई, वाराणसी, अयोध्या, उत्तराखंड के ऋषिकेश एवं हरिद्वार और तिरुपति का दौरा किया।

राष्ट्रपति भवन में प्रधानमंत्री रामगुलाम और उनके प्रतिनिधिमंडल का स्वागत करते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि भारत की 'पड़ोसी प्रथम' नीति, 'महासागर विजन' और वैश्विक दक्षिण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता में मॉरीशस का विशेष स्थान है। दोनों देशों के बीच हर क्षेत्र में साझेदारी और सहयोग बढ़ने से प्रसन्न राष्ट्रपति मुर्मु ने कहा कि यह वृद्धि हाल ही में संबंधों के 'संवर्धित रणनीतिक साझेदारी' के स्तर तक पहुंचने में परिलक्षित होती है। राष्ट्रपति सचिवालय के अनुसार दोनों नेता इस बात पर सहमत हुए कि हमारे दोनों देशों के बीच संबंध अद्वितीय हैं, जो हमारे साझा इतिहास, भाषा, संस्कृति और मूल्यों में निहित हैं। राष्ट्रपति ने विश्वास व्यक्त किया कि प्रधानमंत्री रामगुलाम के व्यापक नेतृत्व अनुभव से भारत-मॉरीशस के दीर्घकालिक द्विपक्षीय संबंध आने वाले समय में और मजबूत होंगे।

**नई दिल्ली।** मॉरीशस के प्रधानमंत्री डॉ. नवीन रामगुलाम ने आज अपनी 8 दिवसीय भारत यात्रा के अंतिम दिन कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी से मुलाकात की। कांग्रेस के मुताबिक, मॉरीशस के प्रधानमंत्री की देश की मुख्य विपक्षी पार्टी के नेताओं से मुलाकात से दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंध, क्षेत्रीय सहयोग और मजबूत होगा।

# 'ऑपरेशन सिंदूर' में मसूद अजहर के परिवार को टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया: जैश कमांडर

**एजेंसी**

**इस्लामाबाद।** 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत प्रमुख आतंकी ढांचे को ध्वस्त करने के महीनों बाद, जैश-ए-मोहम्मद (जेईएम) के एक कमांडर ने स्वीकार किया कि बहावलपुर में भारतीय सशस्त्र बलों के हमलों में आतंकवादी संगठन के संस्थापक मसूद अजहर का परिवार 'टुकड़े-टुकड़े' हो गया। भाजपा आईटी सेल के प्रमुख अमित मालवीय ने सोशल मीडिया पर चल रहे एक वीडियो की रिपोर्ट दी, जिसमें जैश-ए-मोहम्मद का कमांडर मसूद इलियास कश्मीरी सशस्त्र कर्मियों के साथ भारत के 'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान आतंकवादी समूह को हुए भारी नुकसान की बात स्वीकार कर रहा है। पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में जैश-ए-मोहम्मद और लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) के उच्च-मूल्य वाले आतंकी ठिकानों को नष्ट करके जवाबी कार्रवाई की थी।

# नशे से युवाओं को बचाना जरूरी : अमित शाह

## •सरकार इससे निपटने के लिए प्रतिबद्ध :शाह

**एजेंसी**

**नई दिल्ली।** केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने मंगलवार को कहा कि विकसित भारत 2047 का लक्ष्य पाने के लिए युवाओं को नशे से बचाना आवश्यक है। नशे की चपेट में आने पर युवा शक्ति कमजोर होगी और देश का भविष्य खतरे में पड़ेगा। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार देश से इस समस्या के पूरी तरह खात्मे को लेकर काम कर रही है। शाह ने कहा कि इस उद्देश्य से गृह मंत्रालय शीघ्र ही डिपोर्टेशन और प्रत्यर्पण की प्रक्रिया पर नई स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर जारी करने जा रहा है। गृह मंत्री ने आज यहां राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के मादक पदार्थ विरोधी विशेष कार्यबल के दूसरे राष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधन किया। उन्होंने कहा कि विश्व में नशे की आपूर्ति दो बड़े क्षेत्रों से होती हैं। दोनों क्षेत्र भारत के निकट हैं। इसलिए हमें कठोर कदम उठाना जरूरी है। नशे का कार्टेल व्यापार तीन स्तर पर है।

पहला देश की सीमा, दूसरा राज्यों तक वितरण और तीसरा राज्यों में छोटी दुकानों और गलियों तक बिक्री करता है। सभी स्तर पर सक्रिय कार्टेल को समाप्त करना आवश्यक है। गृहमंत्री ने कहा कि विदेशों में बैठे तस्करों पर भी कार्रवाई करनी होगी। इसके लिए प्रत्यर्पण और निर्वासन की प्रक्रिया तेज करनी होगी। केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो ने इस दिशा में सराहनीय काम किया है। सभी राज्य इकाइयों को इसके साथ जुड़ना चाहिए। गृह मंत्रालय जल्द ही मानक प्रक्रिया जारी करेगा। शाह ने कहा कि प्रत्येक जिले में मादक पदार्थ विरोधी अभियान मजबूत करना होगा। उन्होंने अपील की कि पुलिस के साथ शिक्षा अधिकारी, धार्मिक नेता और युवा संगठन अभियान का हिस्सा बनें। उन्होंने कहा कि नशे की प्रयोगशालाओं का नाश करना आवश्यक है। नशा उपलब्ध रहने पर लोग पुनर्वास की ओर नहीं बढ़ते। नशा बंद होने पर ही परिवार और समाज उपयोगकर्ताओं को उपचार के लिए प्रेरित करेंगे। शाह ने कहा कि यह लड़ाई सबको मिलकर लड़नी होगी। उन्होंने कहा कि कांग्रेस-नीत संप्रग सरकार में 40 हजार करोड़ रुपये के ड्रग्स पकड़े गए थे। वहीं भाजपा-नीत राजग सरकार में बीते 10 सालों में 1 लाख 65 हजार करोड़ रुपये के ड्रग्स पकड़े गए हैं। यह बहुत बड़ी उपलब्धि है।

•शाह ने कहा कि इस उद्देश्य से गृह मंत्रालय शीघ्र ही डिपोर्टेशन और प्रत्यर्पण की प्रक्रिया पर नई स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर जारी करने जा रहा है।

# तेजस्वी की हवा हवाई राजनीति से नहीं, नीतीश कुमार के फैसलों से बदल रहा बिहार : राजीव

**एजेंसी**

**पटना।** जनता दल यूनाईटेड (जदयू) के राष्ट्रीय प्रवक्ता राजीव रंजन प्रसाद ने मंगलवार को कहा कि प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव की हवा हवाई राजनीति से नहीं बल्कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के फैसलों से बिहार की तस्वीर बदल रही है।श्री प्रसाद ने आज बयान जारी कर कहा कि मुख्यमंत्री श्री कुमार के लिये बिहार का विकास ही असली एजेंडा है, और उनके दूरदर्शी नेतृत्व क्षमता ने यह बार-बार साबित किया है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार द्वारा शुरू की गई बिहार स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड योजना ने लाखों युवाओं को उच्च शिक्षा के अवसर उपलब्ध कराए हैं। अब इस योजना को और सशक्त करते हुए शिक्षा ऋण को पूरी तरह ब्याजमुक्त कर दिया गया है। यह कदम उन सभी छात्र-छात्राओं के सपनों को नया पंख देगा, जो उच्च शिक्षा लेकर राज्य और देश का भविष्य संवारना चाहते हैं।

जदयू नेता ने कहा कि तेजस्वी यादव एक बार फिर भ्रम की राजनीति में जुट गए हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि जनता को गुमराह करने और झूठ फैलाने की कोशिश में तेजस्वी विकास विरोधी एजेंडा चला रहे हैं। तेजस्वी यादव की राजनीति विकास की नहीं, बल्कि परिवारवाद और संकीर्ण सोच की राजनीति है। जब उनकी पार्टी सत्ता में थी, तब बिहार अंधकार युग से गुजर रहा था भ्रष्टाचार, दलाली और परिवारवाद ही शासन का आधार था। आज जब नीतीश कुमार की सरकार बिना किसी निजी स्वार्थ के निवेश ला रही है, तो उन्हें बेचैनी हो रही है। श्री प्रसाद ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में राज्य में न सिर्फ शिक्षा और उद्योग के क्षेत्र में क्रांति हो रही है, बल्कि कृषि और ग्रामीण विकास में भी ऐतिहासिक कदम उठाए गए हैं।

## विदाई से पहले कई राज्यों में झमाझम बारिश करेगा मानसून, अलर्ट जारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। मानसून अब चला-चली की बेला में है। इससे पहले कई राज्यों में भारी बारिश होगी। इसके लिए मानसून विभाग ने अलर्ट जारी किया है। मौसम विभाग ने अगले कुछ दिनों के लिए उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश और उत्तराखंड सहित कई राज्यों के लिए भारी बारिश का अलर्ट जारी किया है। पटना स्थित मौसम विज्ञान केंद्र ने अगले 3-4 दिनों तक पूर्वी चंपारण, पश्चिमी चंपारण और गोपालगंज में भारी बारिश की चेतावनी जारी की है। इसके अलावा सारण, सिवान, बेगूसराय, किशनगंज, पटना और गया जैसे जिलों में भी गरज-चमक के साथ बारिश की संभावना है। दिल्ली का मौसम आज सुहावना बने रहने की उम्मीद है। वहीं पूर्वोत्तर के राज्यों असम, सिक्किम और मेघालय में भी बारिश हो सकती है। राजस्थान से मानसून ने 15 सितंबर को ही वापसी शुरू कर दी थी। मौसम विभाग के अनुसार इस साल देशभर में सामान्य से 7प्रतिशत अधिक बारिश दर्ज की गई है। यूपी में भी मानसून फिर से सक्रिय हो गया है। मौसम विभाग ने राज्य के 22 जिलों में भारी बारिश और वज्रपात का अलर्ट जारी किया है। इनमें मुरादाबाद, गोरखपुर, अयोध्या, बलिया और अंबेडकर नगर जैसे जिले शामिल हैं। लोगों को उमस भरी गर्मी से थोड़ी राहत मिलने की उम्मीद है लेकिन अगले कुछ दिनों तक सतर्क रहने की सलाह दी गई है। मध्य प्रदेश के खरगोन, बड़वानी, अनूपपुर, डिंडोरी और मंडला जिलों के लिए यलो अलर्ट जारी किया है। इन जिलों में भारी बारिश की संभावना है। साथ ही 24 से अधिक जिलों में बारिश और बिजली गिरने का अनुमान है। देहरादून, बागेश्वर, पिथौरागढ़ और नैनीताल जैसे जिलों में भी हल्की से मध्यम बारिश की संभावना है। देहरादून में हाल ही में बादल फटने की घटना सामने आई थी जिसके बाद प्रशासन अलर्ट पर है।

## इलेक्ट्रिक स्कूटी में शॉर्ट सर्किट से आग लगी, बुजुर्ग दंपति की मौत

आगरा (एजेंसी)। यूपी के आगरा में मंगलवार सुबह एक बड़ा हादसा हुआ। घर में चार्जिंग पर लगी इलेक्ट्रिक स्कूटी में शॉर्ट सर्किट से आग लग गई। हादसे में बुजुर्ग दंपत्ति की झुलसकर मौत हो गई। उधर, सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और मामले की जांच पड़ताल में जुट गई। पुलिस के मुताबिक तड़के करीब पांच बजे मकान की पहली मंजिल पर अचानक आग लग गई। जिसमें 92 वर्षीय भगवती प्रसाद की मौके पर ही मौत हो गई। उनकी पत्नी 85 वर्षीय उर्मिला देवी को गंभीर हालत में अस्पताल ले जाया गया, जहां इलाज के दौरान उनकी भी मौत हो गई। परिजनों ने बताया कि दंपत्ति मकान की पहली मंजिल पर रहते थे, जबकि परिवार के बाकी लोग ऊपर की मंजिल पर सो रहे थे। रात को स्कूटी को घर की पहली मंजिल पर ही चार्जिंग पर लगाया गया था। सुबह अचानक शॉर्ट सर्किट हुआ और आग तेजी से फैल गई। उधर, सूचना पर पहुंची पुलिस और दमकल विभाग ने आग पर काबू पाया, लेकिन तब तक दोनों की जिंदगी नहीं बचाई जा सकी। इस दर्दनाक हादसे से परिवार और मोहल्ले में मातम पसरा हुआ है।

## छात्र-छात्राओं को बिना ब्याज के बिहार सरकार देगी एजुकेशन लोन : सीएम नीतीश

पटना (एजेंसी)। बिहार विधानसभा चुनाव 2025 से नीतीश सरकार ने छात्र-छात्राओं को बिना ब्याज के एजुकेशन लोन देने का ऐलान किया है। सीएम नीतीश कुमार ने मंगलवार को पोस्ट के जरिए यह घोषणा की। उन्होंने कहा कि अभी 12वीं कक्षा पास विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड योजना के तहत एजुकेशन लोन दिया जाता है। इस पर चार फीसदी ब्याज दर लागू थी, जिसे अब पूरी तरह खत्म कर दिया है। सीएम नीतीश ने पोस्ट में लिखा कि सात निश्चय योजना के तहत बिहार में 12वीं पास छात्र जो उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, उनके लिए 2 अक्टूबर 2016 से स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड योजना लागू है। बिहार स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड योजना के अंतर्गत अधिकतम चार लाख रुपए का शिक्षा ऋण सामान्य आवेदक को 4 फीसदी ब्याज दर पर और महिला, दिव्यांग एवं ट्रांसजेन्डर आवेदक को 1 फीसदी ब्याज दर पर दिया जाता है। अब इस योजना के अंतर्गत दिए जाने वाले एजुकेशन लोन की राशि सभी आवेदकों के लिए ब्याज रहित होगी।

## जम्मू-कश्मीर में नेता पर नकाबपोश ने किया जानलेवा हमला, फायरिंग भी की

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के चंदूरा इलाके में दो नकाबपोश बदमाशों ने सोमवार देर रात गुलाम नबी आजाद पार्टी से जुड़े एक स्थानीय नेता मोहम्मद यूसुफ मीर के घर गोलीबारी कर दी। इस संबंध में मीर ने चंदूरा थाना पुलिस को शिकायत दर्ज कराई है। मोहम्मद यूसुफ मीर ने पुलिस को बताया कि देर रात दो नकाबपोश लोग उनके घर में जबरन घुसने की कोशिश कर रहे थे। उन्होंने बताया कि वे उन्हें धमका रहे थे। इस घटना से इलाके में दहशत फैल गई है और लोग अपनी सुरक्षा को लेकर चिंतित हैं। मीडिया रिपोर्ट में शिकायत के मुताबिक दोनों हमलावरों के पास पिस्तौल थी और उन्होंने यूसुफ मीर के घर के पास दो राउंड फायरिंग भी की। इसके बाद मौके से फरार हो गए। यूसुफ ने पुलिस को हमले के दौरान इस्तेमाल की गई एक खाली कारतूस भी सौंपा है। पुलिस ने इसे जांच के लिए कब्जे में ले लिया है। पुलिस ने इस मामले में जांच शुरू कर दी है। सीसीटीवी फुटेज से पता चला है कि दो नकाबपोश बदमाश यूसुफ मीर के घर से निकलते दिख रहे हैं। पुलिस इस फुटेज का इस्तेमाल करके हमलावरों की पहचान करने की कोशिश कर रही है।

## खाना बना रही थी महिला हेड कांस्टेबल, पति ने बेसबॉल से वार कर ले ली जान

सीधी (एजेंसी)। मध्य प्रदेश के सीधी जिले में एक पुलिस हेड कांस्टेबल महिला की हत्या कर दी गई है। वारदात को अंजाम उसके पति ने ही दिया है। घटना के वक्त महिला किचन में खाना बना रही थी, तभी पति ने पीछे से वार कर उसकी हत्या कर दी। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

# मादक पदार्थों की तस्करी करते पकड़े 16000 विदेशी, भारत से होंगे बाहर

### देश में जारी है सक्रिय ड्रग नेटवर्क को तोड़ने और ड्रग-फ्री इंडिया अभियान

**नई दिल्ली(एजेंसी)।** भारत सरकार ने मादक पदार्थों की तस्करी करते पकड़े गए 16,000 विदेशी नागरिकों को भारत से निर्वासित करने की तैयारी कर ली है। ये सभी विदेशी नागरिक अलग-अलग राज्यों में हिरासत में हैं या डिटेंशन केंद्रों में बंद हैं। गृह मंत्रालय के सूत्रों के मुताबिक यह कार्रवाई नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (एनसीबी) की रिपोर्टों पर आधार पर की गई है, जिसका उद्देश्य देश में सक्रिय ड्रग नेटवर्क को तोड़ना और ड्रग-फ्री इंडिया अभियान को मजबूत करना है।

मीडिया रिपोर्ट में सूत्रों के हवाले से बताया गया है कि म्यांमार, बांग्लादेश, फिलीपींस, मलेशिया, घाना और नाइजीरिया जैसे देशों के नागरिक इस सूची में शामिल हैं। इन लोगों पर मादक पदार्थों की तस्करी, परिवहन और संबंधित अन्य आपराधिक गतिविधियों में शामिल होने के गंभीर आरोप हैं। यह कार्रवाई नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो की उस रिपोर्ट के आधार पर की जा रही है, जिसमें इन विदेशी नागरिकों की संलिप्तता उजागर की गई थी।

रिपोर्ट में साफ कहा गया है कि संगठित नेटवर्क के जरिए भारत को ड्रग्स का एक बड़ा ट्रांजिट हब बनाने की कोशिश की जा रही थी। सूत्रों ने बताया कि विदेशी नागरिकों की पूरी सूची गृह मंत्रालय और संबंधित एजेंसियों को सौंप दी है। अब नए आव्रजन कानून के तहत चरणबद्ध तरीके से इन सभी को उनके देशों में भेजने की प्रक्रिया शुरू की जाएगी।

अधिकारियों का मानना है कि यह कदम भारत में नशीले पदार्थों की आपूर्ति श्रृंखला को तोड़ने में अहम भूमिका निभाएगा।

गृह मंत्रालय ने कहा है कि भारत में अवैध तरीके से प्रवेश कर अपराध करने वालों को किसी भी कीमत पर बख्शा नहीं जाएगा। केंद्रीय एजेंसियों के मुताबिक हाल के वर्षों में विदेशी नागरिकों की संलिप्तता मादक पदार्थों की तस्करी में तेजी से बढ़ी है। खासतौर पर महानगरों और तटीय राज्यों में इनकी सक्रियता के सबूत मिले हैं। यही वजह है कि सरकार अब इन्हें देश से बाहर करने की प्रक्रिया को आगे बढ़ा रही है।

केंद्र सरकार ने ड्रग्स के खिलाफ जीरो टॉलरेंस नीति अपनाई है। एंटी-नारकोटिक्स टास्क फोर्स के द्वितीय राष्ट्रीय सम्मेलन में गृह मंत्री अमित शाह ने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के मुख्यमंत्रियों और पुलिस प्रमुखों को निर्देश दिए थे कि ड्रग तस्करी को राष्ट्रीय सुरक्षा का मुद्दा मानकर कार्रवाई करें। इस फैसले के तहत इन विदेशी नागरिकों को हिरासत में रखा जाएगा, जहां से उनकी डिपोर्टेशन प्रक्रिया पूरी की जाएगी।

## चिराग ने अफवाहों पर लगाया विराम, आगामी चुनाव में एनडीए का सीएम चेहरा नीतिश

**पटना (एजेंसी)।** बिहार विधानसभा चुनाव 2025 को लेकर सरगर्मी तेज है। इस बीच एनडीए के सीएम चेहरे पर केंद्रीय मंत्री एवं लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के मुखिया चिराग पासवान ने बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि हर दल के कार्यकर्ता अपने नेता को सर्वोच्च पद पर देखना चाहता हैं। मगर किसी एक दल के कहने से कुछ नहीं होता है। गठबंधन के अंदर मुख्यमंत्री के चेहरे पर सभी पार्टियों की सहमति जरूरी होती है।

आगामी चुनाव में यह सहमति नीतीश कुमार के नाम पर बन गई है। उनके नेतृत्व में ही एनडीए चुनाव मैदान में उतरेगा। चिराग पासवान ने एक इंटरव्यू में ये बातें कहीं। दरअसल, लोजपा (रामविलास) के नेता और कार्यकर्ता पासवान को मुख्यमंत्री के रूप में प्रोजेक्ट कर रहे हैं। पटना में हाल ही में इस संबंध में पोस्टर भी लगाए गए। इससे सियासी पारा गर्मा गया। इस पर चिराग ने दो टूक कहा कि 2025 के विधानसभा चुनाव में नीतीश कुमार ही सीएम उम्मीदवार हैं। इसमें कहीं कोई वैकेंसी नहीं है। पासवान ने कहा कि जब उन्होंने एनडीए में वापसी की थी, तब ही उन्हें पता था कि नीतीश ही मुख्यमंत्री उम्मीदवार रहने वाले है। उनकी फिलहाल मुख्यमंत्री बनने की कोई इच्छा नहीं है। वह बिहार फर्स्ट बिहारी फर्स्ट पर काम कर रहे हैं। उनकी प्राथमिकता बिहार को विकसित राज्य बनाने की है। बाद के चुनावों में सीएम पद की दावेदारी पर चिराग ने कहा कि उन्होंने अपने और अपनी पार्टी के लिए कई लक्ष्य तय कर रखे हैं।

## 26 लोगों की जान की कीमत ज्यादा है या मैच से हुई कमाई की?

**-औवेसी का बीसीसीआई और केंद्र पर हमला**

**हैदराबाद (एजेंसी)।** एशिया कप में भारत और पाकिस्तान के बीच क्रिकेट मैच के बाद एआईएमआईएम चीफ और सांसद असदुद्दीन ओवैसी ने अपनी पहली प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा कि जिसने हमारी बेटियों को विधवा बनाया और बच्चों को अनाथ कर दिया, उसके साथ क्रिकेट खेलना आतंकियों पर जीत का कोई पैमाना नहीं है। सांसद ओवैसी ने कहा, खेल हो या फिर आतंकियों के खिलाफ कार्रवाई, भारत को हर जगह जीतना चाहिए। लेकिन उन लोगों से क्रिकेट मैच खेलकर जीत का पैमाना नहीं सेट किया जा सकता। मैच से पहले भी ओवैसी ने बीजेपी की तीखी आलोचना की थी। उन्होंने कहा था, पहलगाम आतंकी हमले में 26 लोगों की जान की कीमत ज्यादा है या मैच से हुई कमाई की?

ओवैसी ने कहा था, 'बीसीसीआई को एक क्रिकेट मैच से कितना पैसा मिलेगा, 2,000 करोड़, 3,000 करोड़ रुपये? हमें बताएं कि हमारे 26 नागरिकों की जान की कीमत ज्यादा है या पैसे की? भाजपा को हमें (पाकिस्तान के खिलाफ मैच खेलने के फैसले पर) इस बारे में बताना चाहिए। ओवैसी ने कहा था कि भाजपा हमेशा 'देश भक्ति' की बात करती है, लेकिन जब क्रिकेट मैचों की बात आती है, तब उसका रुख बदल जाता है। जब हम सिंधु जल संधि के तहत पानी रोक सकते हैं, तब फिर हम खेल कैसे सकते हैं। हम भाजपा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से पूछना चाहते हैं, उन 26 लोगों की जान की कीमत क्या है? भाजपा और संघ को जान गंवाने वाले लोग नहीं दिख रहे हैं, बस पैसा कमाना है।'

# शांति और सद्भाव के साथ दुर्गा पूजा के लिए कोलकाता पुलिस ने जारी किए निर्देश

**कोलकाता (एजेंसी)।** पश्चिम बंगाल में दुर्गा पूजा के त्योहार के मद्देनजर कोलकाता पुलिस ने शहर में कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए विशेष कदम उठाए हैं। पुलिस आयुक्त मनोज वर्मा ने हाल ही में इस संबंध में कई दिशा-निर्देश जारी किए हैं। पुलिस आयुक्त की यह घोषणा सोमवार को हुई मासिक बैठक में की गई, जिसमें अधिकारियों ने शहर में सुरक्षा व्यवस्था को और मजबूत करने के लिए कई उपायों पर चर्चा की।

पुलिस अधिकारी ने बताया कि पुलिस आयुक्त ने विशेष रूप से यह निर्देश दिया है कि हर थाना प्रभारी यह सुनिश्चित करें कि उनके क्षेत्र के महत्वपूर्ण स्थानों पर सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं और वे सही से काम कर रहे हैं या नहीं। इन सभी रिपोर्ट्स को तुरंत लालबाजार (शहर पुलिस मुख्यालय) भेजने का आदेश भी दिया गया है। इसके अलावा, कोलकाता पुलिस की खुफिया विभाग को भी सक्रिय रहने के निर्देश दिए गए हैं। वॉच सेक्शन से लेकर एंटी-रोडी सेक्शन और महिला बटालियन तक को हमेशा तैयार रहने को कहा गया है। पुलिस आयुक्त ने यह भी निर्देश दिया है कि शहर के महत्वपूर्ण चौराहों और भीड़-भाड़ वाले क्षेत्रों में रात और सुबह के समय गश्त को बढ़ाया जाए। खासकर इन इलाकों में सुरक्षा को और अधिक मजबूत किया जाएगा ताकि किसी भी अप्रिय घटना को रोका जा सके। पुलिस अधिकारी के अनुसार, दुर्गा पूजा के दौरान शहर में विभिन्न जिलों और राज्यों से बड़ी संख्या में लोग आते हैं। ऐसे में त्योहार के दौरान अपराधी तत्व सक्रिय हो जाते हैं। इसलिए, कोलकाता पुलिस के हर थाने के थाना प्रभारी को अतिरिक्त सतर्कता बरतने और अपने-अपने क्षेत्रों में सुरक्षा व्यवस्था की जांच करने का निर्देश दिया गया है। हर साल की तरह इस बार भी दुर्गा पूजा के दौरान अपराधों में वृद्धि देखने को मिल रही है। पुलिस के सूत्रों के मुताबिक, इस समय में छिनैती, लूट और चोरी जैसी घटनाओं में इजाफा हुआ है। इसके अलावा, कई क्षेत्रों में सुबह वॉक करने वालों पर हमले और छिनतई की घटनाएं भी बढ़ी हैं। पुलिस अधिकारी ने यह भी स्पष्ट किया कि दुर्गा पूजा के दौरान अपराधों को रोकने में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। साथ ही, प्रत्येक पुलिस स्टेशन को निर्देशित किया गया है कि वे जनता की शिकायतों को तेजी से

निपटाएं और उन पर कार्रवाई करें।

## यूजीसी छात्रों से रैगिंग, यौन उत्पीड़न से निपटने सुझावों पर करें विचार: सुप्रीम कोर्ट

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** सुप्रीम कोर्ट ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) को निर्देश दिया है कि वह मसौदा नियम तैयार करते समय उच्च शिक्षण संस्थानों में छात्रों की आत्महत्या को रोकने रैगिंग, यौन उत्पीड़न और जाति, लिंग, दिव्यांगता औन अन्य पूर्वाग्रहों के आधार पर भेदभाव से निपटने के सुझावों पर विचार करे।

न्यायमूर्ति सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की पीठ ने सोमवार को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) से दो महीने के भीतर सुझावों पर विचार करने को कहा है। पीठ ने रोहित वेमुला और पायल तड़वी की माताओं के सुझावों पर भी विचार करने को कहा है, जिन्होंने अपने-अपने परिसरों में जाति आधारित भेदभाव का सामना करने के बाद आत्महत्या कर ली थी। केंद्र की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि मसौदा नियम प्रकाशित किए गए थे और एक विशेषज्ञ समिति ने मिली 300 से ज्यादा आपत्तियों की पड़ताल भी की थी। उन्होंने कहा कि विशेषज्ञ समिति ने आपत्तियों की पड़ताल के बाद यूजीसी से मसौदा नियमों में कुछ संशोधन करने को कहा है। यूजीसी वर्तमान में विशेषज्ञ समिति की उन सिफारिशों की जांच कर रही है। संबंधित माताओं की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता इंदिरा जयसिंह ने कहा कि वे चाहती हैं कि यूजीसी उनके सुझावों पर विचार करें, ताकि किसी और की जान न जाए। शीर्ष कोर्ट ने यूजीसी को आठ सप्ताह के अंदर सुझावों पर विचार करने का निर्देश दिया है।

# केरल में छात्रों के बीच बढ़ती आत्महत्या दर ने हमारे सिस्टम पर खड़े किए सवाल

### छात्रों की आत्महत्या के मामलों में करीब 50 प्रतिशत की वृद्धि

**तिरुवंतनपुरम (एजेंसी)।** केरल में छात्रों के बीच बढ़ती आत्महत्या दर ने गंभीर सामाजिक और मानसिक स्वास्थ्य संकट की ओर ध्यान खींचा है। बीते एक दशक में, छात्रों की आत्महत्या के मामलों में करीब 50 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जो शिक्षा प्रणाली और सामाजिक संरचना पर सवाल खड़ा करती है।

जनवरी 2021 से मार्च 2025 के बीच, केरल में 39,962 लोगों ने आत्महत्या की। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के अनुसार, 2022 में पूरे भारत में 13,044 छात्रों ने अपनी जान ली। यह प्रवृत्ति पूरे देश में एक बड़े संकट की ओर इशारा करती है। इसी कड़ी में केरल के कोझिकोड जैसे जिलों में स्थिति विशेष रूप से गंभीर है, जहां 2022-23 शैक्षणिक वर्ष में 53 छात्रों ने आत्महत्या की।

पलक्कड़ के श्रीकृष्णपुरम की कक्षा 9 की छात्र, आशीर्नंदा का मामला, इन आंकड़ों के पीछे छिपी मानवीय क्षति को दिखाती है। कथित तौर पर शिक्षकों द्वारा बार-बार उपहास उड़ाने के बाद, उसने घर पर ही अपनी जान ले ली, और अपने पीछे अधूरे चित्र और एक नई स्कूल रिकॉर्ड बुक छोड़ गई। उसके माता-पिता, प्रशांत और सजीता, अपनी बेटी के लिए अब भी न्याय की गुहार लगा रहे हैं। इस संकट का समाधान करने के लिए, केरल सरकार ने 3,000 शिक्षकों को मानसिक स्वास्थ्य परामर्शदाता के रूप में प्रशिक्षित करने की घोषणा की है। इस पहल का उद्देश्य शिक्षकों को छात्रों में संकट के शुरुआती लक्षणों को पहचानने और उन्हें पेशेवर सहायता से जोड़ने में मदद करना है। हालांकि, विशेषज्ञ इन प्रयासों की कमियों की ओर भी इशारा करते हैं। अधिकांश स्कूलों में अभी भी पेशेवर परामर्शदाताओं की कमी है। मौजूदा परामर्श कार्यक्रम में कमजोर समन्वय और खराब रेफरल सिस्टम की समस्या है। बाल अधिकार कार्यकर्ताओं का मानना है कि उत्पीड़न के मामलों में जवाबदेही तय करना और न्याय सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक है। मनोवैज्ञानिकों और विशेषज्ञों के अनुसार, छात्रों में आत्महत्या के पीछे कई कारण हैं जिसमें प्रमुख अत्यधिक शैक्षणिक और सामाजिक दबाव, अस्थिर पारिवारिक वातावरण, युवाओं की बढ़ती मनोवैज्ञानिक जरूरतों को समझने और पूरा करने में विफलता।

## सिख श्रद्धालुओं को परमिशन नहीं, सीएम मान का आरोप क्रिकेट से कमाई... आस्था और भक्ति पर पाबंदी

### सुखबीर सिंह बादल ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से फैसले पर पुनर्विचार करने की अपील की

**चंडीगढ़ (एजेंसी)।** गुरु नानक देव जी के प्रकाशोत्सव (गुरुपरब) पर पाकिस्तान में मौजूद ननकाना साहिब और करतारपुर साहिब जाने वाले सिख श्रद्धालुओं को इस वर्ष केंद्र से अनुमति नहीं मिलेगी। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने 12 सितंबर को परामर्श जारी कर पंजाब सहित दिल्ली, जम्मू-कश्मीर, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड की सरकारों को निर्देश दिया कि नवंबर में श्रद्धालुओं को पाकिस्तान यात्रा की अनुमति न दे। गृह मंत्रालय ने इस कदम के पीछे सुरक्षा कारणों का हवाला दिया है।

केंद्रीय गृह मंत्रालय की सलाह के बाद पंजाब में सियासी तूफान मच गया है। मुख्यमंत्री भगवंत मान ने फैसले की कड़ी आलोचना कर मोदी सरकार पर दोहरी नीति अपनाने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा, 'अगर पाकिस्तान के साथ क्रिकेट मैच हो सकते हैं, तब फिर सिख श्रद्धालुओं को करतारपुर और ननकाना साहिब जाने से क्यों रोका जा रहा है?'

सीएम मान ने सवाल उठाया कि केंद्र के लिए क्रिकेट और कारोबार जरुरी क्यों है, जबकि आस्था और भक्ति पीछे छूट रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि पाकिस्तान के साथ होने वाले मैचों से हो रही कमाई अंततः आतंक और नशे को बढ़ावा देने में ही इस्तेमाल होगी।

वहीं, शिरोमणि अकाली दल के अध्यक्ष सुखबीर सिंह बादल ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से फैसले पर पुनर्विचार करने की अपील की। उन्होंने कहा, ÷सिख श्रद्धालु श्री ननकाना साहिब पर माथा टेकने को उत्सुक हैं। उन्हें इस मौके पर रोकना धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाना होगा। जब भारत और पाकिस्तान के बीच क्रिकेट संबंध बहाल हो चुके हैं, तब करतारपुर कॉरिडोर को भी श्रद्धालुओं के लिए खोलने पर विचार होना चाहिए।÷ पंजाब के अन्य विपक्षी दलों और सिख धार्मिक नेताओं ने भी केंद्र के कदम की निंदा कर श्रद्धालुओं की भावनाओं के साथ खिलवाड़ बताया है।

# कर्मचारी ने लंबे समय तक नौकरी की तो उसे करना होगा परमानेंट: हाईकोर्ट

**- स्वीकृत पद उपलब्ध नहीं होने पर भी स्थाई करने से नहीं कर सकते इनकार**

**मुंबई (एजेंसी)।** बॉम्बे हाईकोर्ट ने कहा है कि अगर किसी नियोक्ता ने किसी कर्मचारी से लंबे समय तक सेवा ली है और पद स्वीकृत नहीं होने की वजह से उसकी नौकरी परमानेंट नहीं की है तो यह नहीं चलेगा बल्कि उसे हर हाल में स्थायी करना होगा। हाईकोर्ट ने अपने आदेश में कहा कि निरंतर सेवा की अपेक्षित अवधि पूरी कर चुके कर्मचारियों को केवल इस आधार पर स्थायी दर्जा देने से इनकार नहीं किया जा सकता कि स्वीकृत पद उपलब्ध नहीं हैं।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक हाई कोर्ट ने जोर देकर कहा कि अगर इस तरह से किसी नियोक्ता ने इनकार किया तो यह कर्मचारियों के निरंतर शोषण के समान होगा, जो कल्याणकारी कानूनों और सामाजिक न्याय के प्रावधानों के खिलाफ है। जस्टिस मिलिंद एन जाधव ने संजय गांधी राष्ट्रीय उद्यान में कार्यरत 22 वन मजदूरों की रिट याचिका पर यह फैसला सुनाया है।

ये मजदूर 2003 से ही संजय गांधी राष्ट्रीय उद्यान में वन्य जीवों की सेवा में चौकीदार, माली, रसोइया और पिंजरों की देखभाल जैसे पदों पर काम कर रहे थे। उनकी ड्यूटी जोखिम भरी थी क्योंकि उनके कामों में बाघों, शेरों और तेंदुओं को खाना खिलाना, दवाइयां देना, पिंजरों की सफाई करना और उद्यान में गश्त और आग पर नियंत्रण जैसे जोखिम वाले कार्य शामिल थे। हालांकि ये लोग पिछले 22 साल से वहां काम कर रहे थे इसके बावजूद औद्योगिक न्यायालय ने उनकी स्थायी नौकरी के दावे को इस आधार पर खारिज कर दिया था कि वहां कोई स्वीकृत पद नहीं है।

इस कोर्ट के फैसले के खिलाफ इन लोगों ने हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया। याचिकाकर्ताओं ने अपनी याचिका में तर्क दिया कि उन्होंने वन विभाग द्वारा बनाए गए उपस्थिति रजिस्टर में दर्ज हाजिरी के मुताबिक लगातार पाँच सालों तक हरेक कैलेंडर वर्ष में 240 दिनों की सेवा पूरी की है। रिपोर्ट के मुताबिक इन लोगों ने याचिका में 16 अक्टूबर 2012 के उस सरकारी प्रस्ताव का हवाला दिया था, जिसके अनुसार दैनिक वेतनभोगी कर्मचारियों को पांच सालों में 240 दिनों की सेवा पूरी करने पर स्थायी किए जाने का प्रावधान शामिल है।

राज्य ने इस दलील का विरोध करते हुए तर्क दिया कि याचिकाकर्ताओं की नियुक्ति अस्थायी कर्मचारी के तौर पर हुई थी, उन्हें किसी स्वीकृत पद या चयन प्रक्रिया के जरिए नियुक्त नहीं किया गया था और 2012 के प्रस्ताव के तहत सृजित 125 अतिरिक्त पद पहले ही भरे जा चुके हैं, लेकिन हाईकोर्ट ने ये दलील नहीं मानी और निचली अदालत के आदेश को खारिज करते हुए सभी 22 मजदूरों की नौकरी को स्थायी करने का आदेश दिया।

## पैरोल पर बाहर आकर फरार हुए आरोपी को दबोचा

नई दिल्ली। प्रेम विवाह में लड़के की मां और भाई की हत्या करने के मामले में उम्रकैद की सजा पाया आरोपी पैरोल लेकर फरार हो गया। करीब छह साल फरार रहने के बाद अब दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा ने आरोपी को दबोचा है। आरोपी की पहचान मुजफ्फरनगर निवासी नौशाद (42) के रूप में हुई है। पुलिस ने आरोपी को लोनी इलाके से गिरफ्तार किया है। दोहरे हत्याकांड में 26 जुलाई 2013 को नौशाद व बाकी अन्यों को उम्रकैद की सजा हो गई थी। जेल में सजा काटने के दौरान वर्ष 2019 में आरोपी पैरोल पर बाहर आया और उसने कभी कोर्ट या जेल का रुख नहीं किया। पुलिस आरोपी से पूछताछ कर मामले की छानबीन कर रही है। इस बात का पता किया जा रहा है कि इतने सालों तक वह कहां छिपा रहा। अपराध शाखा के पुलिस उपायुक्त संजीव कुमार यादव ने बताया कि 27 मार्च 2006 को पड़ोसियों ने घर में घुसकर पप्पू और उसकी मां अनीशा को गोली मारकर हत्या कर दी थी। आरोपियों ने पप्पू की बहन हिना को चाकू से गोद दिया था। उसे भी गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया था। शिकायतकर्ता पप्पू के भाई इमरान ने बताया कि उनके भाई इशरत ने पड़ोस में रहने वाली शमीम नामक व्यक्ति की बेटी शबनम से प्रेम विवाह कर लिया था। शमीम व उसके परिवार ने इसका खासा विरोध किया था। इसी वजह से दोनों परिवारों में दुश्मनी हो गई थी। घटना को नौशाद, दिलशाद, इसरार, हसीन, रानू, शमीम व एक नाबालिग ने अंजाम दिया था।

## सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर संदीपा विर्क की न्यायिक हिरासत बढ़ी

नई दिल्ली। तीस हजारी कोर्ट ने सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर संदीपा विर्क की न्यायिक हिरासत अवधि को 15 सितंबर तक बढ़ा दिया है। उनकी पिछली न्यायिक हिरासत खत्म होने पर उन्हें कोर्ट में पेश किया गया। उसके बाद अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश विजय शंकर की अदालत ने 14 दिन और न्यायिक हिरासत बढ़ाने का आदेश दिया। संदीपा को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने 12 अगस्त को धनशोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत गिरफ्तार किया था। ईडी की ओर से विशेष लोक अभियोजक ने कहा कि मामले की जांच अभी जारी है और आवश्यकता पड़ने पर आगे भी हिरासत की मांग की जा सकती है। ईडी की जांच के अनुसार, संदीपा ने धोखाधड़ी और झूठे वादों के जरिए अपने नाम पर अचल संपत्ति खरीदी। वह खुद को हाइबूकेयर डॉट कॉम नामक वेबसाइट की मालिक बताती हैं, जो कथित तौर पर एफडीए-स्वीकृत ब्यूटी प्रोडक्ट्स बेचने का दावा करती हैं। हालांकि, ईडी ने पाया कि वेबसाइट पर दिखाए गए उत्पाद अस्तित्व में ही नहीं हैं।

# मुख्यमंत्री और श्रम मंत्री ने श्रमिकों के कल्याण से जुडी कई नई योजनाओं की घोषणा

**कौमी पत्रिका**

नई दिल्ली; 16 सितंबर। विश्वकर्मा दिवस और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिवस के अवसर पर दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने श्रमिकों और मजदूर बहनों के छोटे छोटे बच्चों की बेहतर परवरिश के लिए 500 पालना घर जल्द स्थापित करने का ऐलान किया। मुख्यमंत्री ने विश्वकर्मा दिवस के मौके पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान कहा कि यह पहल खासकर हमारी मेहनतकश विश्वकर्मा माताओं के लिए बड़ा संबल बनेगी। इन पालना घरों से जहाँ बच्चों को पोषण और देखभाल मिलेगी वहीं माताओं की आजीविका भी सुरक्षित होगी। दरअसल दिल्ली सरकार के श्रम विभाग और दिल्ली भवन एवं अन्य सन्निर्माण श्रमिक कल्याण बोर्ड द्वारा आज विश्वकर्मा दिवस के मौके पर विश्वकर्मा पूजा महोत्सव का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में माननीय मुख्यमंत्री ने मुख्य अतिथि के तौर पर प्रतिभाग किया तो वहीं श्रम मंत्री कपिल मिश्रा कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के तौर पर मौजूद रहे। इस कार्यक्रम का आयोजन वीआर मेट्रोपॉलिटन कंस्ट्रक्शन साइट, सिविल लाइंस में वैदिक विधिविधान के साथ शुरू हुआ। कार्यक्रम में सैकड़ों श्रमिकों के अलावा श्रम विभाग के अधिकारी और जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे। कार्यक्रम में कई श्रमिकों को माननीय मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता द्वारा सम्मानित भी किया गया। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने श्रमिकों के पास जाकर उनकी व्यक्तिगत समस्याओं को भी जाना और सरकार की उनके लिए प्रतिबद्धता को भी बताया। विश्वकर्मा दिवस की शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए माननीय मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता ने कहा कि विश्वकर्मा दिवस जिसे हम सब कल मनाने वाले हैं, आज उसकी शुरुआत हमने आपके इस कार्यक्रम से की है। मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि मैं अपने विश्वकर्मी भाइयों के बीच पहुँची हूँ। आप सभी को मेरी ओर से ढेर सारी शुभकामनाएँ और बधाई। जीवन में आपकी मेहनत, ईमानदारी और समर्पण ही आपको आगे ले जाएगा। उन्होंने श्रमिकों की मेहनत को प्रेरणादायक बताते हुए एक प्रसंग साझा किया। उन्होंने कहा कि एक निर्माण स्थल पर दो मजदूर काम कर रहे थे। एक अपने भाग्य पर रो रहा था जबकि दूसरा वही काम हर्ष और गर्व के साथ कर रहा था। एक मजदूर ने इसे अपनी नियति बताई तो दूसरे ने कहा कि वह स्वयं को सौभाग्यशाली मानता है कि इतनी भव्य इमारत बनाने में उसका योगदान है। उन्होंने आगे कहा कि यह नजरिया ही तो हमें आगे ले जाता है। मजदूर भाई और बहनों की मेहनत और समर्पण के बिना किसी भी राज्य का विकास संभव नहीं है। इंजीनियर योजना बना सकता है, मालिक धन लगा सकता है, सरकार अनुमति दे सकती है लेकिन इमारत को खड़ा करने वाला श्रमिक ही असली निर्माता है। यही कारण है कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी हमेशा गरीब कल्याण की बात करते हैं और उसे

कार्यान्वित भी करते हैं। मुख्यमंत्री ने अपने संबोधन में आगे कहा कि पिछले 27 वर्षों में चाहे कांग्रेस की सरकार रही हो या आम आदमी पार्टी की, मजदूर और गरीब के कल्याण की ठोस योजनाएँ लागू नहीं हुई। परंतु मोदी जी के नेतृत्व वाली दिल्ली सरकार ने आते ही सुनिश्चित किया कि न्यूनतम मजदूरी पूरे शहर में समान रूप से लागू हो चाहे श्रमिक सरकारी काम करें या निजी संस्थान में। अब कोई भी मजदूर कम वेतन का शिकार नहीं होगा। मुख्यमंत्री ने सभी को आश्वस्त किया कि दिल्ली शहर आपका अपना शहर है। मैं 24×7 उपलब्ध हूँ। कभी भी कोई समस्या या आवश्यकता हो तो आप सीधे मुझसे संपर्क कर सकते हैं। आपके जीवन को सुरक्षित और सुलभ बनाने के लिए दिल्ली सरकार हर संभव प्रयास करेगी। कपिल मिश्रा ने कहा कि विश्वकर्मा जयंती के इस पावन अवसर पर मैं सभी श्रमिक भाइयों और बहनों को हृदय से शुभकामनाएँ देता हूँ। आप ही हमारे समाज और देश की असली रीढ़ हैं। 'विकसित भारत, विकसित दिल्ली' का सपना आप जैसे मेहनतकश भाइयों के प्रयासों से ही संभव है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के मार्गदर्शन में दिल्ली सरकार श्रमिकों के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएँ चला रही है, जिनका सीधा लाभ आपके परिवार तक पहुँच रहा है। महिलाओं को रात्रि पाली में रोजगार करने की अनुमति दी जा चुकी है जिससे उन्हें अपनी प्रतिभा और कौशल का प्रदर्शन करने का अधिक अवसर मिलेगा। इस मौके पर रेखा गुप्ता और कपिल मिश्रा ने विश्वकर्मा दिवस और प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के जन्मदिवस की सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ दी।

# फुटपाथ पर बनी दरगाह तोड़ने पर फिर विचार के निर्देश, अदालत ने केस धार्मिक समिति को वापस किया

नई दिल्ली। हाईकोर्ट ने प्राचीन दरगाह हजरत भूरे शाह को ध्वस्त करने के मामले को दिल्ली सरकार की रिलिजियस कमेटी को वापस भेज दिया है। कोर्ट ने कमेटी को निर्देश दिया कि वह मामले की नए घटनाक्रमों को देखते हुए पुनः जांच करे। यह दरगाह मथुरा रोड पर नीला गुम्बद के पास अमीर खुसरो पार्क में स्थित है, जहां फुटपाथ पर कब्रों के कारण पैदल यात्रियों को असुविधा का मुद्दा है। याचिकाकर्ता यूसुफ बैग, जो खुद को दरगाह का केयरटेकर बताते हैं, ने अप्रैल 2023 में दिल्ली सरकार और अन्य अधिकारियों के खिलाफ याचिका दायर की थी। उन्होंने आरोप लगाया कि था कि 1 अप्रैल 2023 को बिना नोटिस के दरगाह की संरचना को तोड़ दिया गया, जिससे उन्हें 10 लाख रुपये का मुआवजा मांगा। कोर्ट ने 19 अप्रैल 2023 को यथा स्थिति बनाए रखने का आदेश दिया और विभिन्न विभागों- पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट (पीडब्ल्यूडी), म्यूनिसिपल कॉर्पोरेशन ऑफ दिल्ली (एमसीडी), डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट साउथ-ईस्ट, लैंड एंड डेवलपमेंट ऑफिस (एलएंडडीओ), दिल्ली वक्फ बोर्ड और याचिकाकर्ता के प्रतिनिधि से साइट का निरीक्षण कर रिपोर्ट मांगी। दिल्ली वक्फ बोर्ड की शुरुआती रिपोर्ट में इसे 1976 की गजट अधिसूचना में सूचीबद्ध वक्फ संपत्ति बताया गया। इसमें 1000 वर्ग गज क्षेत्र का उल्लेख है, लेकिन बाद में दाखिल लिखित सबमिशन में बोर्ड ने अपना रुख बदलते हुए कहा कि कोई अधिकृत संरचना का रिकॉर्ड नहीं है और कब्रों की स्थानांतरण की सिफारिश का विरोध नहीं करता। बोर्ड ने यह भी माना कि फुटपाथ पर कब्रें पैदल यात्रियों के लिए असुविधाजनक हैं और उन्हें पास की उपयुक्त जगह पर स्थानांतरित किया जा सकता है। कोर्ट ने रिलिजियस कमेटी की 17 जुलाई 2023 की बैठक के मिनट्स का हवाला दिया, जिसमें कमेटी ने कब्रों को फुटपाथ से हटाने और दूसरी जगह स्थानांतरित करने की सिफारिश की थी। कमेटी ने नोट किया कि एक व्यक्ति (सैयद भूरे शाह) के नाम पर कई मजार होने से सवाल उठते हैं और यह पैदल यात्रियों के लिए बाधा हैं। निरीक्षण रिपोर्ट में पीडब्ल्यूडी, एसडीएम और एलएंडडीओ ने स्पष्ट किया कि दरगाह मथुरा रोड के राइट ऑफ वे में आती है और यह सार्वजनिक भूमि पर अतिक्रमण है। रिपोर्ट के अनुसार, फुटपाथ पर 7 कब्रें या मजार हैं, जो लगभग 15 मीटर क्षेत्र को कवर करती हैं और पैदल यात्रियों के लिए बाधा हैं। एलएंडडीओ ने कहा कि यह भूमि पीडब्ल्यूडी के रखरखाव में है और कोई आवंटन दरगाह के नाम पर नहीं किया गया।

# फिल्मी सितारों से सजेगी लालकिला मैदान की भव्य लव कुश रामलीला

नई दिल्ली। लालकिला मैदान में लव कुश रामलीला कमेटी इस वर्ष मंचन को बिल्कुल नए और फिल्मी अंदाज में प्रस्तुत करने जा रही है। आगामी 22 सितंबर से तीन अक्तूबर तक होने वाले मंचन की शुरुआत महर्षि वाल्मीकि के अपने आश्रम में लव और कुश को रामायण सुनाने से होगी। जैसे-जैसे महर्षि वाल्मीकि कथा सुनाएंगे, वैसे-वैसे मंच पर उसके दृश्य जीवंत होंगे। बीच-बीच में वाल्मीकि आश्रम के दृश्य भी मंचन का हिस्सा बनेंगे, जिससे दर्शकों को कहानी का प्रवाह और भी रोचक और प्रभावशाली तरीके से देखने को मिलेगा। लीला कमेटी के अध्यक्ष अर्जुन कुमार ने रविवार को संवाददाता सम्मेलन में कहा, इस बार की रामलीला ऐतिहासिक और अद्भुत होगी। भारतीय संस्कृति, परंपराओं और धार्मिक धरोहरों को मंच पर जीवंत करने के लिए इस वर्ष 15 नामचीन बॉलीवुड सितारे और टीवी व रंगमंच से जुड़े 140 कलाकार विभिन्न भूमिकाएं निभाएंगे। इस वर्ष मंचन में कई चर्चित कलाकार मुख्य किरदार निभा रहे हैं। राम की भूमिका टीवी और फिल्म अभिनेता किंशुक वैध करेंगे, जिन्होंने कर्ण संगिनी, विष्णु पुराण और शाका लाका बूम-बूम जैसे धारावाहिकों में अभिनय किया है। सीता की भूमिका रिनी आर्या निभाएंगी, जो 'सुवरीन मुग्गल टॉपर ऑफ द ईयर', 'कुल्फी कुमार बाजेवाला' और 'विघ्नहर्ता गणेश' जैसे सीरियल में अहम भूमिकाएं निभा चुकी हैं। वहीं, हनुमान का अभिनय अभिनेता मल्हार पांड्या करेंगे, जिन्होंने राधाकृष्ण में भगवान कृष्ण और वीर हनुमान में सूर्यदेव जैसे पौराणिक किरदार निभाए हैं। कमेटी के महासचिव सुभाष गोयल ने बताया कि मंचन को हाईटेक बनाने के लिए एआई, डिजिटल तकनीक, 3डी मैपिंग, विजुअल इफेक्ट्स और 8-ट्रैक साउंड सिस्टम का इस्तेमाल किया जाएगा। इस बार रामलीला का सीधा प्रसारण देश-विदेश में 150 से अधिक टीवी और डिजिटल चैनलों पर होगा। पंडाल और मंच को भी बेहद भव्य तरीके से सजाया जा रहा है। कारीगर मथुरा, वृंदावन, उज्जैन और कोलकाता से बुलाए गए हैं। दर्शकों के लिए फूड कोर्ट में पुरानी दिल्ली की चाट-पकौड़ी से लेकर मथुरा, आगरा, बनारस और दक्षिण भारत के जायके तक उपलब्ध रहेंगे।

## प्रधानमंत्री मोदी के जन्मदिन पर गीत 'नमो प्रगति दिल्ली-बाल स्वर से राष्ट्र स्वर तक' किया गया लॉन्च

**प्रथम पृष्ठ का शेष**

ये कार्ड मुख्यमंत्री को सौंपे गए, जिन्होंने छात्रों को आश्वस्त किया कि वह इन्हें स्वयं, साथ ही इस गीत के साथ, प्रधानमंत्री मोदी तक पहुंचाएंगी। इस दौरान मुख्यमंत्री ने बच्चों से आत्मीय संवाद किया, उन्हें गले लगाकर उनका उत्साह बढ़ाया और उनके प्रयासों की सराहना की। उन्होंने बच्चों के साथ हाई-टी में सम्मिलित होकर समय बिताया तथा सामूहिक सेल्फी भी ली। इस अवसर पर दिल्ली सरकार के केबिनेट मंत्री आशीष सूद और मनजिंदर सिंह सिरसा भी मौजूद थे। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने प्रधानमंत्री को जन्मदिन की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आने वाले भारत के प्रधानमंत्री मोदी को दिल की गहराई से मेरी और समस्त दिल्लीवासियों की ओर से जन्मदिन की ढेरों बधाई और शुभकामनाएं। ईश्वर की कृपा आप पर और आपके माध्यम से पूरे भारत वर्ष पर बनी रहे। उन्होंने बच्चों द्वारा प्रस्तुत गीत की सराहना करते हुए कहा कि यह केवल गीत नहीं बल्कि राष्ट्र की सामूहिक भावना का स्वर है, जिसे इन छोटे बच्चों ने साकार किया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि बच्चों की शुभकामनाएँ और उनका आशीर्वाद प्रधानमंत्री के लिए सबसे बड़ी उपलब्धि है। इस अवसर पर दिल्ली के शिक्षा मंत्री आशीष सूद ने कहा कि पिछले 11 वर्षों में प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत ने नई ऊंचाइयों को छुआ है। उनकी दूरदर्शी सोच और अदम्य संकल्प ने विविधताओं से भरे भारत को विश्व पटल पर एक सशक्त और आत्मनिर्भर राष्ट्र के रूप में स्थापित किया है। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री के जन्मदिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री के मार्गदर्शन में दिल्ली स्कूल शिक्षा विभाग ने एक विशेष गीत लॉन्च किया, जिसमें मोदी जी को विभिन्न भाषाओं में जन्मदिन की शुभकामनाएँ दी गई।'एक भारत- श्रेष्ठ भारत-विकसित भारत' के इस संगीतमय उपहार के माध्यम से प्रधानमंत्री जी को सम्मानित किया गया। दिल्ली के सरकारी स्कूलों के बच्चों ने अपनी मासूम आवाज़ों के ज़रिए 'विविधता में एकता' का संदेश प्रस्तुत किया और प्रधानमंत्री जी के राष्ट्रसेवा के प्रति समर्पित जीवन को नमन किया।

## मुकुंदपुर में पकड़ी गई पान मसाला की नकली फैक्टरी

नई दिल्ली। बाहरी-उत्तरी जिला की जिला जांच प्रकोष्ठ (डीआइयू) की टीम ने मुकुंदपुर में छापा मार कर कई कंपनियों के नकली पान मसाला बनाने वाली फैक्टरी का खुलासा किया है। पुलिस ने फैक्टरी से काफी मात्रा में पान मसाला, खाली पाउच, खाली बाक्स समेत कई मशीनें बरामद की। टीम ने फैक्टरी मालिक के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच कर रही है। जानकारी के मुताबिक एक कंपनी के प्रतिनिधि शिद्धार्थ गौड़ ने 25 जुलाई को बाहरी-उत्तरी जिला पुलिस उपायुक्त को एक शिकायत दी। उसमें उन्होंने बताया कि मुकंदपुर स्थित एक फैक्टरी में भारी मात्रा में कई कंपनियों के नकली पान मसाला बनाए जा रहे हैं। अधिकारियों ने इसकी जांच की जिम्मेदारी जिला जांच प्रकोष्ठ को सौंपी। टीम ने नौ सितंबर को मुकुंदपुर स्थित फैक्टरी पर छापेमारी की। इस दौरान फैक्टरी का मालिक विशाल मौके पर मिला। तलाशी अभियान के दौरान वहां काफी मात्रा में पान मसाला बनाने में इस्तेमाल सामान मिले। इससे पता चला कि फैक्टरी में शिखर, विमल और कमला पसंद के नाम से नकली पान मसाला बनाए जा रहे हैं। टीम ने फैक्टरी से कमला पसंद के करीब 257 किलो खाली पैकिंग, कमला पसंद के 44 किलो खाली पाउच शिखर जर्दा पाउच करीब 177.5 किलो बरामद किए। इसके अलावा जर्दा पैक्ड पाउच 33.5 किलो मिले। शिखर जर्दा रोल 168 किलो, शिखर के खाली बाक्स 114.2 किलो बरामद किए। इसके अलावा फैक्टरी से विमल पान मसाला के 29 किलो पाउच, 23 किलो पैक्ट पाउच और 31.7 किलो रोल बरामद किए। इसके अलावा फैक्टरी से मसाला बनाने वाली तीन मशीनें भी जब्त की। बाहरी उत्तरी जिला पुलिस उपायुक्त हरेश्वर वी स्वामी ने बताया कि फैक्टरी मालिक विशाल से पूछताछ की जा रही है।

## स्कूल में हुई गाली गलौज, 12वीं की छात्रा पर ब्लेड से हमला

नई दिल्ली। अमन विहार इलाके में स्कूल में हुई गाली गलौज का बदला लेने के लिए एक छात्रा ने अपनी बहन और दो अन्य छात्राओं के साथ मिलकर बारहवीं की छात्रा पर ब्लेड (पेपर कटर) से चेहरे व कमर पर हमला कर दिया। इसमें पीड़िता के चेहरे व कमर पर करीब 50 से अधिक टांके लगे हैं। शुरुआती जांच में पता चला कि हमला करने वाली मुख्य आरोपी पीड़िता की स्कूल की छात्रा है। रोहिणी जिला पुलिस उपायुक्त राजीव रंजन ने बताया कि नौ सितंबर को अमन विहार थाना पुलिस को रोहिणी सेक्टर-20 निवासी एक किशोरी पर हमला होने की जानकारी मिली। पीड़िता पर छात्राओं ने ब्लेड से हमला किया था। उसे तुरंत अस्पताल में भर्ती कराया गया। वह बयान देने की हालत में नहीं थी। छानबीन में पता चला कि 14 और दो पंद्रह साल की छात्राओं ने पीड़िता को थप्पड़ मारे, जबकि 16 साल की छात्रा ने उसके चेहरे और कमर पर ब्लेड से हमला कर दिया। पूछताछ में पता चला कि मुख्य आरोपी छात्रा पीड़िता की स्कूल की 12वीं कक्षा की छात्रा है। चार नवंबर को पीड़िता और मुख्य आरोपी के बीच स्कूल में झगड़ा हुआ था। उसका बदला लेने के लिए उसने अपनी बहन और अन्य छात्राओं के साथ मिलकर उसपर हमला कर दिया। पीड़िता अपने माता-पिता, एक छोटा भाई और बहन के साथ रोहिणी सेक्टर 20 में रहती है।


**NAME CHANGE**
I, NEHA MAHAJAN, R/O A-405, PERSIDENT APARTMENT, PLOT NO-18,SECTOR-10, DWARKA, DELHI-110075, HAVE CHANGED MY MINOR SON NAME FROM "VIVAN GAMBHIR TO VIVAN MAHAJAN" FOR ALL FUTURE PURPOSES

**NAME CHANGE**
I, NEHA GAMBHIR D/O RAJEEV MAHAJAN, R/O A-405, PERSIDENT APARTMENT, PLOT NO-18, SECTOR-10, DWARKA, DELHI-110075, HAVE CHANGED MY NAME TO NEHA MAHAJAN FOR ALL FUTURE PURPOSES

**NAME CHANGE**
It is for general information that I, DURGA PRASAD S/O ARJUN SINGH R/O PLOT NO-28 S/F, SHIV VIHAR, SEWAK PARK, UTTAM NAGAR, PO: D.K MOHAN GARDEN, DIST: WEST DELHI, DELHI-110059, declare that name of mine has been wrongly written as DURGA PRASHAD JANTIWAL in my 10TH class educational documents. The actual name of mine is DURGA PRASAD, which may be amended accordingly.

**NAME CHANGE**
I, TRILOK SINGH S/O ROOP SINGH R/O PLOT NO-73, BLOCK-B, PHASE-1, QUTUB VIHAR, SOUTH WEST DELHI, DELHI-110071, have changed the name of my minor son KARTIKEYA BISHT aged 13 years and he shall hereafter be known as KARTIKEYA SINGH.

**NAME CHANGE**
I,DEEPIKA wife of Shri Navdeep daughter of Shri Vijay Singh resident of A-67, Pachhiya Mohalla, Kangan Heri Road, Near Shiv Mandir, Chhawla, New Delhi-110043, have changed my name from "DEEPIKA LAMBA" to "DEEPIKA" in future for all purposes.

**NAME CHANGE**
I hitherto known as Dharmendra S/O: Ram Fal, R/O POST-BASREHAR, Ludhpura Mohabbatpur, Etawah, Uttar Pradesh - 206253, have changed my name and shall hereafter be known as Raju Shakya.

**PUBLIC NOTICE**
My client Shri Suresh Chand and his wife Smt. Rukmani Devi, R/o. House No. F2/697, Sangam Vihar, New Delhi has disowned and debarred their son and daughter in-law namely Rinku and Sita Devi from their all movable and immovable properties and severed their relationship with them
**ARUN SHARMA Advocate**
Ch. No. 128 & 605, Lawyer's Chamber Block, Saket Court New Delhi 110017

**PUBLIC NOTICE**
My Client Mr. Md. Sakur Ahmad S/o Ali Jan Jihi R/o Barelliy Dalpura, Uttar Pradesh-243503, have disowned and debarred his Son Md. Ahsan and her wife Muskan from their all movable, immovable properties and I have no relation with them in future.
**Parmod Kumar Advocate**
Ch.No.543, Saket Court NEW DELHI-110017

**NAME CHANGE**
I, SURENDER SINGH BISHT S/o SANT RAM, R/o RZ- L38B, Plot No. 38, L-Block, Gali No. 3, West Sagarpur, South West Delhi, Delhi-110046, have changed the name of my minor daughter SNEHA aged 16 years and she shall hereafter be known as SNEHA BISHT.

**NAME CHANGE**
It is for general information that I, GAURAV KASHYAP S/o ANAND PRAKASH, R/o House No. B-1699, Shastri Nagar, Ashok Vihar, North West Delhi, Delhi-110052, declare that name of my wife has been wrongly written as BHARTI KASHYAP in my minor son namely AARAV aged 14 years in his School Records and Birth Certificate Registration No. MCDOLIR-0111-004893627 The actual name of my wife is ANURADHA KASHYAP.

**NAME CHANGE**
It is for general information that I, SNEHA D/o RAJKUMAR R/o WZ-478 Nangal Raya, Nangal Raya S.O, South West Delhi, Delhi-110046, declare that name of my father has been wrongly written as RAJ KUMAR in my 10th and 12th class Educational Documents. The actual name of my father is RAJKUMAR, which may be amended accordingly.

**NAME CHANGE**
I, Naresh Kumar Pal S/O Bhopal Singh R/O D-14 Block-V Bhagwati Vihar Uttam Nagar West Delhi 110059 have changed my name and shall hereafter be known as Naresh Kumar.

**NAME CHANGE**
I, MUSKAN wife of VIJESH residing at H NO-VILLAGE BARAHI, BAHADURGARH, JHAJJAR, HARYANA-124507 have changed my name to ARTI for all future purposes.

**NAME CHANGE**
I, JC-736979P Rank-NB SUB Name-BIPUL PRAMANICK Father of BIDISA PRAMANICK Permanent address RAGHUNATHPUR STREET, VTC-SANTIPUR, PO-SANTIPUR, DIST-NADIA, WEST BENGAL-741404, have changed my minor daughter's name from BIDISA PRAMANICK to BIDISHA PRAMANICK for all future purposes vide Affidavit dated 16/09/2025 before Executive Magistrate, Delhi.

**NAME CHANGE**
I WAJIA D/O PARVEZ AKHTAR R/O 2696 GALI JAMAN WALI MOHALLA NIYARIYAN AJMERI GATE DELHI GPO NORTH DELHI-110006 HAVE CHANGED MY NAME TO WAJIHA PARVEZ

**NAME CHANGE**
I RUBY W/O MAHAVIR BEDI R/O H NO-2/13 NEAR D A V SCHOOL JANGPURA EXTENSION SOUTH DELHI 110014 HAVE CHANGED MY NAME TO RUBY BEDI

**NAME CHANGE**
I MAHABEER S/O CHAMAN LAL R/O H NO-2/13 NEAR D A V SCHOOL JANGPURA EXTENSION SOUTH DELHI 110014 HAVE CHANGED MY NAME TO MAHAVIR BEDI

**NAME CHANGE**
I PANKAJ S/O MAHAVIR BEDI R/O HOUSE NO 52 3RD FLOOR VINOBA PURI LAJPAT NAGAR 2 SOUTH DELHI 110024 HAVE CHANGED MY NAME TO PANKAJ BEDI

**NAME CHANGE**
I SAIYAD ABDUL REHMAN S/O MOHD MOBIN R/O H NO 153 GALI NO 12 SHIV MANDIR GALI MAUJ PUR NEAR GARHI MENDU NORTH EAST DELHI 110053 HAVE CHANGED MY NAME TO SYED ABDUL REHMAN

**NAME CHANGE**
I, LAVISH, S/O GIRISH KUMAR BANSAL, R/O 2653, BEHIND AMITY INTERNATIONAL SCHOOL, GURGAON, HARYANA-122001,HAVE CHANGED MY NAME LAVISH BANSAL FOR ALL FUTURE PURPOSES

**सार्वजनिक सूचना**
सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे मुवक्किल श्री बिशम्बर सिंह पुत्र स्वर्गीय मनफूल सिंह एवं श्रीमती लक्ष्मी पत्नी बिशम्बर सिंह, दोनों निवासी ॥. हृश 450/57 न्यू वाल्मीकि कॉलोनी, गांव बिजवासन, दिल्ली-110061, ने अपने पुत्रों अर्थात् । नवीन उम्र लगभग 34 वर्ष एवं उसकी पत्नी नैना जो मेरे मुवक्किल के साथ प्रथम तल पर निवास करते हैं, 2. श्री कृष्ण उम्र लगभग 29 वर्ष एवं उसकी पत्नी निशा जो मेरे मुवक्किल के साथ द्वितीय तल पर निवास करते हैं. से सभी प्रकार के संबंध समाप्त कर लिए हैं तथा उन्हें अपनी सभी चल एवं अचल संपत्तियों से बेदखल व निष्कासित कर दिया है क्योंकि उपरोक्त दोनों पुत्र एवं उनकी पत्नियां मेरे मुवक्किल के प्रति अवज्ञाकारी हो गए हैं एवं उनके नियंत्रण में नहीं हैं। जो कोई भी व्यक्ति उपरोक्त व्यक्तियों से किसी भी प्रकार का व्यवहार करता है. वह स्वयं अपने जोखिम व परिणाम पर करेगा एवं मेरे मुवक्किल उसके लिए उत्तरदायी नहीं होंगे।
**MAHIPAL YADAV ADVOCATE**
Chamber No. 325, Dwarka Courts Complex, New Delhi 110075

**NAME CHANGE**
I, Mohd Afroz S/O Abdul Qaiyyom, R/O E-13 C-425, T-HUTS, NEW SEELAMPUR, Seelampur, North East Delhi, Delhi-110053, have changed the name of my minor son Al Tamash aged 7 years and she shall hereafter be known as MOHAMMAD MOJAMMIL.

**NAME CHANGE**
I, ARATI DEY SARKAR mother of No.6500437F Rank-SEP/ASH Name- ASHUTOSH DEY SARKAR residing at VILL-SINGIMARI, PO-RAMPUR, PS-BOXIRHAT, DIST-COOCHBEHAR, WEST BENGAL-736207, in my son's service records my date of birth wrongly mentioned as 17/07/1969 instead of my correct date of birth as 18/03/1970 vide affidavit dated 16/09/2025 before Notary Public, Delhi.

**NAME CHANGE**
I,Anoushka D/o Mansingh Thakur R/o 406-A, DDA Flats, Gazipur Dairy Farm, Vasundhra Enclave, Delhi-110096 have changed my name to Anoushka Thakur Permanently.

**NAME CHANGE**
I, FATMA KHANAM W/o Mubin Khan R/o 264A, Opposite Teachers Training College, Okhla, Jamia Nagar, Delhi-110025, have changed my name to FATMA KHAN permanently

**NAME CHANGE**
I, NEERAJ SHARMA S/o JAI BHAGWAN R/o 1668/34, Near Bagh Wali Gali, Vijay Nagar, Rohtak-124001, have changed my name to NEERAJ KUMAR permanently.

**NAME CHANGE**
I, Jaiveer Baisoya S/o Late Shri Deewan R/o House no.242, Aliganj Kotla Mubarakpur, New Delhi - 110003 have changed my name to JAIVEER for all future purposes. For all future purposes.

**NAME CHANGE**
I, Neetu wife of Sh. Balvir Kumar, R/o #402, Tower 23, CWG Village, Delhi declare that I am mother of Anahita Kumar and I have changed my name to Neetu Singal for all purposes.

**NAME CHANGE**
I LAXMI NARAYAN S/O TIPU LAL R/O J-3/83 GALI NO-6 SANGAM VIHAR NEW DELHI-110062 have chaged my name to LAXMI-NARAYAN RAJORA

**NAME CHANGE**
I, PREETI YADAV d/o BALCHAND YADAV r/o 2/149, GROUND FLOOR, SUBHASH NAGAR, NEW DELHI-110027 do hereby declare that name of my mother is mistakenly mentioned as SHANTI YADAV in my 10th and 12th passing certificates but her correct name is SAUBHAGYAWATI YADAV.

**NAME CHANGE**
It is for general information that I, SHARVAN KUMAR S/o INDER DEV, R/o H.No.1197, Janta Flats, G.T.B. Enclave, North East, Delhi-110093, declare that name of mine and my wife has been wrongly written as SHARAVAN KUMAR GARG & VASUNDHARA in my minor daughter namely RIYA GARG, aged 15 years in her school records. The actual name of mine and my wife are SHARVAN KUMAR & VASUNDHRA, which may be amended accordingly.

**NAME CHANGE**
I, CHORGE SHAKUNTALA mother of NO-14848870M Rank-NK, Name-PRADIP RAGHUNATH CHORGE R/O VPO-KHINDWADI, TEHSIL-SATARA, DIST-SATARA, MAHARASHTRA-415004, have changed my name from CHORGE SHAKUNTALA to SHAKUNTALA RAGHUNATH CHORAGE for all future purposes and in my son's service records my date of birth wrongly mentioned as 01/07/1956 instead of my correct date of birth as 21/04/1954 vide affidavit dated 16/09/2025 before Notary Public, Delhi.

**NAME CHANGE**
I, MOHAMED NADEEM S/O ABDULLAH MOHAMMED JANJEE resident of BUILDING NO-5, GROUND FLOOR, HAZRAT NIZAMUDDIN, NEW DELHI-110013 have changed my name to NADEEM ABDULLAH SIDYOT for all future purpose.

**NAME CHANGE**
I, MOHD AHMED son of Late MUKHTAR HUSSAIN residing at H NO-4885, GALI NO-1, BLOCK-9, EAST OLD SEELAMPUR, GANDHI NAGAR, DELHI-110031 declare that my father name as MUKHTAR HASSAN S/O REHMAT ALI mentioned in our all registered property documents but my father's name is MUKHTAR HUSSAIN mentioned in his others documents and myself documents. That MUKHTAR HASSAN and MUKHTAR HUSSAIN both name are the same and one person.

**Public Notice**
It is for general information that I Bali Jaan S/O Ali Jaan R/O House No RZ 30,Block RZ Gali No 2,Sitapuri Palam Village, PO: Palam Village, Dist: South West Delhi, Delhi -110045, declare that name of mine has been wrongly written as BALIJAAN in my minor Son namely Mohsin Ansari aged 17 years in his 10th educational documents. The actual name of mine is Bali Jaan

**NAME CHANGE**
I hitherto known as Dataram S/O Kishan Lal, R/O Tikuriya, Abhaypura, Kasganj, Uttar Pradesh - 207241, have changed my name and shall hereafter be known as DAYA RAM SINGH.

**NAME CHANGE**
I, Ramji Dudhnath Singh S/o Dudhnath Teman Singh R/o D-8, Tower-1, Type-3 Flats, Kidwai Nagar East, South West Delhi-110023 have changed my name to Ramji Singh for all future purposes.

**NAME CHANGE**
I, Abdul Quadir S/o Abdul Majeed R/o H.No-173, Ward No-06, Qureshi Mohalla, Nuh, Mewat Haryana-122107 have changed my name to Abdul Kadir.

**NAME CHANGE**
I, Lubana Siddiqui D/O Siraj Uddin W/O Mohammad Rashidullah Siddiqui R/O A-143, 1st floor, Sector 26, Noida, Gautam Buddha Nagar, Uttar Pradesh 201301 Have changed my name to Lubna Siddiqui for all future purposes.

**NAME CHANGE**
I SAJID MUBARAK S/O RAHIMUDDIN R/O 174 GEETA APARTMENT GEETA COLONY DELHI 110031 HAVE CHANGED MY NAME TO SAJID PERVEZ PEMANENTLY

**NAME CHANGE**
I hitherto known as Supriya Barik W/o Manoj Barik R/o Village Salarpur Khadar, Salarpur, Gautam Buddha Nagar, Uttar Pradesh - 201304 have changed my name and shall hereafter be known as SABIKA BARIK .

**NAME CHANGE**
I Subhash Chand S/o Rampal Singh R/o 287 Shibbanpura, Ghaziabad, Uttar Pradesh-201003 have changed the name of my minor daughter Angel Singh aged 15 years and she shall hereafter be known as Angel Sharma.

**NAME CHANGE**
I, HARENDRA SINGH S/O Radheshyam R/O ujrai jaat, malu pur, Khandauli, PO: Khandauli, DIST: Agra, Uttar Pradesh - 283126, have changed the name of my minor daughter RITMA aged 14 years and she shall hereafter be known as RITU.

**NAME CHANGE**
It is for general information that I, KRISHNA CHAITANYA PESLAB S/o SUBBA RAO P, Permanent R/o 4/6/9/b, RK Nagar, Sai Baba Nagar, Nazeer Thota, Nellore, PO: Nawabpeta, Dist: Nellore, Andhra Pradesh - 524002, and Presently R/o Qtrs. No. 126-B, Type – IV, Block – B, Kanchanjunga Apartment, Sector- 53, Noida, Uttar Pradesh - 201301 declare that name of mine and my wife has been wrongly written as PESALA KRISHNA CHAITANYA and PESALA VEENA SRI in my minor son namely LOHITAKSHA PESALA aged 14 years in his school record. The actual name of mine and my wife are KRISHNA CHAITANYA PESLAB and VEENA SRI PESALA respectively, which may be amended accordingly.

**NAME CHANGE**
I hitherto Known as KALYANI D/o TRIBHUVAN residing at Jhuggi No. - 194 / W44, Block D-4 , Sultanpuri ,VTC - Sultanpuri , C-Block, Sub District - Saraswati Vihar, North West Delhi, Delhi - 110086 have changed my name and shall hereafter be known as CHANCHAL RAWAT.

**NAME CHANGE**
I, Previously Known as VIMLESH CHAND D/o RAJA RAM W/o HEM CHAND R/o House No. 654/4, Gali No. 3, Ghati Road, Punjabi Basti, Anand Parbat, PO Karol Bagh, Central Delhi, Delhi - 110005 have changed my name to VIMLESH for all purposes.

**NAME CHANGE**
I, Aishwarya Enpathil Prakash D/O E P Prakash R/o RZ-46/216, J-Block, Near Desu Colony, West Sagarpur, Delhi-110046 have changed my name to Aishwarya E P.

**NAME CHANGE**
I, SUNAINA W/O ANAND KUMAR R/O 495, GROUND FLOOR, COMMUNITY CENTRE, SECTOR-10, GURGAON, HARYANA-122001, I HAVE CHANGED MY NAME TO SUNAINA SHARMA FOR ALL FUTURE PURPOSES

**NAME CHANGE**
I YASMEEN W/O NAHIM KHAN R/O HOUSE NO 4688 GALI NO 7 NEAR MASJID PARVATIYA COLONY NIT FARIDABAD SECTOR 22 HARYANA 121005 HAVE CHANGED MY NAME TO YASMEEN SAIFI

**NAME CHANGE**
I hitherto Known as B.K. GEETA D/o NIRANJAN SINGH residing at Plot No. 6, Ground Floor, KH No. 99/3, Swarn Park, Mundka, PO: Nangloi, Dist: West Delhi, Delhi - 110041 have changed my name and shall hereafter be known as KM GEETA RANI.

**NAME CHANGE**
It is for general information that I NARENDRA DEVA SHARMA S/o HAR PRASAD SHARMA R/o 50, Block - B, Pkt – 1, Rohini, Sector – 18, Delhi, Sector – 15, Rohini, NCT of Delhi - 110089 declare that name of mine and my father has been wrongly written as NARENDRA DEV SHARMA and H.P. SHARMA in my Aadhar Card No. 9426 4063 6572. The actual name of mine and my father are NARENDRA DEVA SHARMA and HAR PRASAD SHARMA respectively, which may be amended accordingly.

**NAME CHANGE**
It is for general information that I, KRISHNA CHAITANYA PESLAB S/o SUBBA RAO P, Permanent R/o 4/6/9/b, RK Nagar, Sai Baba Nagar, Nazeer Thota, Nellore, PO: Nawabpeta, Dist: Nellore, Andhra Pradesh - 524002, and Presently R/o Qtrs. No. 126-B, Type - IV, Block - B, Kanchanjunga Apartment, Sector- 53, Noida, Uttar Pradesh - 201301 declare that name of mine has been wrongly written as KRISHNA CHAITANYA PESALA in my minor daughter namely SAHASRA PESALA aged 11 years in her school record. The actual name of mine is KRISHNA CHAITANYA PESLAB , which may be amended accordingly.



**कौमी पत्रिका**
संपादक-गुरचरन सिंह बब्बर
स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक, गुरचरन सिंह बब्बर ने कौमी पत्रिका प्रिंटिंग प्रेस, सेक्टर ए-4/ए-144 इंडस्ट्रीयल एरिया ट्रोनिका सिटी लोनी (गाजियाबाद), उत्तर प्रदेश से छापकर प्रकाशित किया।

**Corporate Office:**
5, Bahadurshah Zafar Marg
ITO, New Delhi-110002
फोन : 011-41509689, 23315814
मोबाइल नंबर : 9312262300

E - mail address : qpatrika@gmail.com
Website: www.qaumipatrika.in

R.N.I. No. UP-HIN/2007/21472

Legal Advisors:
Advocate Mohd. Sajid
Advocate Dr. A.P.Singh
Advocate Manish Sharma
Advocate Pooja Bhaskar Sharma

## सेवा पखवाड़ा के तहत अनेक आयोजन करेगी जिला पुलिस : शशांक सावन

एजेंसी

**हिसार।** पुलिस अधीक्षक शशांक कुमार सावन ने कहा है कि प्रदेश सरकार के निर्देशानुसार 17 सितंबर से 2 अक्तूबर 2025 तक 'सेवा पखवाड़ा' का आयोजन किया जाएगा। इस अभियान को सफल बनाने के लिए हिसार पुलिस पूरे पखवाड़े विशेष कार्यक्रम संचालित करेगी। पुलिस अधीक्षक शशांक सावन ने बताया कि सेवा पखवाड़े के दौरान स्वच्छता एवं पौधारोपण अभियान चलाया जाएगा। इसके तहत पुलिस लाइन, थानों, चौकियों और पुलिस आवास कॉलोनियों में स्वच्छता अभियान चलाया जाएगा तथा पौधरोपण किया जाएगा। सुरक्षा व्यवस्था के तहत विभिन्न विभागों द्वारा आयोजित मोटरसाइकिल/साइकिल रैली, पदयात्रा या प्रभात फेरी इत्यादि में आवश्यकता अनुसार सुरक्षा व्यवस्था उपलब्ध करवाई जाएगी। महिला एवं सड़क सुरक्षा अभियान के तहत महिला सुरक्षा, सड़क सुरक्षा तथा स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए विशेष अभियान चलाए जाएंगे। पुलिस-जनता संवाद के तहत पुलिस और आमजन के बीच संवाद कार्यक्रम आयोजित कर स्वच्छता और सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति जागरूकता बढ़ाई जाएगी। यातायात जागरूकता के तहत ट्रैफिक नियमों के प्रति लोगों को जागरूक करने के साथ छोटे, मध्यम एवं बड़े वाहनों पर रिफ्लेक्टर लगवाने के लिए प्रेरित किया जाएगा, जिससे रात्रि में होने वाली दुर्घटनाओं को रोका जा सके। पुलिस अधीक्षक ने आमजन से अपील की है कि इस 'सेवा पखवाड़ा' में बढ़-चढ़कर हिस्सा लें और स्वच्छ, सुरक्षित एवं जागरूक समाज के निर्माण में सहयोग दें।

## पत्रकारिता के विद्यार्थियों ने दूरदर्शन दिवस पर फोटोग्राफी कौशल सीखा

**सोनीपत।** दूरदर्शन दिवस पर हरियाणा खेल विश्वविद्यालय राई सोनीपत के प्रांगण में खेल पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के विद्यार्थियों ने फोटोग्राफी और वीडियोग्राफी की तकनीक सीखी। इस अवसर पर मोबाइल फोटोग्राफी प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न संकायों के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान अर्पिता श्रीवास्तव (खेल पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग), द्वितीय स्थान विवेक (बीपीईएस तृतीय सेमेस्टर), तृतीय स्थान मनीष (बीपीईएस तृतीय सेमेस्टर) और सांत्वना पुरस्कार आयुष यादव ने प्राप्त किया। कार्यक्रम में कुलपति अशोक कुमार ने कहा कि फोटोग्राफी और वीडियोग्राफी केवल कला नहीं, बल्कि संवाद और अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। उन्होंने बताया कि खेल पत्रकारिता एवं जनसंचार के विद्यार्थियों के लिए इन तकनीकों में दक्ष होना समय की आवश्यकता है। इस अवसर पर उन्होंने दूरदर्शन की ऐतिहासिक भूमिका और महत्व पर भी प्रकाश डाला। विभागाध्यक्ष जयपाल मेहरा ने विद्यार्थियों को फोटोग्राफी की बारीकियों से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि लगातार अभ्यास और नए अवसरों की तलाश से विद्यार्थी इस क्षेत्र में उच्च स्थान प्राप्त कर सकते हैं। इस अवसर पर जनसंचार विभाग से अनिल कुमार सहित विद्यार्थी उपस्थित रहे।

## अंतरराष्ट्रीय यज्ञ दिवस घोषित करने के लिए उपायुक्त को सौंपा ज्ञापन

**हिसार।** 17 सितंबर को अंतरराष्ट्रीय यज्ञ दिवस घोषित करने की मांग को लेकर जिले की सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं ने उपायुक्त के माध्यम से प्रधानमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा। इस अवसर पर भगवान परशुराम जन कल्याण संस्थान, भगवान परशुराम जनसेवा समिति, रास्ता फाउंडेशन ट्रस्ट, गौपुत्र सेना, श्री परशुराम इंटरनेशनल संगठन, राधाकृष्ण गौशाला धांसू की ओर से ज्योति प्रकाश कौशिक, मनोनीत निगम पार्षद गगन शर्मा, योगेंद्र शर्मा, श्रीमती रेणु सिंधू, श्रीमती सीमा शर्मा, विकास बिश्नोई धांसू, मनोज शर्मा, विकास गौड़, संजय बिश्नोई, नवनीत कुमार, बबलू कुलचानिया, पवन सावंत, मनोज शर्मा घोटडू, पवन राजपूत मंगाली आदि मौजूद थे। पूज्य गुरुदेव यज्ञ सम्राट श्री हरिओम जी महाराज के शिष्य ज्योति प्रकाश कौशिक ने बताया कि ज्ञापन के माध्यम से हमने मांग की है कि भारत सरकार की ओर से मानव कल्याण व पर्यावरण उद्देश्य को मूल में रखते हुए 17 सितंबर को अंतर्राष्ट्रीय यज्ञ दिवस घोषित किया जाए।

## सुलखनी में दो सप्ताह बाद खुले स्कूल, फिलहाल एक ही स्कूल में लगेंगी कक्षाएं

**हिसार।** बरवाला क्षेत्र के गांव सुलखनी में भारी बारिश से हुए जलभराव के कारण बंद हुए सरकारी स्कूल लगभग दो सप्ताह बाद फिर से खुल गए। स्कूल खुलने पर बच्चों को ट्रैक्टर-ट्रॉली में बैठकर पानी से गुजरते हुए स्कूल में पहुंचाया गया। जलभराव को देखते हुए सभी कक्षाएं फिलहाल एक ही स्कूल में लगाई जाएंगी। सुलखनी गांव के रमेश, संदीप, जगदीप आदि ने बताया कि भारी बारिश के कारण राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय और राजकीय प्राथमिक विद्यालय दोनों के मैदान और कक्षाओं में पानी भर गया था, जिसके चलते शिक्षा विभाग को स्कूलों में छुट्टी घोषित करनी पड़ी थी। उन्होंने कहा कि हर साल बरसात में यही समस्या आती है और अगर स्कूल परिसर से पानी निकालने का स्थायी प्रबंध नहीं किया गया तो भविष्य में बच्चों की पढ़ाई बार-बार बाधित होगी। ग्रामीणों और अभिभावकों ने प्रशासन से जल निकासी की व्यवस्था जल्द करने की अपील की है ताकि बच्चों को शिक्षा से वंचित न होना पड़े।

# हरियाणा को शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी बनाने के लिए सरकार प्रतिबद्धः नायब सिंह सैनी

एजेंसी

**रोहतक।** हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भारत को वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने के सपने को साकार करने के लिए प्रदेश में शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ किया गया है। प्रदेश सरकार हरियाणा को शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी राज्य बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को प्रदेश में वर्ष 2025 तक पूरी तरह लागू करने का लक्ष्य रखा गया है। सरकार द्वारा प्रदेश में नई 10 आईएमटी स्थापित की जाएंगी, जिन से प्रदेश के लाखों युवाओं को रोजगार के अवसर मिलेंगे। सरकार द्वारा गत साढ़े दस वर्ष के दौरान बिना पर्ची-बिना खर्ची के एक लाख 80 हजार युवाओं को मेरिट के आधार पर सरकारी रोजगार दिया गया है। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी स्थानीय सैनी शिक्षण संस्था के 75वें स्थापना वर्ष के अवसर पर

आयोजित कार्यक्रम में उपस्थितगण को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने शिक्षण संस्था के समर्पण भाव से शिक्षा के क्षेत्र में दिए जा रहे सराहनीय योगदान के लिए बधाई और शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा शिक्षण संस्था ने समाज में शिक्षा का प्रकाश फैलाने के गौरवपूर्ण 75 वर्ष पूर्ण कर लिए हैं। गत 10 मई 1941 को इसी शहर की एक चौपाल में सैनी प्राइमरी स्कूल से शुरू हुई संस्था महात्मा ज्योतिबा फुले के कर्म ही पूजा है के संदेश पर चलते हुए 75 वर्षों बाद, आज यह सोसायटी एक वट वृक्ष बन चुकी है। उन्होंने अपने स्वैच्छिक कोष से संस्था के लिए 51 लाख रुपए की राशि देने की घोषणा की तथा सैनी शिक्षण संस्था द्वारा रखी गई सभी चार मांगों को यथासंभव पूर्ण करवाने का आश्वासन दिया। राज्यसभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा ने शिक्षण संस्था को 21 लाख रुपए की राशि देने की घोषणा की।

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने इस अवसर पर महात्मा ज्योतिबा फुले शिक्षा सदन का लोकार्पण तथा सैनी पब्लिक स्कूल के नए भवन का शिलान्यास किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि सामाजिक क्रांति के अग्रदूत महात्मा ज्योतिबा फुले व भारत की प्रथम महिला शिक्षिका सावित्री बाई फुले सैनी समाज के रत्न है।

## अग्रसेन जयंती महोत्सव के लिये विभिन्न संस्थाओं की ड्यूटियां लगाई

एजेंसी

**हिसार।** महाराजा अग्रसेन भवन ट्रस्ट के तत्वाधान में 21 सितंबर को भवन प्रांगण में होने वाले महाराजा अग्रसेन जयंती महोत्सव की तैयारियों के लिये नगर की विभिन्न संस्थाओं से जुड़े गणमान्य लोगों की अग्रसेन भवन में बैठक हुई। ट्रस्ट के प्रधान अंजनी कुमार खारियावाला ने बैठक की अध्यक्षता करते हुए बताया कि महोत्सव को सफल बनाने व व्यवस्था बनाने के लिये पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं की ड्यूटियां लगाई गई। निमंत्रण कार्ड भी वितरित किये गये। प्रधान अंजनी कुमार खारियावाला ने बताया कि महोत्सव में स्थानीय निकाय मंत्री विपुल गोयल, पूर्व मंत्री डॉ. कमल गुप्ता, विधायक सावित्री जिंदल व हरियाणा प्रदेश व्यापार मंडल के अध्यक्ष बजरंग दास गर्ग विशेष अतिथि के रुप में उपस्थित होंगे। महोत्सवमें अनेक वक्ता महाराजा अग्रसेन महाराज के जीवन व उनके द्वारा समाज हित में किये गये कार्यों के बारे में विस्तार से बताएंगे। इसके अलावा बाहर से आने वाले अनेक कलाकार सांस्कृतिक

कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे। बैठक में ट्रस्ट से जुड़े प्यारेलाल लाहोरिया, राम निवास कोहलीवाले, एनके गोयल, दीपक गर्ग, प्रवीन जैन, कृष्ण खारिया, प्रवीन गर्ग, सुरेन्द्र दुर्जनपुरिया, सत्यपाल अग्रवाल, सुरेन्द्र बागड़ी, अभिमन्यु बंसल, संजय डालमिया, देवेन्द्र गर्ग, शिवकुमार अग्रवाल, शिबू सिंगला, राजेश सिंगला, अनिल तनेजा, सुरेन्द्र बालान, साधना गोयन्का, कल्पना जैन, गुंजन आर्य, लीना सिंगला, नेहा महता आदि उपस्थित रहे।

## मॉडल टाउन के पॉश इलाके में बरनाला ज्वेलर्स के बाहर फायरिंग, घटना सीसीटीवी में कैद

एजेंसी

**यमुनानगर।** शहर के पॉश इलाके मॉडल टाउन में देर रात बरनाला ज्वेलर्स के बाहर फायरिंग की वारदात से दहशत फैल गई। गोली चलने की आवाज सुनते ही आसपास भगदड़ मच गई और लोग सहम गए। इस घटना ने एक बार फिर से शहर की सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।जानकारी के अनुसार, सीसीटीवी फुटेज में तीन युवक बाइक पर आते दिखाई दिए। वे कुछ देर तक दुकान के बाहर रुके और फिर वहां से निकल गए। पुलिस फिलहाल फुटेज के आधार पर जांच में जुटी है, लेकिन आरोपियों की पहचान अभी तक स्पष्ट नहीं हो पाई है।

**24 घंटे में दूसरी फायरिंग की वारदात**

बीते 24 घंटे के भीतर जिले में यह दूसरी गोलीबारी है। इससे पहले साढौरा में एक इमीग्रेशन संचालक के घर बदमाशों ने गोलियां चलाई थीं। उस वारदात में पुलिस ने तुरंत कार्रवाई करते हुए एक युवक को गिरफ्तार भी किया था। लोगों को उम्मीद थी कि गिरफ्तारी के बाद

अपराधियों के हौसले पस्त होंगे, लेकिन अगले ही दिन मॉडल टाउन जैसी हाई-प्रोफाइल लोकेशन पर गोली चलने से हालात और चिंताजनक हो गए हैं।

**व्यापारी वर्ग में खौफ**

लगातार हो रही फायरिंग की घटनाओं से खासकर व्यापारी वर्ग में गहरी चिंता और भय का माहौल है। व्यापारी पहले ही आर्थिक दबाव से जूझ रहे हैं, ऊपर से इस तरह की घटनाएं उनकी सुरक्षा पर संकट और गहरा रही हैं। स्थानीय व्यापारियों ने पुलिस से सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करने की मांग की है।

**पुलिस पर सवालिया निशान**

यमुनानगर में पुलिस अधीक्षक कमलदीप गोयल के कार्यभार संभालने के बाद से अपराधों पर कुछ हद तक रोक लगी थी। लेकिन लगातार दो वारदातों ने एक बार फिर पुलिस की कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े कर दिए हैं। बदमाशों के इस दुस्साहस ने साफ कर दिया है।

## युवाओं की सक्रिय भागीदरी से बनेगा विकसित भारतः सांसद चौधरी धर्मबीर सिंह

एजेंसी

**नारनौल।** भिवानी-महेन्द्रगढ़ सांसद चौधरी धर्मबीर सिंह ने युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय की इकाई माई भारत के तहत होने वाले विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग 2026 का पोस्टर लांच किया। चौधरी धर्मबीर सिंह ने युवाओं से अपील की कि इस क्विज प्रतियोगिता में अधिकतम युवा भाग लें और अपना भागीदारी प्रमाण पत्र प्राप्त करें। साथ ही आगे के राउंड कि तैयारी में जुट जाएं, ताकि राष्ट्रीय स्तर पर होने वाले कार्यक्रम में अधिकतम भागीदारी जिले के युवाओं की हो सके और युवाओं को प्रधानमंत्री के साथ संवाद करने का अवसर प्राप्त हो सके। इसका उद्देश्य युवाओं को नेतृत्व, विचार-विमर्श और राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में शामिल करना है। जिला युवा अधिकारी नित्यानंद यादव ने बताया कि संवाद युवाओं को विकसित भारत 2047 के विजन से जोड़ने का बेहतरीन मंच है। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम की शुरुआत माई भारत क्विज से होगी, जो 12 भाषाओं में आयोजित की जाएगी। क्विज में 20 प्रश्न होंगे और उत्तर देने के लिए

10 मिनट का समय मिलेगा। इसमें भाग लेने के लिए कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा। उन्होंने बताया कि प्रथम चरण में भाग लेने की अंतिम तिथि 15 अक्टूबर है। इसमें 10 हजार विजेताओं को सम्मानित किया जाएगा। इसके बाद निबंध लेखन, प्रस्तुति और संवाद सत्र के अगले चरण होंगे। युवा लिंक के माध्यम से प्रतियोगिता में भाग लिया जा सकता है। इस मौके पर जिला उपाध्यक्ष बासुदेव यादव, भवानी शंकर शर्मा, लेखाकार महेंद्र सिंह, हरीश शर्मा के अलावा अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे।

# समाज में अच्छे कार्य की सराहना जरूरी, इससे सेवा करने की प्रेरणा मिलती हैः अनिल विज

एजेंसी

**अंबाला।** हरियाणा के ऊर्जा, परिवहन एवं श्रम मंत्री अनिल विज ने कहा कि समाज में अच्छा काम करने वालों की सराहना करना अति आवश्यक है क्योंकि ऐसे मददगार लोगों को प्रोत्साहन मिलता है और दूसरों को भी समाज सेवा करने के लिए प्रेरणा मिलती हैं। एक मीडिया हाउस द्वारा आयोजित कार्यक्रम के लिए विज ने कहा कि आज अम्बाला के योद्धाओं, जिनमें चिकित्सकों के साथ-साथ अन्य शामिल है, उन्हें सम्मान देने के लिए आयोजन किया जा रहा है उसके लिए वे मीडिया हाउस के पदाधिकारियों को सेल्यूट करते हैं। विज ने यह अभिव्यक्ति अंबाला के किंगफिशर पर्यटक स्थल में आयोजित उत्कृष्ट सम्मान समारोह में बतौर मुख्य अतिथि कहीं। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप शिखा प्रज्जवलित करके किया गया। इस मौके पर उनके साथ मेयर शैलजा सचदेवा भी मौजूद रहीं।

ऊर्जा मंत्री अनिल विज ने इस

मौके पर हिन्दी दिवस पर आयोजित कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए कहा कि बहुत सारे दुनिया में ऐसे लोग होते हैं जो व्यवसाय करने के साथ-साथ समाज को रास्ता दिखाने का, समाज का भला करने का, समाज का कल्याण करने का काम करते है। यह समूह भी इसी कड़ी में शामिल हैं। उन्होंने इस मौके पर यह भी कहा कि किसी भी कार्यक्रम की शुरूआत दीपक प्रज्जवलित करके होती है। दीपक जलने का अर्थ यह बताता है कि रोशनी करने के लिए इसकी बाती को जलना पड़ता है और तब तक दीए में तेल होता है, यहीं जीवन का सार है। इसका मतलब यह है कि हमें समाज सेवा क्षेत्र में निःस्वार्थ कार्य करके जरूरमंद लोगों की मदद करनी चाहिए। विज ने इस मौके पर यह भी कहा कि हिन्दी दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया जाना काफी सराहनीय है। हिन्दी हमारी मातृभाषा है, हिन्दी पढ़ने से अपनेपन का भाव आता है, हिन्दी पढ़ने से संस्कार आते और हिन्दी पढ़ने से संस्कृति की अनुभूति होती हैं। उन्होनें अंग्रेजी भाषा को चुराई भाषा बताते हुए कहा कि अंग्रेजी भाषा को अपना स्टेटस सिंबल मानते है और यह भी कहा जाता है कि अंग्रेजी भाषा पढ़कर सब कुछ सीखा जा सकता है लेकिन यह वास्तविकता नहीं है। उन्होंने कहा कि जितने भी देश आज तरक्की कर रहें, वे सब अपनी भाषा को पढ़कर ही आगे बढ़े है। उन्होंने फ्रांस, चाईना, जर्मनी, जापान का उदाहरण देते हुए कहा कि इन देशों ने अपनी भाषा का इस्तेमाल किया और आज यह देश तरक्की के मार्ग पर अग्रसर हैं।

## तीसरी बार भाजपा सरकार बनाने में ओबीसी समाज की महत्वपूर्ण भूमिकाः डा. सतीश पूनिया

एजेंसी

**चंडीगढ़।** भाजपा प्रदेश प्रभारी डा. सतीश पूनिया ने कहा कि हरियाणा में तीसरी बार भाजपा सरकार बनाने में ओबीसी समाज की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने कहा कि सेवा पखवाड़ा उस नेतृत्व को समर्पित है, जिसने भारत को वैश्विक मंच पर सम्मान दिलाया है। प्रधानमंत्री मोदी की नीतियों और नेतृत्व ने भारत को एक नई दिशा दी है। उन्होंने कहा कि विश्व में पीएम मोदी की भूमिका एक विश्व नेता के रूप में उभरी है, जिस पर हर भारतीय को गर्व है। डा. पूनिया ने कहा कि बीजेपी की जनहितैषी नीतियों

और सुशासन से खुश देश प्रदेश की जनता ने भाजपा को तीसरी बार सेवा करने का मौका दिया है। उन्होंने कहा कि 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक इन 16 दिनों में सभी कार्यकर्ताओं केंद्र और राज्य सरकार की योजनाओं को लेकर घर-घर जाना है, और मोदी सरकार की नीतियों और उपलब्धियों को बताना है।

# सेवा पखवाड़ा पार्टी का कार्य नहीं, बल्कि जनसेवा का जनांदोलन है : मोहन लाल बड़ौली

ज्योति दर्पण

**पानीपत।** भाजपा प्रदेश अध्यक्ष पंडित मोहन लाल बड़ौली ने कहाकि पीएम मोदी के जन्म दिन को भारतीय जनता पार्टी सेवा पखवाड़ा के रूप में मना रही है। यह सेवा पखवाड़ा महज पार्टी कार्य नहीं, बल्कि जनसेवा का जनांदोलन है, इसलिए सभी कार्यकर्ता ''सेवा परमो धर्मः'' में रम जाए और जनता के बीच जाकर लोगों की सेवा करें। बड़ौली रविवार को पानीपत में एससी मोर्चा की प्रदेश स्तरीय विस्तारित कार्यसमिति की बैठक को संबोधित कर रहे थे। भाजपा एससी मोर्चा की प्रदेश विस्तारित कार्यसमिति की बैठक एससी मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष सत्य प्रकाश जरावता की अध्यक्षता में पानीपत के सेक्टर-25 में हुई। बैठक में सेवा पखवाड़ा के दौरान होने वाले दर्जनभर कार्यक्रमों की योजना रचना पर चर्चा हुई। इस बैठक में कैबिनेट मंत्री कृष्ण लाल पंवार, मंत्री कृष्ण कुमार बेदी, भाजपा एससी मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष लाल सिंह आर्य, एससी मोर्चा के प्रदेश प्रभारी राजेश लाबड़ियां, संगठन मंत्री फणीन्द्रनाथ शर्मा, प्रदेश महामंत्री डा. अर्चना गुप्ता, भाजपा जिला अध्यक्ष दुष्यंत भट्ट आदि मौजूद रहे। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष पंडित मोहन लाल बड़ौली ने

कहा कि भाजपा के कार्यकर्ता 17 सितंबर से दो अक्टूबर तक सेवा पखवाड़ा के तहत जनसेवा करेंगे। बड़ौली ने कहा कि हमारा सौभाग्य है कि पार्टी ने पीएम मोदी के जन्म दिन को सेवा पखवाड़ा के रूप में जनसेवा का संकल्प लिया है। हमें मोदी और नायब सरकार की योजनाओं को लेकर घर-घर जाना है। केंद्र की मोदी और प्रदेश की नायब सरकार की साफ नीयत और नीति को बताना है। पार्टी द्वारा आयोजित कार्यक्रमों के जरिए आम जनता से संपर्क, संवाद करना है। बड़ौली ने कहा कि भाजपा की विचारधारा राष्ट्रहित, सांस्कृतिक गौरव और जनसेवा पर आधारित है, यही हमारी सबसे बड़ी ताकत है। उन्होंने कहा कि सेवा पखवाड़ा के दौरान स्वदेशी और आत्मनिर्भर भारत जैसे विचारों से युवा पीढ़ी को अवगत कराना हमारी जिम्मेदारी है। बड़ौली ने कहा कि लोकप्रिय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत को वैश्विक मंच पर सम्मान दिलाया है। पीएम मोदी की नीतियों और नेतृत्व ने भारत को एक नई दिशा दी है। विश्व में मोदी की भूमिका एक विश्व नेता के रूप में उभरी है, जिस पर हर भारतीय को गर्व है।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि नायब सरकार प्रदेश में सेवा, समर्पण और सुशासन के माध्यम से जनता का विश्वास जीत रही है। हमें अपने-अपने जिलों, मंडलों और बूथ स्तर पर जनता के बीच जाकर मोदी और नायब सरकार की उपलब्धियां बतानी है और लोगों को पार्टी की विचारधारा से जोड़ना है। बड़ौली ने कहा कि 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक सेवा के कार्य होंगे। रक्तदान शिविर, एक पेड मां के नाम अभियान, स्वच्छता कार्यक्रम सभी बूथों पर चलेंगे। उन्होंने कहा कि सभी कार्यकर्ता सेवा के कार्यों में भाग लेते हुए लोगों की मदद करें।

## रेलवे ट्रैक पर कटकर युवक की मौत, मानसिक परेशानी से जूझ रहा था

ज्योति दर्पण

**यमुनानगर।** जगाधरी वर्कशॉप और दराजपुर रेलवे स्टेशन के बीच एक युवक की ट्रेन की चपेट में आने से मौत हो गई। मृतक की पहचान हसनपुरा निवासी 35 वर्षीय रवि कुमार के रूप में हुई। राजकीय रेलवे पुलिस के जांच अधिकारी नवीन कुमार ने बताया कि अलसुबह रेलवे मेमो के माध्यम से सूचना मिली थी कि रेलवे लाइन पर एक शव पड़ा है। टीम मौके पर पहुंची तो शव पूरी तरह से कटा हुआ मिला। परिजनों ने शव की पहचान रवि के रूप में की।

परिजनों के अनुसार, रवि लंबे समय से मानसिक रूप से परेशान था। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम कराया और परिजनों को सौंप दिया।

## युवा उद्यमी ही लिख सकते हैं विकसित भारत-विकसित हरियाणा की कहानीः नायब सैनी

ज्योति दर्पण

**पानीपत।** हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत जैसे राष्ट्रीय अभियानों की सफलता में लघु उद्योगों की भूमिका सर्वोपरि है। 21वीं सदी का भारत जिस ऊंचाई और गति से आगे बढ़ रहा है, उसमें एमएसएमई का महत्वपूर्ण योगदान है। हरियाणा सरकार लघु उद्योगों के विकास के लिए विशेष योजनाएं और प्रोत्साहन नीतियां लागू कर रही है, ताकि उद्यमियों को अधिक से अधिक अवसर मिल सकें और वे बाजार प्रतिस्पर्धा में मजबूती से खड़े हो सकें। मुख्यमंत्री जिला पानीपत के समालखा में आयोजित लघु उद्योग भारती के राष्ट्रीय अधिवेशन को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि समालखा में लघु उद्योग भारती के तीन दिवसीय औद्योगिक चिंतन से लघु उद्योगों के विकास की नई दिशा मिल सकेगी। ऐसे कार्यक्रमों के माध्यम से मार्गदर्शन प्राप्त कर युवा उद्यमी विकसित भारत - विकसित हरियाणा की कहानी लिखेंगे। नायब सिंह सैनी ने कहा कि हरियाणा का भौगोलिक क्षेत्र केवल 1.3 प्रतिशत है, लेकिन यह वर्ष 2024-25 के अग्रिम अनुमान के अनुसार राष्ट्रीय जीडीपी में 3.6 का प्रतिशत का योगदान दे रहा है। सकल राज्य घरेलू

उत्पाद पिछले दशक में 10.8 प्रतिशत की दर से बढ़ा है। फरीदाबाद, पानीपत, यमुनानगर और अंबाला के अनधिकृत औद्योगिक क्षेत्र में चल रही हजारों एमएसएमई को राहत प्रदान की गई है और इस क्षेत्र में इनका लाभ भी मिलना शुरू हो गया है। प्रदेश में 10 नए आईएमटी विकसित करने की योजना बनाई गई है जिनमें से तीन नए आईएमटी राष्ट्रीय राजमार्गों पर विकसित करने के लिए भूमि प्राप्त की जा रही है। इनमें अंबाला, जींद और फरीदाबाद-पलवल आईएमटी शामिल हैं। इनके अलावा कोसली और नारायणगढ़ में भी आईएमटी के लिए जगह चिन्हित की गई है। उन्होंने कहा कि सरकार ने व्यापार करने में आसानी के लिए 48 विभागों में 1100 से अधिक अनुपालनों के नियामक बोझ को कम किया है। विगत 11 वर्षों में प्रदेश में 7 लाख 66 हजार सूक्ष्म लघु व मध्यम उद्योग लगे हैं तथा इनमें 39 लाख लोगों को रोजगार भी मिला है।

# मुआवजे के नाम पर किसानों के साथ मजाक कर रही है प्रदेश की भाजपा सरकार : कुमारी सैलजा

एजेंसी

**ऐलनाबाद।** अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की महासचिव, पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं सांसद कुमारी सैलजा ने ऐलनाबाद विधानसभा क्षेत्र के बाढ़ प्रभावित गांवों का दौरा कर किसानों की समस्याएं सुनी। सांसद ने कहा कि मुआवजे के नाम पर प्रदेश की भाजपा सरकार किसानों के साथ मजाक कर रही है, स्वयं किसान हितेषी होने का दावा करने वाली भाजपा सरकार को पता होना चाहिए कि फसलों का लागत मूल्य क्या होता है और किसान को किस परेशानी से गुजरना होता है। सरकार को नरमा और कपास पर कम से कम 60-75 हजार रुपये प्रति एकड़ मुआवजा देना चाहिए, 15 हजार रुपये प्रति एकड़ की घोषणा कर सरकार किसानों के जख्मों पर नमक छिड़क रही है। सिरसा की सांसद कुमारी सैलजा ने ऐलनाबाद क्षेत्र का दौरा किया। सबसे पहले ऐलनाबाद में सुनील गोदारा के आवास पर पहुची और कार्यकर्ताओं से मिली। इस मौके पर ऐलनाबाद विधायक चौ. भरत सिंह बैनीवाल, कांग्रेस की जिला प्रधान संतोष बैनीवाल, वीरभान मेहता, संदीप नेहरा एडवोकेट, राजेश चाडीवाल, पूर्व जिला प्रधान मलकीत सिंह खोसा, मलकीत सिंह रंधावा, राम सिंह सोलंकी चेयरमैन नगर पालिका ऐलनाबाद, सतपाल मेहता, लादूराम पूनिया, जग्गा सिंह बराड़ डबवाली दुर्गा सिंह पूर्व सरपंच औटू और भोला सिंह मल्लेकां आदि मौजूद थे।

इस मौके पर सांसद सैलजा ने पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि इस क्षेत्र में नरमा-कपास और धान की सबसे ज्यादा फसल होती है, नरमा कपास फसलों पर लागत खर्च 75 हजार से 90 हजार रुपये तक आता है ऐसे में कम से कम 60 से 75 हजार रुपये प्रति एकड़ मुआवजा दिया जाना चाहिए। सरकार धान उत्पादक किसानों के साथ मजाक कर रही है, उन्हें मुआवजा मिलेगा भी या नहीं सरकार पर निर्भर है, सरकार के इस रुख से 12 जिलों के धान उत्पादक किसान परेशान है। सांसद ने कहा कि बाढ़ से पीड़ित किसानों के साथ सरकार को पोर्टल पोर्टल नहीं खेलना चाहिए क्या संकट की इस घड़ी में किसानों ही हर संभव मदद की जानी चाहिए।

# शेयर बाजार तेजी के साथ बंद

## सेंसेक्स 594 , निफ्टी 169 अंक उछला

**मुंबई**

भारतीय शेयर बाजार मंगलवार को तेजी के साथ बंद हुआ। सप्ताह के दूसरे ही कारोबारी दिन बाजार में ये उछाल दुनिया भर से मिले अच्छे संकेतों के साथ ही वाहन शेयरों में खरीददारी हावी रहने से आया है। दिन भर के कारोबार के बाद 30 शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स 594.95 अंक बढ़कर 82,380.69 जबकि 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी 169.90 अंक ऊपर आकर 25,239.10 पर बंद हुआ। आज कारोबार के दौरान अधिक सूचकांकों में तेजी रही। स्मॉलकैप, मिडकैप और लार्जकैप शेयरों में तेजी देखी गयी। निफ्टी मिडकैप 100 इंडेक्स 313.45 अंक की तेजी के साथ 58,799.55 और निफ्टी स्मॉलकैप 100 इंडेक्स 171.35 अंक बढ़कर 18,298.35 पर रहा।

बाजार में तेजी वाहन शेयरों के कारण रही। निफ्टी ऑटो इंडेक्स 1.44 फीसदी की बढ़त के साथ बंद हुआ। वहीं निफ्टी रियल्टी 1.07 फीसदी , निफ्टी आईटी 0.86 फीसदी , निफ्टी एनर्जी 0.89 फीसदी और निफ्टी इन्फ्रा 1.02 फीसदी की तेजी का साथ बंद हुआ। वहीं सेंसेक्स पैक में कोटक महिंद्रा बैंक, एलएंडटी, एमएंडएम, मारुति सुजुकी, भारती एयरटेल, टाटा स्टील, एक्सिस बैंक, अल्ट्राटेक सीमेंट, एचसीएल टेक, एनटीपीसी, बीईएल, टीसीएस, अदाणी पोर्ट्स और एसबीआई के शेयर लाभ में रहे जबकि बजाज फाइनेंस और एशियन पेंट्स के शेयर गिरे हैं। अमेरिकी फेड के ब्याज दरों में 25 आधार अंक की कटौती की उम्मीद से भी बाजार में उत्साह का माहौल है।

इसके अलावा भारत-अमेरिका के बीच ट्रेड वार्ता शुरू होने से भी निवेशकों का उत्साह बढ़ा हुआ है। इससे भी बाजार को बल मिला। ऑटो और उपभोक्ता क्षेत्र के शेयरों में विशेष तेजी रही।इससे पहले आज सुबह भारतीय शेयर बाजार की शुरुआत तेजी के साथ हुई। सुबह बीएसई सेंसेक्स 65 अंकों की तेजी के साथ 81,852.11 पर खुला और शुरुआती कारोबार

में 137 अंक बढ़कर 81,922.96 पर पहुंच गया। वहीं, निफ्टी 50 भी 25,073.60 पर खुलने के बाद 45.95 अंकों की तेजी के साथ 25,115 पर कारोबार करता दिखा। बाजार की नजर इस सप्ताह अमेरिकी फेडरल रिजर्व की ब्याज दरों पर फैसले पर टिकी है। वॉल स्ट्रीट पर इस हफ्ते होने वाली फ़ेडरल रिज़र्व की बैठक से पहले अमेरिकी शेयर बाज़ार बढ़त के साथ बंद हुए।

एसएंडपी 500 इंडेक्स 0.5 प्रतिशत बढ़कर पहली बार 6,600 के पार 6,615.28 पर बंद हुआ। नैस्डेक कंपोजिट इंडेक्स 0.9 फीसदी बढ़कर रिकॉर्ड 22,348.75 पर पहुंच गया। जबकि डॉव जोन्स इंडस्ट्रियल एवरेज 0.1 फीसदी बढ़कर 45,883.45 पर पहुंच गया।

# खाद्यान्न, फल या सब्जियों की कोई कमी नहीं........भारत दुनिया की फूड बास्केट बनेगा

## 'राष्ट्रीय कृषि सम्मेलन रबी अभियान 2025' में बोले कृषि मंत्री

**नई दिल्ली**

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने बताया कि देश में खाद्यान्न, फल या सब्जियों की कोई कमी नहीं होगी और भारत दुनिया की फूड बास्केट बनेगा। दिल्ली में दो दिवसीय 'राष्ट्रीय कृषि सम्मेलन रबी अभियान 2025' को संबोधित कर कृषि मंत्री चौहान ने कहा कि देश में कृषि 3.7 प्रतिशत की दर से बढ़ रही है, जो दुनिया में सबसे अधिक है, और इसका श्रेय हमारे किसानों और वैज्ञानिकों की कड़ी मेहनत और सरकार की किसान-हितैषी नीतियों को जाता है। उन्होंने कहा कि केंद्र और राज्य एकजुट हैं और हमारे राष्ट्र, हमारे लोगों और हमारे किसानों के लिए, हम पूरी ताकत से मिलकर काम करते करने वाले हैं, क्योंकि उनका कल्याण हमारे लिए सर्वोपरि है।

केंद्रीय मंत्री चौहान ने कहा, हम भाग्यशाली हैं कि हमें भारत के कृषि परिदृश्य को बदलने की जिम्मेदारी मिली है। हम साधारण लोग नहीं हैं। हम वे लोग हैं जो देश की आधी आबादी का भाग्य गढ़ते हैं। हमें पूरी लगन से काम करना होगा। कृषि मंत्री चौहान ने कहा कि अब केवल सभी मानकों और मानदंडों को पूरा करने वाले बायो-स्टिमुलेंट्स (पौधों की वृद्धि बढ़ाने वाले) ही बिक्री के लिए उपलब्ध होगा।

केंद्र के साथ मिलकर सभी राज्य कृषि विभागों, कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि विज्ञान केंद्रों और सभी संबंधित संगठनों को ठोस कार्यक्रम और रणनीति तैयार करनी चाहिए और जमीनी स्तर पर तेजी से काम करना चाहिए। अधिकारियों को अपने काम में मूल्यवर्धन करना चाहिए। उन्होंने कहा कि मौसम का अब पूर्वानुमान लगाना मुश्किल है, इसलिए ज्यादा से ज्यादा किसानों को फसल बीमा के दायरे में लाया जाना चाहिए और अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने के लिए प्रयास करने चाहिए।

# बासमती चावल के कारण यूरोपीय संघ के साथ भारत का मुक्त व्यापार समझौता अटका

## भारत और पाकिस्तान दोनों ही बासमती चावल पर दांवा कर रहे

**नई दिल्ली** भारत और पाकिस्तान के बीच बासमती चावल को लेकर लंबे समय से विवाद जारी है, जिसका असर यूरोपीय संघ (ईयू) के साथ भारत के मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर पड़ रहा है। दोनों देश बासमती नाम के इस्तेमाल पर विशेष अधिकार का दावा करते आए हैं। भारत और पाकिस्तान दुनिया में बासमती चावल के दो प्रमुख निर्यातक हैं। भारत के पास इसकी 34 किस्में हैं, जबकि पाकिस्तान 24 किस्मों का उत्पादन करता है। बासमती नाम के इस्तेमाल से उत्पादकों को अंतरराष्ट्रीय बाजार में ज्यादा कीमत वसूलने का फायदा मिलता है।भारत ने 2020 में यूरोपीय संघ में बासमती चावल के लिए जियोग्राफिकल इंडिकेशन (जीआई) टैग का आवेदन किया था। भारत का कहना है कि बासमती की उत्पत्ति हिमालय की तलहटी में गंगा के मैदानी इलाकों में हुई, जो पंजाब, हरियाणा, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, दिल्ली और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में फैले हैं। भारत के अनुसार इसकी सुगंध, स्वाद और लंबे दाने क्षेत्र की भौगोलिक विशेषताओं से जुड़े हैं। वहीं पाकिस्तान भारत के दावे का विरोध कर तर्क देता है कि विभाजन से पहले यह चावल अविभाजित पंजाब में उगता था, इसलिए यह दोनों देशों की साझा विरासत है। पाकिस्तान को आशंका है कि यदि भारत को जीआई टैग मिल गया, तब उसके निर्यात को गहरा नुकसान होगा। इसी कारण पाकिस्तान ने 2020 में अपना जीआई एक्ट बनाया और 2021 में अपने बासमती को जीआई टैग दिया। 2023 में पाकिस्तान ने यूरोपीय संघ में अपना आवेदन भी दायर किया, जिसमें पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) के चार जिलों को भी शामिल किया गया।यूरोपीय संघ में भारत का आवेदन विचाराधीन है और पाकिस्तान ने उस पर औपचारिक आपत्ति दर्ज कराई है। अधिकारियों का कहना है कि पाकिस्तान के दावे को मान्यता देना भारत की संप्रभुता पर सवाल खड़ा कर सकता है, इसलिए ब्रुसेल्स इस पर सावधानी बरत रहा है। विवाद केवल यूरोपीय संघ तक सीमित नहीं है बल्कि ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड जैसे देशों में भी इसी तरह की दिक्कतें सामने आई हैं।भारत दुनिया का सबसे बड़ा बासमती निर्यातक है और वैश्विक बाजार का करीब 65 प्रतिशत हिस्सा उसके पास है। पाकिस्तान शेष बाजार में हिस्सेदारी रखता है। हाल ही में भारत ने ईरान को 6,374 करोड़ रुपये का बासमती निर्यात किया, जो उसके कुल निर्यात का 12.6 प्रतिशत था।

# यूपीआई से बिना एटीएम कार्ड के कैश निकासी जल्द होगी संभव

## - नई सुविधा से आसान होगी कैश निकासी

**नई दिल्ली**

अब आपको एटीएम कार्ड या बैंक शाखा तक जाने की जरूरत नहीं होगी। जल्द ही यूपीआई के जरिए आप अपने नजदीकी बिजनेस कॉरेस्पॉन्डेंट के आउटलेट से सीधे कैश निकाल सकेंगे। यह सुविधा खासकर ग्रामीण और छोटे शहरों के लोगों के लिए मददगार साबित होगी, जहां बैंकिंग सुविधाएं कम होती हैं। इस नए सिस्टम में आपको बिजनेस करेस्पोंडेंट के आउटलेट पर लगे क्यूआर कोड को अपने यूपीआई ऐप से स्कैन करना होगा।

फिर आप जितनी राशि निकालना चाहते हैं, वह भरेंगे और अपना यूपीआई पिन डालेंगे। आपकी राशि सीधे आपके बैंक खाते से करिस्पोंडेंट के खाते में ट्रांसफर हो जाएगी। इसके बाद आप उनसे नकद राशि ले सकेंगे। पहले भी कुछ चुनिंदा एटीएम पर कार्डलेस कैश निकासी संभव थी, लेकिन वह सुविधा सीमित और बायोमेट्रिक या कार्ड पर निर्भर थी। नया सिस्टम बिना फिंगरप्रिंट या एटीएम कार्ड के भी काम करेगा। इससे उन लोगों को काफी फायदा होगा जिन्हें कार्ड या बायोमेट्रिक इस्तेमाल करने में दिक्कत होती है। इस नई सेवा को लागू करने के लिए भारतीय रिज़र्व बैंक (आरबीआई) की मंजूरी का इंतजार है। एनपीसीआई (भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम) जल्द से जल्द इसे शुरू करना चाहता है ताकि डिजिटल भुगतान के दायरे को बढ़ाया जा सके और बैंकिंग सुविधाओं से दूर रहने वाले लोग भी आसानी से कैश निकाल सकें।

# भारत में क्रिप्टो करेंसी की खरीद रिकॉर्ड स्तर पर पिछले वर्ष की तुलना में 50 फ़ीसदी वृद्धि

**मुंबई**

भारत में क्रिप्टो करेंसी की मांग और निवेश बढ़ता चला जा रहा है। भारत में क्रिप्टो करेंसी को अभी कोई वैधानिक दर्जा नहीं मिला है। इसके बाद भी क्रिप्टो करेंसी का कारोबार बढ़ता चला जा रहा है। निवेशकों का रुझान क्रिप्टो करेंसी की ओर बढ़ रहा है।

क्रिप्टो करंसी में निवेश करने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। 2025 की प्रथम छमाही में रिटेल और कॉर्पोरेट द्वारा बड़े पैमाने पर क्रिप्टो करेंसी पर निवेश किया जा रहा है।

क्रिप्टो करंसी के कारोबार में लगे विशेषज्ञों के अनुसार 2024 की प्रथम छमाही की तुलना में 2025 की प्रथम छमाही में क्रिप्टो करंसी में निवेश 1071 गुना बढ़ा है। पिछले 2 महीने में ही लगभग 49 फीसदी की वृद्धि देखने को मिली है।

भारत ने क्रिप्टो करंसी के मामले में अमेरिका को पीछे छोड़ दिया है। भारत पहले नंबर पर है। अमेरिका दूसरे नंबर पर है। एशिया प्रशांत क्षेत्र में क्रिप्टो करेंसी का कारोबार बड़ी तेजी के साथ बढ़ रहा है। पिछले 6 महीने में यह कारोबार 1.4 लाख डालर से बढ़कर 2.36 लाख करोड़ डॉलर पर पहुंच गया है। क्रिप्टो करेंसी के कारोबार में भारत के अलावा वियतनाम और पाकिस्तान जैसे देशों में निवेश लगातार बढ़ रहा है।

क्रिप्टो करेंसी के कारोबार में पहले बड़ी-बड़ी कंपनियों और अभिजात्य वर्ग के बड़े निवेशक ही रुचि लेते थे। अब पटना लखनऊ जैसे छोटे शहरों से भी क्रिप्टो करेंसी में निवेश बढ़ रहा है। एक अनुमान के अनुसार भारत में 11.9 करोड़ से अधिक क्रिप्टो करेंसी कारोबार मे निवेशक हैं।

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के परिवार का क्रिप्टो करेंसी के कारोबार में आ जाने के बाद से क्रिप्टो करंसी बिटकॉइन में तेजी के साथ निवेश बढ़ा है। बिटकॉइन का नियमित कारोबार 35.24 बिलियन डालर पर पहुंच गया है। पिछले 11 महीना में बिटकॉइन के रेट में लगभग 54 फ़ीसदी का उछाल आया है।

# सात्विक ग्रीन एनर्जी का 900 करोड़ का आईपीओ 19 को खुलेगा

## - मूल्य दायरा 442-465 रुपये प्रति शेयर

**नई दिल्ली** हरियाणा स्थित सौर पैनल निर्माता सात्विक ग्रीन एनर्जी 19 सितंबर को अपना 900 करोड़ रुपए का आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) लॉन्च करेगी, जो 23 सितंबर तक खुला रहेगा। कंपनी ने प्रति शेयर मूल्य दायरा 442 से 465 रुपए तय किया है, जिसके उच्च स्तर पर कंपनी का मूल्यांकन करीब 5,910 करोड़ रुपए होगा। इस आईपीओ में 700 करोड़ रुपए के नए शेयर और 200 करोड़ की बिक्री पेशकश (ओएफएस) शामिल हैं। कंपनी आईपीओ से मिली राशि में से 477.23 करोड़ रुपए का उपयोग ओडिशा के गोपालपुर औद्योगिक पार्क में 4 गीगावाट क्षमता का सौर पीवी मॉड्यूल प्लांट लगाने में करेगी। साथ ही 166.44 करोड़ रुपए अनुषंगी कंपनियों में निवेश कर उनके कर्ज का भुगतान करेगी। एंकर निवेशक 18 सितंबर को शेयरों के लिए बोली लगा सकेंगे। यह आईपीओ भारत की ग्रीन एनर्जी में तेजी से हो रहे विस्तार का हिस्सा है।

# आईफोन 17 प्रो मेक्स का कॉस्मिक ऑरेंज वेरिएंट आउट ऑफ स्टॉक

## - भारत और अमेरिका में भारी मांग, एप्पल स्टोर्स पर नहीं उपलब्ध

**नई दिल्ली** आईफोन 17 प्रो मेक्स के कॉस्मिक ऑरेंज रंग की मांग ने भारत और अमेरिका में बिक्री के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। बुकिंग शुरू होने के महज तीन दिन के भीतर यह वेरिएंट सभी स्टोरेज मॉडल्स में आउट ऑफ स्टॉक हो गया है। एप्पल इंडिया की वेबसाइट के अनुसार भारत में आईफोन 17 प्रो और प्रो मेक्स की पूरी श्रृंखला वर्तमान में पिक-अप विकल्प के साथ प्री-ऑर्डर के लिए उपलब्ध नहीं है। खासकर कॉस्मिक ऑरेंज वेरिएंट किसी भी स्टोर पर नहीं मिल रहा है। एक एप्पल विशेषज्ञ ने बताया कि हमें खेद है, लेकिन ऑरेंज वेरिएंट की डिमांड इतनी ज्यादा है कि स्टॉक खत्म हो गया है। हम जल्द से जल्द इसे फिर से उपलब्ध कराने की कोशिश कर रहे हैं। कुछ स्टोर्स पर डार्क ब्लू वेरिएंट सीमित संख्या में मौजूद हैं। भारत में आईफोन 17 सीरीज की कीमत 82,900 से 2,29,900 रुपए तक रखी गई है। जिन ग्राहकों ने 12 सितंबर से पहले प्री-ऑर्डर किया है, उन्हें 19 सितंबर से डिलीवरी मिलनी शुरू हो जाएगी। वहीं नई बुकिंग करने वाले ग्राहकों को 7 अक्टूबर के बाद डिलीवरी मिलेगी। एप्पल ने भारत में अपने उत्पादन को बढ़ाया है, और बेंगलुरु स्थित फैक्ट्री में आईफोन 17 का निर्माण शुरू हो चुका है। हालांकि, चीन द्वारा लगाए गए अनौपचारिक प्रतिबंधों के चलते उत्पादन श्रृंखला में चुनौतियां बनी हुई हैं। विशेषज्ञों के अनुसार एप्पल 2025 में भारत में आईफोन उत्पादन को बढ़ाकर 6 करोड़ यूनिट तक पहुंचाने की योजना बना रहा है।

# रिकॉर्ड स्तर के बाद सोना-चांदी के दामों में नरमी

## - सोने का भाव 1,10,100 से ज्यादा और चांदी लगभग 1,29,300 प्र ति किलो

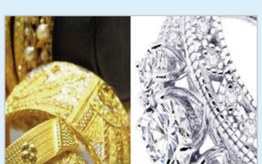

**नई दिल्ली** घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में सोना-चांदी के वायदा भावों में मंगलवार को नरमी दर्ज की गई। सोमवार को रिकॉर्ड उच्च स्तर पर पहुंचने के बाद निवेशकों की मुनाफावसूली के चलते भावों में हल्की गिरावट आई। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर सोने के अक्टूबर वायदा कॉन्ट्रैक्ट ने 1,10,277 प्रति 10 ग्राम पर शुरुआत की, जो पिछले बंद 1,10,179 रुपए के मुकाबले 98 ऊपर था। हालांकि इस समय तक यह 49 रुपए की गिरावट के साथ 1,10,130 रुपए पर कारोबार कर रहा था। इस दौरान सोने ने 1,10,277 का उच्चतम और 1,10,070 का न्यूनतम स्तर छुआ। सोमवार को यह 1,10,330 रुपए पर पहुंचकर अब तक का सर्वोच्च स्तर बना चुका है। वहीं चांदी के दिसंबर वायदा भाव की शुरुआत 1,29,336 रुपए प्रति किलो पर हुई, जो पिछले बंद से 94 रुपए कम थी। कारोबार के दौरान चांदी 1,29,214 रुपए के न्यूनतम और 1,29,390 रुपए के उच्चतम स्तर के बीच रही। इस समय तक यह 1,29,320 रुपए पर कारोबार कर रही थी, जो 109 रुपए की गिरावट दर्शा रही थी। अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी दबाव देखने को मिला। सोना 3,720.30 डॉलर प्रति औंस पर खुला और 3.30 डॉलर की गिरावट के साथ 3,715.70 डॉलर पर ट्रेड कर रहा था। चांदी की शुरुआत 43.20 डॉलर पर हुई, जो 42.95 डॉलर पर आ गई। विशेषज्ञों के अनुसार ऊंचे स्तर पर मुनाफावसूली के चलते बाजार में यह नरमी आई है।

# कच्छ की धरती पर हरित ऊर्जा की जंग अंबानी बनाम अदाणी

## - गुजरात में देश की सबसे बड़ी ग्रीन एनर्जी परियोजना की होड़

## - अंबानी और अदाणी के बीच दिखी अलग-अलग रणनीति

## - छोटे उद्यमों पर गहराया संकट

**नई दिल्ली**

गुजरात के कच्छ जिले की बंजर जमीन अब भारत की हरित ऊर्जा क्रांति का केंद्र बनने जा रही है। देश के दो सबसे बड़े उद्योगपति मुकेश अंबानी और गौतम अदाणी यहां दुनिया की सबसे बड़ी ग्रीन एनर्जी परियोजनाएं स्थापित करने की होड़ में हैं। दोनों समूहों के पास इस इलाके में लगभग 5 लाख एकड़ जमीन है, जहां से 100 गीगावाट से अधिक सौर ऊर्जा पैदा की जा सकती है जो जापान की कुल बिजली क्षमता के बराबर है। हाल ही में एक रिसर्च रिपोर्ट ने इसे 'रीजन आफ कच्छ' करार दिया है, जो दर्शाता है कि यह इलाका भारत की ऊर्जा राजनीति का प्रमुख केंद्र बनने वाला है। हालांकि दोनों कंपनियों का लक्ष्य एक है, भारत को ग्रीन एनर्जी लीडर बनाना लेकिन उनकी रणनीतियां अलग-अलग हैं। रिलायंस इंडस्ट्रीज ने पारंपरिक तेल-गैस कारोबार से हरित ऊर्जा की ओर कदम बढ़ाया है। कंपनी कच्छ में 20 गीगावाट क्षमता की सौर मॉड्यूल फैक्ट्री बना रही है, जिसमें अत्याधुनिक एचजेटी तकनीक का उपयोग होगा। इसके साथ ही कंपनी 40 गीगावाट-घंटे की बैटरी फैक्ट्री भी तैयार कर रही है, जिसे भविष्य में 100 गीगावाट-घंटे तक बढ़ाया जा सकता है। अंबानी का लक्ष्य है कि 2032 तक हर साल 30 लाख टन हरी हाइड्रोजन का उत्पादन किया जाए। इसके अलावा रिलायंस गूगल और मेटा जैसी टेक कंपनियों के साथ साझेदारी में हरित ऊर्जा से संचालित डेटा सेंटर स्थापित कर रही है। दूसरी ओर, अदाणी समूह अपनी पारंपरिक ताकत पावर ट्रांसमिशन और ग्रिड नेटवर्क का उपयोग कर रहा है।

अदाणी ग्रीन इनर्जी के पास पहले से ही कई बड़े बिजली खरीद समझौते हैं। वहीं अदाणी ट्रांसमिशन देश का सबसे बड़ा निजी ट्रांसमिशन नेटवर्क चला रहा है। अदाणी का फोकस इन्फ्रास्ट्रक्चर और वितरण नेटवर्क पर है। साथ ही, कंपनी एआई सक्षम डेटा सेंटर भी स्थापित कर रही है। हालांकि इस प्रतिस्पर्धा से छोटे और मझोले उद्यमों पर संकट गहरा रहा है। रिपोर्ट के अनुसार अगर आयात प्रतिबंध और नीतिगत समर्थन बड़े खिलाड़ियों को मिलता रहा, तो रिलायंस और अदाणी वेफर निर्माण और पॉलीसिलिकॉन का 90 फीसदी नियंत्रित कर सकते हैं। इससे वारी एनर्जीज, प्रीमियर एनर्जीज जैसी कंपनियों के लिए बाजार में टिकना कठिन हो जाएगा। दोनों समूहों के सामने कुछ चुनौतियाँ भी हैं।

रिलायंस को ग्रिड कनेक्शन की कमी और हाइड्रोजन उत्पादन की लागत से जूझना होगा, जबकि अदाणी की कोयला आधारित परियोजनाएं उसकी हरित ऊर्जा छवि को नुकसान पहुँचा सकती हैं।

फिर भी अगर दोनों कंपनियाँ अपने लक्ष्य पूरे करती हैं, तो यह न केवल उन्हें अरबों डॉलर की कमाई दिलाएगा, बल्कि भारत को हरित ऊर्जा महाशक्ति बनाने में भी अहम भूमिका निभाएगा।

# 1 अक्टूबर से ऑनलाइन टिकट बुकिंग में बड़ा बदलाव

## - सिर्फ आधार वेरिफाइड यात्री ही बुक कर सकेंगे टिकट

**नई दिल्ली** भारतीय रेलवे ने ऑनलाइन टिकट बुकिंग को अधिक पारदर्शी और सुरक्षित बनाने के लिए बड़ा कदम उठाया है। 1 अक्टूबर 2025 से टिकट खुलने के बाद पहले 15 मिनट तक केवल वही यात्री आईआरसीटीसी वेबसाइट या मोबाइल ऐप पर टिकट बुक कर सकेंगे जिनका आधार वेरिफिकेशन पूरा हो चुका है। रेलवे का यह फैसला ई-टिकटिंग में फर्जीवाड़ा रोकने और आम यात्रियों को प्राथमिकता देने के लिए लिया गया है। अक्सर देखा गया है कि टिकट खुलते ही एजेंट्स या बॉट्स के ज़रिए सीटें बुक हो जाती हैं, जिससे आम यात्रियों को कन्फर्म टिकट नहीं मिल पाता। अब आधार लिंकिंग के चलते वास्तविक यात्रियों को पहले मौका मिलेगा। इस नए नियम के साथ ही, पहले की तरह रेलवे के अधिकृत एजेंट्स पहले 10 मिनट तक टिकट बुक नहीं कर पाएंगे, जिससे आम यात्रियों को और अधिक प्राथमिकता मिलेगी। रेलवे ने इस बदलाव को लागू करने के लिए सीआरआईएस और आईआरसीटीसी को तकनीकी निर्देश जारी कर दिए हैं। साथ ही यात्रियों को जागरूक करने के लिए बड़े स्तर पर प्रचार अभियान चलाया जाएगा।

# भारत-अमेरिका व्यापार वार्ता शुरू

## - रूसी तेल खरीद पर उच्च स्तरीय बैठक, निर्यातकों के लिए राहत की उम्मीद

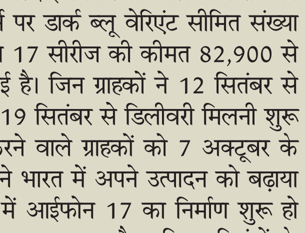


**नई दिल्ली** भारत और अमेरिका के बीच प्रस्तावित द्विपक्षीय व्यापार समझौते (बीटीए) को लेकर मंगलवार को नई दिल्ली में अहम बातचीत शुरू हुई। यह वार्ता ऐसे समय हो रही है जब अमेरिका ने रूस से कच्चा तेल खरीदने के कारण भारतीय निर्यातकों पर 25 फीसदी आयात शुल्क और 25 फीसदी अतिरिक्त जुर्माना लगा दिया है। अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व ब्रेंडन लिंच, दक्षिण और मध्य एशिया के लिए सहायक व्यापार प्रतिनिधि कर रहे हैं। भारत की ओर से राजेश अग्रवाल, वाणिज्य विभाग में विशेष सचिव, मुख्य वार्ताकार हैं। यह बैठक सोमवार रात लिंच के भारत आगमन के बाद शुरू हुई। दोनों देशों के नेताओं ने फरवरी 2025 तक इस समझौते के पहले चरण को अंतिम रूप देने का लक्ष्य तय किया था। अब तक पांच दौर की बातचीत हो चुकी है, जबकि छठा दौर अगस्त में प्रस्तावित था, लेकिन अमेरिका द्वारा शुल्क बढ़ाए जाने के बाद स्थगित कर दिया गया। वाणिज्य मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने स्पष्ट किया कि यह बैठक औपचारिक छठे दौर की नहीं है, बल्कि उसे पूर्व-विचार विमर्श के रूप में देखा जा रहा है। अधिकारी ने यह भी बताया कि भारत और अमेरिका के बीच साप्ताहिक वर्चुअल बैठकें भी जारी हैं।

# विदेशी निवेशकों ने भारतीय बाजारों से भारी निकासी की

## - पिछले सात हफ्तों में भारत फोकस्ड फंड्स से करीब 1.9 अरब डॉलर निकाले

**नई दिल्ली**

पिछले सात हफ्तों में भारत फोकस्ड फंड्स से करीब 1.9 अरब डॉलर यानी लगभग 16 हजार करोड़ रुपये विदेशी निवेशकों ने निकाले हैं। यह एक साल में दूसरी बार बड़ी निकासी है, पहले अक्टूबर 2024 से मार्च 2025 के बीच 4.4 अरब डॉलर का आउटफ्लो हुआ था। एक ब्रोकरेज फर्म की रिपोर्ट में यह स्पष्ट हुआ है कि वैश्विक निवेशक भारत के प्रति अनिश्चितता दिखा रहे हैं। रिपोर्ट के अनुसार, जापान जिसे भारत का भरोसेमंद निवेशक माना जाता था, उसने अक्टूबर 2024 से अब तक 1.1 अरब डॉलर निकाले हैं। जनवरी 2023 से सितंबर 2024 तक जापानी फंड्स ने भारत में 9 अरब डॉलर लगाए थे। अमेरिकी निवेशकों ने सबसे ज्यादा पैसा निकाला है, लगभग 1.02 अरब डॉलर। लक्जमबर्ग, ब्रिटेन और जापान के निवेशकों ने भी निकासी की। विदेशी निवेशकों की बिकवाली का सबसे बड़ा असर लार्ज-कैप स्टॉक्स पर पड़ा है। जुलाई 2025 से अब तक लार्ज-कैप फंड्स से 1.7 अरब डॉलर निकाले गए हैं। इसके अलावा एक्सचेंज ट्रेडेड फंड्स से

1.08 अरब डॉलर और फंड्स से 776 मिलियन डॉलर बाहर गए हैं। विदेशी निकासी के बावजूद घरेलू निवेशकों ने म्युचुअल फंड्स और एसआइपी के जरिए लगातार पैसा निवेश किया है। घरेलू संस्थागत निवेशकों की खरीदारी से बाजार में स्थिरता बनी हुई है। विशेषज्ञों का मानना है कि वैश्विक व्यापारिक तनाव और टैरिफ का दबाव बना रहने तक विदेशी निवेश की निकासी जारी रह सकती है। वहीं निवेशक सोने और कमोडिटी फंड्स की तरफ रुख कर रहे हैं। इस हफ्ते कमोडिटी फंड्स में 1.19 अरब डॉलर का निवेश हुआ, जो पिछले वर्षों में सबसे बेहतर प्रदर्शन माना जा रहा है।

# जीएसटी दरों में कटौती से पहले एफएमसीजी कंपनियों ने दी भारी छूट

## - 22 सितंबर से लागू होंगी नई दरें

**नई दिल्ली**

वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) की दरों में कटौती के चलते प्रमुख एफएमसीजी कंपनियां 21 सितंबर तक खुदरा विक्रेताओं को भारी छूट दे रही हैं। 22 सितंबर 2025 से नई जीएसटी दरें प्रभावी होंगी, जिनके तहत कई उत्पादों पर कर दर घटकर 5 प्रतिशत रह जाएगी। इस बदलाव से पहले कंपनियां अपने पुराने स्टॉक को तेजी से बेचने के लिए आकर्षक ऑफर लेकर आई हैं। हिंदुस्तान यूनिलीवर (एचयूएल) ने 20 सितंबर तक 'रिटेलर बोनांजा' स्कीम के तहत लक्स, डव, लाइफबॉय जैसे साबुनों पर 4 से 7 फीसदी तक की छूट दी है। इसके अलावा शैंपू पर 10 से 20 प्रतिशत और हेयर ऑयल ब्रांड्स पर 7 से 11 प्रतिशत की छूट दी जा रही है। स्किनकेयर ब्रांड्स जैसे पॉन्ड्स और लक्मे पर 11 प्रतिशत तथा टूथपेस्ट ब्रांड पेप्सोडेंट और क्लोजअप पर 8 प्रतिशत की छूट मिल रही है। डाबर इंडिया ने डाबर रेड टूथपेस्ट और मिसवाक पर 10 प्रतिशत अतिरिक्त छूट की घोषणा की है। वहीं पीएंडजी इंडिया ने अपने ब्रांड्स जैसे हेड एंड शोल्डर्स, पैंटीन, ओरल-बी और विक्स पर 'नेवर बिफोर जीएसटी स्पेशल ऑफर' के तहत छूट दी है। पैम्पर्स पर भी 5 प्रतिशत अतिरिक्त छूट मिल रही है। उद्योग से जुड़े सूत्रों के अनुसार, आईटीसी भी अपने रिटेल चैनलों को छूट दे रही है।

# प्रधानमंत्री का संवाद देश और दिलों को जोड़ता है

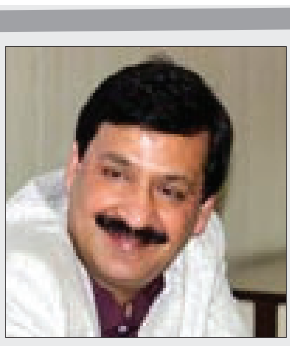

प्रो. संजय द्विवेदी

गुजरात के एक छोटे से कस्बे बड़नगर में पले-बढ़े नरेंद्र मोदी में ऐसा क्या है जो लोंगों को सम्मोहित करता है? उनकी राजनीतिक यात्रा भी विवादों से परे नहीं रही है। गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में उन्हें जिस तरह निशाना बनाकर उनकी छवि मलिन करने के सचेतन प्रयास हुए, वे सारे प्रसंग लोकविमर्श में हैं।

भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अपना 75 वां जन्मदिन बुधवार को मनाएंगे। उनकी जीवन यात्रा रचना, सृजन और संघर्ष की त्रिवेणी है। उनके व्यक्तित्व का सबसे खास पक्ष है संचार और संवाद।

भारत जैसे महादेश को संबोधित करना आसान नहीं है। इस विविधता भरे देश में वाक चातुर्य से भरे विद्वानों, राजनेताओं, प्रवचनकारों और अदीबों की कमी नहीं है। अपनी वाणी से सम्मोहित कर लेने वाले अनेक विद्वानों को हमने सुना और परखा है। लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की क्षमताएं उनमें विलक्षण हैं। वे हमारे समय के अप्रतिम संचारकर्ता हैं। संचार का विद्यार्थी होने के नाते मैं उनकी तरफ बहुत विश्लेषणात्मक दृष्टि से देखता हूं, किंतु वे अपनी देहभाषा, भाव-भंगिमा, शब्दावली और वाक चातुर्य से जो करते हैं, उसमें कमियां ढूंढ पाना मुश्किल है। उनका आत्मविश्वास और शैली तो विलक्षण है ही, वे जो कहते हैं उस बात पर भी सहज विश्वास करने का मन होता है। मोदी सही मायने में संवाद के महारथी हैं। वे जनसभाओं के नायक हैं तो एक्स जैसे नए माध्यमों पर भी उनकी तूती बोलती है। पारंपरिक मंचों से लेकर आधुनिक सोशल मीडिया मंचों पर उनकी धमाकेदार उपस्थिति बताती है संवाद और संचार को वे किस बेहतर अंदाज में समझते हैं।

गुजरात के एक छोटे से कस्बे बड़नगर में पले-बढ़े नरेंद्र मोदी में ऐसा क्या है जो लोंगों को सम्मोहित करता है? उनकी राजनीतिक यात्रा भी विवादों से परे नहीं रही है। गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में उन्हें जिस तरह निशाना बनाकर उनकी छवि मलिन करने के सचेतन प्रयास हुए, वे सारे प्रसंग लोकविमर्श में हैं। बावजूद इसके वे हिंदुस्तानी समाज के नायक बने हुए हैं तो इसके पीछे उनकी संप्रेषण कला और देहभाषा का अध्ययन प्रासंगिक हो जाता है। नरेंद्र मोदी देश के ऐसे प्रधानमंत्री हैं, जो कभी सांसद नहीं थे और पहली बार लोकसभा पहुंचकर देश के प्रधानमंत्री बने। 2014 के आमचुनावों की याद करें तो देश किस तरह निराशा और अवसाद से भरा हुआ था। लोग राजनीति और राजनेताओं से उम्मादें छोड़ चुके थे। अन्ना आंदोलन से एक अलग तरह का गुस्सा लोगों के मन में पनप रहा था। तभी एक आवाज गूंजती है 'मैं देश नहीं झुकने दूंगा।' दूसरी आवाज थी 'अच्छे दिन आने वाले हैं।' ये दो आवाजें थीं नरेंद्र मोदी की, जो देश को एक विकल्प देने के लिए मैदान में थे। राजनीति में आश्वासनपरक आवाजों का बहुत मतलब नहीं होता, क्योंकि राजनीति तो सपनों और

आश्वासनों के आधार पर ही की जाती है। किंतु नरेंद्र मोदी ने इस दौर में जो कुछ कहा उसे देश ने बहुत ध्यान से सुना। उनका दल लंबे समय से सत्ता से बाहर था और वे अपने दल की ओर से प्रधानमंत्री के उम्मीदवार बनाए जा चुके थे। जाहिर है अवसाद और निराशा से भरी जनता को एक अवसर था परख करने का। मोदी इस अवसर का लाभ उठाते हैं और जनता के मन में भरोसा जगाने का प्रयास करते हैं। वे लगातार अपनी सभाओं में कहते हैं कि वे ही इस देश को उसके संकटों से उबार सकने की क्षमता से लैस हैं। जनता मुग्ध होकर उनके भाषणों को सुनती है। अपनी अप्रतिम संवादकला से वे लोगों में यह भरोसा जगाने में सफल हो जाते हैं कि वे कुछ कर सकते हैं।

2014 में मोदी सत्ता में आते हैं और संचार के सबसे प्रभावकारी माध्यम को साधते हैं। वे आकाशवाणी पर 'मन की बात' के माध्यम से लोगों से संवाद का अवसर चुनते हैं। यानि उनका संवाद अवसर और चुनाव केंद्रित नहीं है, निरंतर है। उनमें एक सातत्य है। बदलाव के लिए, परिवर्तन के लिए, लोकजागरण के लिए। वे मन की बात को राजनीतिक विमर्शों के बजाए लोकविमर्शों का केंद्र बनाते हैं। जिसमें जिंदगी की बात है, सफाई की बात है, शिक्षा और परीक्षा की बात है, योग की बात है। मन की बात के माध्यम से वे खुद को एक ऐसे अभिभावक की तरह पेश करने में सफल होते हैं, जिसे देश और देशवासियों की चिंता है। संवाद की यही सफलता है और यही उसका उद्देश्य है। अपने लक्ष्य समूह को निरंतर अपने साथ जोड़े रखना मोदी की संवाद कला की दूसरी सफलता है। करोना संकट में भी हमने देखा कि उनकी अपीलों को किस तरह जनमानस ने स्वीकार किया, चाहे वे करोना वारियर्स के सम्मान में दीप जलाने और थाली बजाने की ही क्यों न हों। यह बातें बताती हैं कि अपने नायक पर देश का भरोसा किस तरह कायम है।

मोदी अपनी देहभाषा से कमाल करते हैं। कई बार चौंकाते भी हैं। देश की गहरी समझ भी इसका बड़ा कारण है, यही कारण है वे देश के जिस हिस्से में होते हैं वहां की स्थानीय बोली, वस्त्रों और प्रतीकों का सचेत इस्तेमाल करते हैं। इसके साथ ही उनकी पोशाकें, उनका हाफ कुर्ता, जैकेट्स आज एक तरह से स्टाइल स्टेटमेंट है। उनका अनुसरण कर नौजवान आज खद्दर और सूती कपड़ों की तरफ आकर्षित हो रहे हैं। हम विश्लेषण करें तो पाते हैं कि उनका समर्पित जीवन और ईमानदारी से उनकी वाणी का भी एक रिश्ता है। जब हम सिर्फ बोलते हैं तो उसका असर अलग होता है। किंतु अगर हम जो बोलते हैं उसमें कृतित्व भी शामिल हो तो बात का असर बढ़ जाता है। नरेंद्र मोदी अपनी असंदिग्ध ईमानदारी, राष्ट्रनिष्ठा और देशभक्ति के प्रतीक हैं। उनका समूचा जीवन राष्ट्र के लिए अर्पित है। ऐसा व्यक्ति जब कोई बात कहता है तो उसका असर बहुत ज्यादा होता है। क्योंकि आपकी वाणी को आपके जीवन का समर्थन है। सिर्फ देश की बात करना और देश के लिए जीना दो बातें हैं। मुझे लगता है जीवन और कर्म में एक रूप होने के नाते मोदी बाकी राजनेताओं से बहुत आगे निकल जाते हैं। क्योंकि उनकी राष्ट्रनिष्ठा पर सबको भरोसा है, इसलिए उनकी वाणी पर भी सहज विश्वास आता है। इस तरह उनकी वाणी 'भाषण' न होकर 'ह्दय से ह्दय के संवाद' में बदल जाती है। लोंगों को भरोसा है कि वे हमारी ही बात कर रहे हैं और हमारे लिए ही कर रहे हैं। मोदी ने अपनी साधारण पृष्ठभूमि की बात कभी छिपाई नहीं, जब भी उनकी साधारण स्थितियों का मजाक बनाया गया तो उसे भी उन्होंने एक सफल अभियान में बदल दिया। 'चाय पर चर्चा' का कार्यक्रम किस तरह बना, उसके संदर्भ हम सबके ध्यान में हैं। नरेंद्र मोदी सही मायने में सामान्य जनों में भरोसा जगाते हैं कि अगर संकल्प हों, इच्छाशक्ति हो तो व्यक्ति क्या नहीं कर सकता। यह एक बात लोगों को उनसे कनेक्ट करती है। अनेक राजनेता हैं, जो साधारण पृष्ठभूमि से आए हैं। किंतु उनका या तो अपनी जड़ों से उनका रिश्ता टूट गया है या वे उन विथिकाओं को याद नहीं करना चाहते। जबकि नरेंद्र मोदी अपनी जड़ों को नहीं भूलते वे हमेशा उसे याद करते हैं और खुद पर भरोसा करते हैं। यही कारण है उनका कनेक्ट सीधा जनता से बनता है। वे प्रधानमंत्री होकर भी अपने से नजर आते हैं। संचार, संवाद और पोजिशिनिंग की यह कला उनमें सहज है। बिना जतन के भी वे इन सबको साधते हैं और साधते रहेंगें क्योंकि आसमान पर होकर भी माटी की सोंधी महक उन्हें जड़ों से जोड़े रखती है। इसलिए उनका संवाद दिलों को जोड़ता है, देश को भी।

## संपादकीय

### खेलों में स्वर्णिम दिन

भारतीय खेलों के लिए बीता रविवार यानी 14 सितम्बर का दिन स्वर्णिम साबित हुआ। दिन की शुरूआत महिला बॉक्सर जेस्मीन लंबोरिया और मीनाक्षी हुड्डा के स्वर्णिम पंच से हुई। इसके बाद देश में खुशी का माहौल बनाने वाली खबर दुबई से आई। भारत ने वहां चल रहे क्रिकेट एशिया कप में अपनी परंपरागत प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान को फतह ही नहीं किया, बल्कि यों कहें कि एकदम से ध्वस्त कर दिया। वैसे तो पहलगाम घटना की वजह से देश में एक वर्ग पाकिस्तान से खेलने का विरोध कर रहा था। पर सरकार ने आईसीसी टूनार्मेंटों में खेलने की नीति की वजह से इसमें खेलना स्वीकार किया। पर भारतीय टीम ने एकतरफा अंदाज में जीत पाकर देश के क्रिकेटप्रेमियों को खुश कर दिया। वहीं जीत के बाद पाकिस्तानी खिलाड़ियों से हाथ मिलाने से इनकार करके अपना विरोध भी जता दिया। भारत और पाकिस्तान के इस मुकाबले के लिए स्टेडियम के खचाखच भरे होने से यह बात तो समझ में आती है कि इस मुकाबले को लेकर लोगों में अभी भी दीवानगी बनी हुई है। इस मुकाबले से एक बात यह भी साफ हो गई कि भारतीय टीम में भले ही रोहित शर्मा और विराट कोहली जैसे दिग्गज शामिल नहीं हैं। पर वे पाकिस्तान टीम से बहुत आगे निकल चुके हैं। यह सही है कि देश में क्रिकेट की दीवानगी के आगे सभी खेल बौने नजर आते हैं। पर बॉक्सिंग में आए दोहरे गोल्ड के भी बहुत मायने हैं। भारतीय बॉक्सिंग में पिछले काफी समय से सफलताएं आना कम हो गई थीं, लेकिन जेस्मीन और मीनाक्षी ने गोल्डन पंच लगाकर यह अहसास करा दिया है कि आने वाला समय उनका है। इस तरह के प्रदर्शनों से यह संकेत भी मिलता है कि भारत का ओलंपिक खेलों की बॉक्सिंग में गोल्ड मेडल से दूरी जल्द खत्म हो सकती है। यह दिन भारतीय बैडमिंटन के लिए भी अच्छा साबित हुआ। इसमें भारतीय खिलाड़ी कोई खिताब तो नहीं जीत सके। पर उनका प्रदर्शन भविष्य में दबदबे का भरोसा जताने वाला जरूर रहा। हांगकांग ओपन में भारत के लक्ष्य सेन ने पुरुष एकल में सात्विक साईराज-चिराग शेट्टी की जोड़ी ने पुरुष डबल्स के फाइनल तक चुनौती पेश की। लक्ष्य पिछले काफी समय से रंगत से बाहर चल रहे थे और डबल्स जोड़ी भी एक महीने पहले तक कुछ खास नहीं कर पा रही थी, लेकिन अब लगता है कि बैडमिंटन में भी भारतीय तूती बोलने वाली है। भारतीय खेलों में ऐसे खुशी के लम्हे एक साथ कम ही आते हैं।

## चिंतन-मनन

### प्रधानता आत्मा को

मनुष्य सामान्यतः जो बाह्य में देखता, सुनता, समझता है वह यथार्थ ज्ञान नहीं होता। किन्तु भ्रमवश उसी को यथार्थ ज्ञान मान लेता है। अवास्तविक ज्ञान को ही ज्ञान समझकर और उसके अनुसार अपने कार्य करने केकारण मनुष्य अपने मूल उद्देश्य सुख-शान्ति की दिशा में अग्रसर न होकर विपरीत दिशा में चल पड़ता है। यथार्थ ज्ञान की अनुभावक मनुष्य की अंतरात्मा ही है। शुद्ध, बुद्ध एवं स्वयं चेतन होने से उसको अज्ञान का अंधकार कभी नहीं व्यापसकता। परमात्मा का अंश होने से वह उसी तरह सत, चित एवं आनंद है, जिस प्रकार परमात्मा के समीप असत्य की उपस्थिति संभव नहीं है उसी प्रकार उसके अंश आत्मा में भी असत्य का प्रवेश सम्भव नहीं। मनुष्य की अंतरात्मा जो कुछ देखती, सुनती और समझती है, वही सत्य और यथार्थ ज्ञान है। अंतरात्मा से अनुशासित मनुष्य ही सत्य के दर्शन तथा यथार्थ ज्ञान की उपलब्धि कर सकता है। यथार्थ ज्ञान की उपलब्धि हो जाने पर मनुष्य के सारे शोक-संतापों का स्वतः समाधान हो जाता है। अंतरात्मा की बात सुनना और मानना ही उसका अनुशासन है। मनुष्य की अन्तरात्मा बोलती है, किन्तु उसकी वाणी सूक्ष्मातिसूक्ष्म होती है, जिसे बाह्य एवं स्थूल श्रवणों से नहीं सुना जा सकता। मनुष्य की अन्तरात्मा बोलती है किन्तु मौन विचार स्फुरण की भाषा में, जिसे मनुष्य अपनी कोलाहलपूर्ण मानसिक स्थिति में नहीं सुन सकता। अन्तरात्मा की वाणी सुनने के लिए जरूरी है मनुष्य का मानसिक कोलाहल बन्द हो। अन्तरात्मा का सान्निध्य मनुष्य को उसकी आवाज सुनने योग्य बना देता है। यों मनुष्य की अन्तरात्मा उसमें ओतप्रोत है, पर उसका सच्चा सान्निध्य पाने के लिए उसे जानना आवश्यक है। परिचयहीन निकटता भी एक दूरी होती है। रेलयात्रा में कन्धे से कन्धा मिलाये बैठे दो आदमी अपरिचित होने के कारण समीप होने पर भी एक-दूसरे से दूर होते हैं। अजनबी छोड़िए, जिन्दगी भर एक दूसरे केसाथ रहने पर भी आन्तरिक परिचय के अभाव में कई लोग एक-दूसरे से दूर ही रहते हैं। अन्तरात्मा जानने का एक ही उपाय है कि उसके विषय में सदा जिज्ञासु तथा सचेत रहा जाए। जो जिसके विषय में जितना अधिक जिज्ञासु एवं सचेत रहता है, वह उसकेविषय में उतनी ही गहरी खोज करता है और निश्चय ही उसे पा लेता है। आत्मा के विषय में अधिक से अधिकजिज्ञासु एवं सचेत रहिए। अपनी आत्मा से परिचित होंगे, उसकी वाणी सुनेंगे, सच्चा मार्ग निर्देशन पाएंगे, तो अज्ञान से मुक्त हों यथार्थ सुख-शान्ति के अधिकारी बनेंगे।

# निर्माण और शिल्पकला के देवता भगवान विश्वकर्मा

रमेश सर्राफ धमोरा

भगवान विश्वकर्मा को निर्माण एवं सृजन का देवता माना जाता है। हिंदू धर्म में इन्हें सृष्टि के दिव्य शिल्पकार, देवताओं के वास्तु विशेषज्ञ और पहले इंजीनियर के रूप में पूजा जाता है। विश्वकर्मा रचनात्मकता, तकनीकी कौशल और नवाचार के प्रतीक हैं। उनके सम्मान में भाद्रपद मास की सूर्यकन्या संक्रांति पर विश्वकर्मा जयंती मनाई जाती है। यह वह दिन है जब सूर्य सिंह राशि से कन्या राशि में प्रवेश करता है। इस दिन मजदूर, कारीगर, इंजीनियर, आर्किटेक्ट और उद्योगपति अपने औजारों और मशीनों की पूजा करते हैं। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार चार युगों में विश्वकर्मा जी ने कई नगर और भवनों का निर्माण किया था। विश्वकर्मा पूजा एक ऐसा त्योहार है जहां शिल्पकार, कारीगर, श्रमिक भगवान विश्वकर्मा का त्योंहार मनाते हैं। कहा जाता है कि भगवान ब्रह्मा के पुत्र विश्वकर्मा ने पूरे ब्रह्मांड का निर्माण किया था। विश्वकर्मा को देवताओं के महलों का वास्तुकार भी कहा जाता है। विश्वकर्मा दो शब्दों विश्व (संसार या ब्रह्मांड) और कर्म (निमार्ता) से मिलकर बना है। इसलिए विश्वकर्मा शब्द का अर्थ है दुनिया का निर्माण करने वाला। विश्वकर्मा शिल्पशास्त्र के आविष्कारक और सर्वश्रेठ ज्ञाता माने जाते हैं। जिन्होने विश्व के प्राचीनतम तकनीकी ग्रंथों की रचना की थी। इन ग्रंथों में न केवल भवन वास्तु विद्या, रथ आदि वाहनों के निर्माण बल्कि विभिन्न रत्नों के प्रभाव व उपयोग आदि का भी विवरण है। माना जाता है कि उन्होनें ही देवताओं के विमानों की रचना की थी। भगवान विश्वकर्मा की उत्पत्ति ऋग्वेद में हुई है। जिसमें उन्हें ब्रह्मांड के निमार्ता के रूप में वर्णित किया गया है। भगवान विष्णु और शिवलिंग की नाभि से उत्पन्न भगवान ब्रह्मा की अवधारणाएं विश्वकर्मण सूक्त पर आधारित हैं। विश्वकर्मा प्रकाश को वास्तुतंत्र का अपूर्व ग्रंथ माना जाता है। इसमें अनुपम वास्तुविद्या को गणितीय सूत्रों के आधार पर प्रमाणित किया गया है। ऐसा माना जाता है कि सभी पौराणिक संरचनाए भगवान विश्वकर्मा द्वारा निर्मित हैं। भगवान विश्वाकर्मा के जन्म को देवताओं और राक्षसों के बीच हुए समुद्र मंथन से माना जाता है। पौराणिक युग के अस्त्र और शस्त्र भगवान विश्वकर्मा द्वारा ही निर्मित हैं। विश्वकर्मा जयंती का औद्योगिक जगत और भारतीय कलाकारों, मजदूरो, इंजीनियर्स आदि के लिए खास महत्व है। विश्वकर्मा जयन्ती भारत के जम्मू कश्मीर, पंजाब, हिमाचल, हरयाणा, दिल्ली, राजस्थान, मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तराखंड, पश्चिम बंगाल, असम, ओडिशा, त्रिपुरा, बिहार और झारखंड जैसे राज्यों में मनायी जाती है। नेपाल में भी विश्वकर्मा पूजा को बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। विश्वकर्मा के पूजन और उनके बताये वास्तुशास्त्र के नियमों का अनुपालन कर बनवाये गये मकान और दुकान शुभ फल देने वाले माने जाते हैं। इनमें कोई वास्तुदोष नहीं माना जाता। औद्योगिक श्रमिकों द्वारा इस दिन बेहतर भविष्य, सुरक्षित कामकाजी परिस्थितियों और अपने-अपने क्षेत्र में सफलता के लिए प्रार्थना की जाती हैं। विश्वकर्मा जयन्ती के दिन देश के कई हिस्सों में काम बंद रखा जाता है और खूब पंतगबाजी की जाती है। विभिन्न प्रदेशों की सरकार विश्वकर्मा जयन्ती पर अपने कर्मचारियों को सावेतनिक अवकाश प्रदान करती है। यह त्योहार मुख्य रूप से दुकानों, कारखानों और उद्योगों द्वारा मनाया जाता है। इस अवसर पर, कारखानों और औद्योगिक क्षेत्रों के श्रमिक अपने औजारों की पूजा करते हैं। विश्वकर्मा वैदिक देवता के रूप में सर्वमान्य हैं। इनको गृहस्थ आश्रम के लिए आवश्यक सुविधाओं का निमार्ता और प्रवर्तक भी कहा गया है। अपने विशिष्ट ज्ञान-विज्ञान के कारण देवशिल्पी विश्वकर्मा मानव समुदाय ही नहीं वरन देवगणों द्वारा भी पूजित हैं। देवता, नर, असुर, यक्ष और गंधर्व सभी में उनके प्रति सम्मान का भाव है। भगवान विश्वकर्मा के पूजन- अर्चना किये बिना कोई भी तकनीकी कार्य शुभ नहीं माना जाता। इसी कारण विभिन्न कार्यो में प्रयुक्त होनेवाले औजारों, कल-कारखानों और विभिन्न उद्योगों में लगी मशीनों का पूजन विश्वकर्मा जयंती पर किया जाता है। विश्वकर्मा को सृष्टि के रचयिता ब्रह्माजी का वंशज माना गया है। ब्रह्माजी के पुत्र धर्म तथा धर्म के पुत्र वास्तु देव थे। जिन्हें शिल्पशास्त्र का आदि पुरुष माना जाता है। इन्हीं वास्तु देव की अंगिरसी नामक पत्नी से विश्वकर्मा का जन्म हुआ। अपने पिता के पद चिन्हों परचलते हुए विश्वकर्मा भी वास्तुकला के महान आचार्य बने। मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी और देवज्ञ इनके पुत्र हैं। इन पांचों पुत्रों को वास्तुशिल्प की अलग-अलग विधाओं में विशेषज्ञ मानाजाता है। पौराणिक साक्ष्यों के मुताबिक स्वर्ग लोक की इन्द्रपुरी, यमपुरी, वरुणपुरी, कुबेरपुरी, असुर राजरावण की स्वर्णनगरी लंका, भगवान श्रीकृष्णकी समुद्र नगरी द्वारिका और पांडवों की राजधानी हस्तिनापुर के निर्माण का श्रेय भी विश्वकर्मा को ही जाता है। पौराणिक कथाओं में इन उत्कृष्ट नगरियों के निर्माण के रोचक विवरण मिलते हैं। उड़ीसा का विश्व प्रसिद्ध जगन्नाथ मंदिर तो विश्वकर्मा के शिल्प कौशल का अप्रतिम उदाहरण माना जाता है। विष्णु पुराण में उल्लेख है कि जगन्नाथ मंदिर की अनुपम शिल्प रचना से खुश होकर भगवान विष्णु ने उन्हे शिल्पावतार के रूप में सम्मानित किया था। महाभारत में पांडव जहां रहते थे उस स्थान को इंद्रप्रस्थ के नाम से जाना जाता था। इसका निर्माण भी विश्ववकर्मा ने किया था। कौरव वंश के हस्तिनापुर और भगवान कृष्ण के द्वारका का निर्माण भी विश्वणकर्मा ने ही किया था। सतयुग का स्वर्ग लोक, त्रेतायुग की लंका, द्वापर की द्वारिका और कलयुग के हस्तिनापुर आदि के रचयिता विश्वकर्मा जी की पूजा अत्यन्त शुभकारी है। सृष्टि के प्रथम सूत्रधार, शिल्पकार और विश्व के पहले तकनीकी ग्रन्थ के रचयिता भगवान विश्वकर्मा ने देवताओं की रक्षा के लिये अस्त्र-शस्त्रों का निर्माण किया था। विष्णु को चक्र, शिव के त्रिशूल, इंद्र को वज्र, हनुमान को गदा और कुबेर को पुष्पक विमान विश्वकर्मा ने ही प्रदान किये थे। सीता स्वयंवर में जिस धनुष को श्रीराम ने तोड़ा था वह भी विश्वकर्मा के हाथों बना था। जिस रथ पर निर्भर रहकर श्रेष्ठ धनुर्धर अर्जुन संसार को भस्म करने की शक्ति रखते थे उसके निमार्ता विश्वकर्मा ही थे। पार्वती के विवाह के लिए जो मण्डप और वेदी बनाई गई थी वह भी विश्वकर्मा ने ही तैयार की थी। माना जाता है कि विश्वकर्मा ने ही लंका का निर्माण किया था। इसके पीछे कहानी है कि शिव ने माता पार्वती के लिए एक महल का निर्माण करने के लिए भगवान विश्वकर्मा को कहा तो विश्वकर्मा ने सोने का महल बना दिया। इस महल के पूजन के दौरान भगवानशिव ने राजा रावण को आंमत्रित किया। रावण महल को देखकर मंत्रमुग्ध हो गया और जब भगवानशिव ने उससे दक्षिणा में कुछ देने को कहा तथा उसने महल ही मांगलिया। भगवान शिव ने उसे महल देकर वापस पर्वतों पर चले गए। विश्वकर्मा ने देवताओं के लिए उड़ने वाले रथों का निर्माण किया था। विश्वकर्मा ने देवताओं के राजा इंद्र का हथियार वज्र का निर्माण किया था। वज्र को ऋषि दधीचि और अज्ञेयस्त्र की हड्डियों से बनाया गया है। भगवान विष्ण का सुदर्शन चक्र उनकी शक्तिशाली रचनाओं में से एक था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 17 सितंबर 2023 को प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना प्रारम्भ की थी। जिसमें अपने हाथों और औजारों से काम करने वाले कारीगरों और शिल्पकारों को संपूर्ण सहायता प्रदान की जाती है। इस योजना में 18 व्यवसायों में लगे कारीगर और शिल्पकार शामिल हैं, जैसे बढ़ई, नाव निमार्ता, कवचकार, लोहार, हथौड़ा और औजार बनाने वाला, ताला बनाने वाला, सुनार, कुम्हार, मूर्तिकार, पत्थर तोड़ने वाला, चर्मकार, जूते बनाने वाला, राजमिस्त्री, टोकरी,चटाई, झाडू बनाने वाला, बुनकर, गुड़िया और खिलौने बनाने वाला (पारंपरिक), नाई, माला बनाने वाला (मालाकार), धोबी, दर्जी और मछली पकड़ने के जाल बनाने वाले लोग शामिल हैं।

# बस्तर : आदिवासियों में जग रहा भरोसा

आभा मिश्रा

किसी भी राज्य में औद्योगिक विस्तार और निवेश को आकर्षित करने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण है राज्य में कानून और व्यवस्था की स्थिति और जनता में सरकार के प्रति भरोसा। छत्तीसगढ़ अपने जन्म के समय से ही नक्सलवादी हिंसा से जूझता रहा है।

खासतौर पर बस्तर का इलाका तो छत्तीसगढ़ बनने से पहले भी नक्सलवादियों का गढ़ रहा है। विकास की कमी और आम जनता पर नक्सलियों की पकड़ ने इस क्षेत्र को हमेशा पीछे रखा, लेकिन अब स्थितियां बदल रही हैं। आदिवासी बहुल इस प्रदेश में विष्णु देव साय के प्रदेश के पहले आदिवासी मुख्यमंत्री बनने का असर अब साफ दिखने लगा है। राज्य पुलिस ने केंद्रीय बलों के साथ मिलकर नक्सलियों पर काफी हद तक न केवल नकेल कसी है बल्कि आदिवासी होने के नाते मुख्यमंत्री साय में राज्य के लोगों का भरोसा भी बढ़ रहा है। यही वजह है कि बस्तर अब भय और पिछड़ेपन से निकलकर विकास और विश्वास के नये धरातल पर खड़ा है और शांति की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। कभी उपेक्षा और अभाव की पहचान से जूझने वाला यह क्षेत्र अब निवेश, अवसर और रोजगार का नया केंद्र बन रहा है। मुख्यमंत्री के प्रति प्रदेश के लोगों में बढ़ता भरोसा और केंद्र सरकार के नक्सल विरोधी अभियानों से न केवल इस क्षेत्र में उद्योग और शिक्षा से लेकर स्वास्थ्य, कृषि और पर्यटन तक हर क्षेत्र में बदलाव दिखने लगा है, बल्कि उम्मीद और विश्वास की नई किरण जगी है। पिछले 20 महीनों में मुख्यमंत्री बस्तर के 100 से अधिक इलाकों का दौरा कर चुके हैं। इन दौरों ने जनता में उनकी विसनीयता बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। क्षेत्र में नक्सलवाद पर नियंत्रण ने विकास कार्य की राह सुगम की है।

इसी का नतीजा है कि बस्तर संभाग के जगदलपुर में पहली बार 350 बेड का मल्टी स्पेशियलिटी हॉस्पिटल एवं मेडिकल कॉलेज स्थापित किया जा रहा है। इस पर 550 करोड़ रुपये की लागत आएगी और 200 लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार मिलेगा। इसी क्रम में जगदलपुर में नवभारत इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज द्वारा 85 करोड़ रुपये के निवेश से 200 बेड का मल्टी सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल और 33 करोड़ रुपये के निवेश से एक अन्य मल्टी स्पेशियलिटी हॉस्पिटल बनाया जा रहा है। यहां पर 7.65 करोड़ रुपये के निवेश से नमन क्लब एवं वेलनेस सेंटर भी शुरू होने जा रहा है। इन परियोजनाओं से बस्तर में आधुनिक स्वास्थ्य सुविधाओं एवं वेलनेस का विस्तार होगा और सैकड़ों युवाओं को रोजगार मिलेगा। यहां की जनता भी अब हिंसा से ऊब कर इस नये बदलाव को सहर्ष स्वीकार कर रही है। छत्तीसगढ़ कृषि प्रधान राज्य है और इसे ह्यधान का कटोराह्ण कहा जाता है, लेकिन यहां खाद्य प्रसंस्करण उद्योग का विस्तार जरूरत के अनुसार नहीं हो पाया।

मुख्यमंत्री ने इस कमी की भरपाई करने की योजना बनाई और इसी के तहत बीजापुर, नारायणपुर, कांकेर, बस्तर और कोण्डागांव जिलों में आधुनिक राइस मिल और फूड प्रोसेसिंग यूनिट्स की स्थापना की जा रही है। रोजगार के अवसर पैदा करने के उद्देश्य से छत्तीसगढ़ औद्योगिक विकास नीति 2024 के अंतर्गत 1000 करोड़ रुपये से अधिक निवेश करने वाली या 1000 से अधिक रोजगार सृजित करने वाली परियोजनाओं के लिए विशेष प्रोत्साहन का प्रावधान किया गया है।

इस नीति में औषधि निर्माण, कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण, वस्त्र उद्योग, आईटी एवं डिजिटल तकनीक, उन्नत इलेक्ट्रॉनिक्स, एयरोस्पेस व डिफेंस और ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर्स जैसे क्षेत्रों को प्राथमिकता दी गई है। पर्यटन को भी उद्योग का दर्जा प्रदान किया गया है। इसके तहत बस्तर में होटल, इको-टूरिज्म, वेलनेस सेंटर, एडवेंचर स्पोर्ट्स और खेल सुविधाओं जैसी परियोजनाओं पर 45 प्रतिशत तक सब्सिडी उपलब्ध कराई जाएगी। नई औद्योगिक नीति लागू होने के बाद अब तक प्रदेश सरकार के पास लगभग 6 लाख 65 हजार करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव आ चुके हैं। बस्तर में न केवल नक्सलियों की गतिविधियों को कमजोर किया गया है, बल्कि विकास

का माहौल भी तेजी से बन रहा है। पिछले 20 महीनों में 65 नये सुरक्षा कैम्प स्थापित किए गए हैं, जिनसे दुर्गम इलाकों में सुरक्षा का दायरा बढ़ा है और ग्रामीणों में आत्मविश्वास की भावना मजबूत हुई है। आत्मसमर्पण कर चुके नक्सलियों के लिए घोषित नई पुनर्वास नीति ने उन्हें समाज की मुख्यधारा में शामिल होने का बेहतर अवसर प्रदान किया है। नई नीति में वित्तीय सहायता बढ़ाई गई है और आवास व भूमि का स्पष्ट प्रावधान किया गया है।

नई नीति में आत्मसमर्पण करने वालों को तीन वर्षो तक प्रतिमाह 10,000 रुपये की आर्थिक सहायता, शहरी क्षेत्र में चार डिसमिल जमीन या ग्रामीण क्षेत्र में एक हेक्टेयर कृषि भूमि उपलब्ध कराने का फैसला विष्णु देव साय सरकार ने किया है। इसी तरह, मुख्यमंत्री कौशल विकास योजना के अंतर्गत अब तक 90,273 युवाओं को विभिन्न व्यवसायों का प्रशिक्षण दिया गया है। इनमें से 39,137 युवाओं को रोजगार मिला है।

## संक्षिप्त समाचार

### द. कोरिया में आव्रजन छापा मामले को लेकर अमेरिका ने जताया खेद

**सियोल, एजेंसी।** दक्षिण कोरियाई कर्मचारियों पर आव्रजन छापे के मामले में अमेरिका ने खेद जताया है। दक्षिण कोरिया ने कहा कि एक शीर्ष अमेरिकी राजनयिक ने रविवार को आव्रजन छापे पर खेद व्यक्त किया। इसमें 300 से अधिक दक्षिण कोरियाई कामगारों को हिरासत में लिया गया था। विदेश मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि उप विदेश मंत्री क्रिस्टोफर लैंडौ ने रविवार को प्रथम उप विदेश मंत्री पार्क यून-जू से मुलाकात की। इस दौरान अमेरिकी कार्रवाई पर गहरा खेद जताया।

### अमेरिका, दक्षिण कोरिया और जापान ने संयुक्त सैन्यअभ्यास शुरू किया

**वाशिंगटन, एजेंसी।** अमेरिका, दक्षिण कोरिया और जापान ने सोमवार को दक्षिण कोरियाई द्वीप के पास एक संयुक्त हवाई और नौसैनिक अभ्यास शुरू किया। उत्तर कोरिया ने इस सैन्यअभ्यास की निंदा की है और इसे शक्ति का लापरवाहीपूर्ण प्रदर्शन करार दिया है। दक्षिण कोरिया के रक्षा मंत्रालय ने कहा कि फ्रीडम एज नामक इस अभ्यास का उद्देश्य समुद्र, वायु और साइबरस्पेस में देशों की संयुक्त परिचालन क्षमताओं को मजबूत करना है और यह उत्तर कोरिया के बढ़ते परमाणु और मिसाइल खतरों का मुकाबला करने के लिए जरूरी है। अमेरिकी इंडो-पैसिफिक कमांड ने कहा कि इस अभ्यास में अमेरिकी मरीन और वायु सेना के हवाई उपकरण शामिल होंगे और इसमें उन्नत बैलिस्टिक-मिसाइल और वायु-रक्षा अभ्यास, चिकित्सा निकासी और समुद्री संचालन प्रशिक्षण शामिल होंगे। दक्षिण कोरिया के दक्षिणी जेजू द्वीप के पास यह अभ्यास शुक्रवार तक चलेगा।

### अंतरराष्ट्रीय समुदाय को इस्राइल को दंडित करे, दोहा में हमले के बाद पीएम अल थानी की अपील

**दोहा, एजेंसी।** कतर के प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री शेख मोहम्मद बिन अब्दुलरहमान अल थानी ने इस्राइल की निंदा की है। उन्होंने कहा कि दोहा पर किए गए हमले सरकार प्रायोजित आतंकवाद हैं। बता दें कि इस्राइली सेना की इस एयरस्ट्राइक में हमास के पांच सदस्यों समेत कतर का एक सुरक्षाकर्मी भी मारा गया थे। पीएम अल थानी ने कहा कि इस्राइल की कार्रवाई मध्यस्थता की प्रक्रिया पर सीधा हमला है और अंतरराष्ट्रीय समुदाय को इस्राइल को दंडित करना चाहिए। अल थानी के अलावा अरब व मुस्लिम देशों की बैठक में अरब लीग प्रमुख अहमद अबोल गैत ने भी इस्राइल को आड़े हाथ लिया। दूसरी तरफ इस्राइली प्रधानमंत्री नेतन्याहू ने हमले का बचाव किया और हमास नेताओं को निशाना बनाने की बात दोहराई।

### कड़ी सुरक्षा में अस्पताल भेजे गए पूर्व राष्ट्रपति बोल्सोनारो, बेटे कार्लोस ने नाराजगी जताई

**ब्रासीलिया, एजेंसी।** ब्राजील के पूर्व राष्ट्रपति जेयर बोल्सोनारो नजरबंद हैं। रविवार को उन्होंने ब्रासीलिया के एक अस्पताल में त्वचा संबंधी इलाज कराया। यह पहला मौका है जब वे घर में नजरबंदी से बाहर निकले। बता दें कि देश की सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें 27 साल की सजा सुनाई है। अदालत ने बोल्सोनारो को 2022 का आम चुनाव हारने के बाद तख़्तापलट की कोशिश का दोषी पाया है। न्यायाधीश अलेक्ज़ांद्रे डे मोराएस की अनुमति पर उन्हें इलाज के लिए अस्थायी रिहाई मिली। अस्पताल जाते समय पुलिस का कड़ा पहरा रहा, जिसे लेकर बेटे कार्लोस ने नाराजगी जताई। बोल्सोनारो के समर्थक एमनेस्टी नाउ के नारे लगाते दिखे। खबरों के मुताबिक उनके वकील सजा के खिलाफ अपील की तैयारी कर रहे हैं।

### सर्बिया में राजनीतिक संकट, विरोध और रैलियां जारी

**बेलग्रेड, एजेंसी।** सर्बिया इन दिनों गहरे राजनीतिक संकट से जूझ रहा है। शनिवार (स्थानीय समयानुसार) को एक ओर जहां सरकार विरोधी प्रदर्शन हुए, वहीं राष्ट्रपति अलेक्जेंडर वुसिक के समर्थकों ने भी रैलियां निकालीं। यह विरोध 10 महीने से जारी है, जिसकी शुरुआत उत्तरी शहर नोवी साद में रेलवे स्टेशन की छत गिरने से 16 लोगों की मौत के बाद हुई थी। छात्रों के नेतृत्व वाले आंदोलन ने शुरुआत में पीड़ितों के लिए न्याय और भ्रष्टाचार की जांच की मांग की थी। लेकिन अब यह राष्ट्रपति वुसिक के इस्तीफे की मांग तक पहुंच गया है। राष्ट्रपति वुसिक ने प्रदर्शनकारियों को आतंकवादी बताया और अपनी पार्टी की मदद से जवाबी रैलियां आयोजित कीं, ताकि सत्ता पर पकड़ बनाए रखी जा सके।

### मैक्सिको में उष्णकटिबंधीय तूफान मारियो का असर

**मैक्सिको सिटी, एजेंसी।** मैक्सिको के प्रशांत तट के पास उठे तूफान मारियो ने एक बार फिर उष्णकटिबंधीय तूफान का रूप ले लिया है। नेशनल हरीकेन सेंटर, मियामी की तरफ से जारी बयान के मुताबिक अभी तक किसी भी तटीय क्षेत्र के लिए चेतावनी जारी नहीं की गई है। पहली बार शुक्रवार को मारियो के मजबूती से आगे बढ़ने की खबर आई।

# अमेरिकी विदेश मंत्री के दौरे से पहले इजरायल ने गाजा को दहलाया, ऊंची इमारतों पर बरसाए बम, 32 की मौत

**गाजा पट्टी, एजेंसी।** अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो के पहुंचने से पहले इजरायल ने गाजा पर हमले तेज कर दिए हैं। इजरायली सेना ने रविवार को गाजा शहर में करीब 30 से ज्यादा ऊँची इमारतों पर ताबड़तोड़ बम बरसाए, जिसमें 32 लोगों की मौत हो गई है। गाजा सिटी के शिफा अस्पताल के अनुसार, मृतकों में 12 बच्चे भी शामिल हैं। इन हमलों की वजह से हजारों लोगों को पलायन करने पर मजबूर होना पड़ा है। इजरायली सेना ने इस हमले के कुछ ही घंटों के भीतर गाजा शहर में कई टावरों को खाली करने के आदेश भी जारी किए। फिलिस्तीनी चिकित्सा कर्मचारियों ने यह जानकारी देते हुए कहा कि फलस्तीनियों से गाजा शहर खाली करने की अपील की गई है। मामले से परिचित एक सूत्र के अनुसार, यह हमला इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू द्वारा बुलाई गई बैठक से पहले हुआ है, जिसमें इस बात पर चर्चा की जानी है कि जब इजरायली सेना गाजा शहर पर नियंत्रण करने के लिए जमीनी अभियान चलाएगी, तो गाजा में बंधक बनाए गए लोगों को नुकसान पहुंचाने से कैसे बचाया जाए। इजरायल पहले ही तह चुका है कि वह गाजा शहर पर कब्जा करके रहेगा, जहां लाखों फिलिस्तानी शरण लिए हुए हैं। इसी मकसद से इजरायल ने हाल के दिनों में गाजा शहर में हमले तेज कर दिए हैं, कई ऊंची इमारतों को नष्ट कर दिया है और हमास पर उनमें निगरानी

उपकरण लगाने का आरोप लगाया है। इसने निवासियों को शहर छोड़ने का आदेश दिया है, जो सबसे बड़े फलस्तीनी शहर पर कब्जा करने के उद्देश्य से एक हमले का हिस्सा है। इजराइल इसे हमास का आखिरी गढ़ कहता है जहां लाखों लोग अब भी अकाल की स्थिति से जूझ रहे हैं।

**हमलों के बाद धुएं का गुबार उठता दिखा :** स्वास्थ्य अधिकारियों ने बताया कि रातभर और शनिवार तड़के किए गए हमलों में से एक ने शेख रदवान के पड़ोस में स्थित एक घर को निशाना बनाया, जिसमें एक महिला और उसके तीन बच्चों समेत 10 लोगों के परिवार की मौत हो गई। तस्वीरों में हमलों के बाद धुएं का गुबार उठता दिखाई दे रहा है। इजराइली सेना ने हमलों के बारे में पूछे गए सवालों का तुरंत जवाब नहीं दिया है। सहायताकर्मियों के अनुसार, बढ़ती शत्रुता और शहर खाली करने के आह्वान के मद्देनजर, हाल के हफ्तों में शहर छोड़ने वालों की संख्या में तेजी से बढ़ोतरी हुई है।

**फिलिस्तीनियों से क्षेत्र खाली करने की अपील :** हालांकि, कई परिवार परिवहन और आवास संबंधी खर्च के कारण अब भी फंसे हुए हैं, जबकि कई लोग कई बार विस्थापित हो चुके हैं और अब दोबारा नहीं जाना चाहते, क्योंकि उन्हें भरोसा नहीं है कि इस इलाके में उनके लिए कहीं भी कोई सुरक्षित जगह है। सोशल मीडिया पर शनिवार को एक संदेश में इजराइली सेना ने गाजा शहर में बचे हुए फलस्तीनियों से 'तुरंत' वहां से निकलकर दक्षिण की ओर उस क्षेत्र में जाने को कहा जिसे वह मानवीय क्षेत्र कह रही है।

**ढाई लाख से ज्यादा लोग गाजा छोड़ चुके :** सेना के प्रवक्ता अविचाय अद्राई ने कहा कि ढाई लाख से अधिक लोग गाजा शहर छोड़ चुके हैं।गाजा में अस्थायी आश्रय स्थापित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र की अगुवाई में की गई एक पहल के अनुसार, पिछले सप्ताह तक 86,000 से अधिक टेंट और अन्य सामग्री की आपूर्ति के लिए अब भी गाजा में प्रवेश के लिए मंजूरी का इंतजार था। गाजा के स्वास्थ्य मंत्रालय ने शनिवार को कहा कि पिछले 24 घंटे में कुपोषण से संबंधित कारणों से बच्चों सहित सात लोगों की मौत हो गई, जिससे युद्ध शुरू होने के बाद से इस तरह मरने वालों की संख्या बढ़कर 420 हो गई है जिनमें 145 बच्चे शामिल हैं। गाजा में अब भी बंधक बनाए गए लोगों के परिवार इजरायल से हमले को रोकने की गुहार लगा रहे हैं, उन्हें डर है कि इससे उनके रिश्तेदार मारे जाएंगे। गाजा में अब भी 48 बंधक हैं, जिनमें से लगभग 20 के जीवित होने का अनुमान है। गाजा में युद्ध तब शुरू हुआ था जब सात अक्टूबर, 2023 को हमास के नेतृत्व वाले उग्रवादियों ने दक्षिणी इजराइल में धावा बोलकर 251 लोगों का अपहरण कर लिया था और लगभग 1,200 लोगों की हत्या कर दी थी।

# रूस में बढ़ रहा हिंदी का क्रेज, सिखाने के लिए नए केंद्र खोल रही सरकार

**मॉस्को, एजेंसी।** भारत में सबसे ज्यादा बोले जाने वाली भाषा अब रूस में भी लोगों के आकर्षण का केंद्र बन रही है। सोवियत संघ के पतन के तीन दशक के बाद रूस में हिंदी सीखने वाले इच्छुक व्यक्तियों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है। लोगों की बढ़ती दिलचस्पी के देखते हुए स्थानीय सरकार अब हिंदी भाषा को पढ़ाने वाले संस्थानों की संख्या को बढ़ा रही है। इस मामले पर बात करते हुए रूस के उच्च शिक्षा उपमंत्री कोंस्टेंटिन मोगिलेव्स्की ने कहा कि रूस चाहता है कि उनके ज्यादा से ज्यादा छात्र हिंदी सीखें।

रूसी समाचार एजेंसी ताश से बात करते हुए मोगिलेव्स्की ने कहा, भारत आज दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला देश है। ज्यादातर भारतीय आपसी समझ के लिए अंग्रेजी के बजाय हिंदी भाषा का प्रयोग करते हैं। हमें दोनों देशों के बीच में ज्यादा से ज्यादा संपर्क बढ़ाने के लिए हिंदी समेत अन्य भारतीय भाषाएं सीखने की जरूरत है। मोगिलेव्स्की के मुताबिक क्रेमलिन लगातार रूसी लोगों में हिंदी के प्रति बढ़ती रुचि से परिचित है। इसलिए इस भाषा को पढ़ाने वाले शैक्षणिक संस्थानों की संख्या को लगातार बढ़ाया जा रहा है। मोगिलेव्स्की ने कहा. आज हिंदी सीखने के लिए युवाओं के पास

पहले से कहीं ज्यादा अवसर हैं। अकेले में ही अकेले मॉस्को में ही एमजीआईएमओ स्कूल ऑफ इंटरनेशनल रिलेशंस, आरएसयूएच, मॉस्को स्टेट यूनिवर्सिटी का एशियाई और अफ्रीकी अध्ययन संस्थान और मॉस्को स्टेट लिंग्विस्टिक यूनिवर्सिटी हैं। इसके अलावा सेंट पीटर्सबर्ग स्टेट यूनिवर्सिटी, कज़ान फ़ेडरल यूनिवर्सिटी और अन्य यूनिवर्सिटिज में भी हिंदी पढ़ाई जाती है। हिंदी कोर्स में नामांकित छात्रों की संख्या बढ़ रही है,और समूहों की संख्या दो से तीन गुना ज्यादा है। आपको बता दें सोवियत संघ के समय मॉस्को में हिंदी को लेकर क्रेज अपने चरम पर था। स्थानीय सरकार भी हिंदी भाषा को आगे बढ़ाने का प्रयास करती थी। इतना ही नहीं सरकार ने कुछ प्रकाशकों को रूसी लेखकों की पुस्तकों के हिंदी अनुवाद निकालने के लिए भी प्रोत्साहित किया।

# ब्रिटेन में मिला ऑर्का की तरह 80 फीट लंबे समुद्री जीव का जीवाश्म

**लंदन, एजेंसी।** दो सौ करोड़ वर्ष से भी पहले महासागरों में एक महाकाय शिकारी तैरता था, जो अपने समय की ऑर्का व्हेल जैसा शीर्ष परभक्षी था। वैज्ञानिक बताते हैं कि इक्थियोटाइटन सेवेरेन्सिस नामक यह जीव लगभग 80 फीट लंबा था और अब तक खोजा गया सबसे बड़ा इक्थियोसॉर माना जा रहा है। ब्रिटेन में मिले इसके जबड़े के जीवाश्मों ने वैज्ञानिकों को उस काल की समुद्री दुनिया का नया दृष्टिकोण दिया है। इक्थियोसॉर समुद्र में रहने वाले विलुप्त सरीसृप (मरीन रेप्टाइल्स) लगभग 25 करोड़ साल पहले त्रैसिक काल से लेकर 9 करोड़ साल पहले क्रेटासियस काल तक अस्तित्व में रहे। इक्थियोसॉर समुद्र के प्राचीन व्हेल-जैसे सरीसृप थे, जो अपने समय के सबसे तेज और ताकतवर शिकारी थे। नेचुरल हिस्ट्री म्यूजियम लंदन के अनुसार 2018 में ब्रिटेन के जीवाश्म वैज्ञानिक डॉ. डीन लोमैक्स और उनकी टीम को पहली बार जबड़े की हड्डी का टुकड़ा मिला। वर्तमान की फिन व्हेल के बराबर यदि वर्तमान परिस्थितियों में तुलना करें तो इक्थियोटाइटन का आकार आज की फिन व्हेल के बराबर और ऑर्का व्हेल से कहीं अधिक रहा होगा। ऑर्का अधिकतम 30 फीट तक और फिन व्हेल लगभग 85 फीट तक होती है।

इस तुलना से स्पष्ट होता है कि त्रैसिक काल के समुद्रों में भी स्तनधारियों से पहले ही महाकाय जीव मौजूद थे जो शीर्ष शिकारी की भूमिका निभा रहे थे। वैज्ञानिक मानते हैं कि इक्थियोटाइटन सेवेरेन्सिस की खोज ने यह साबित कर दिया है कि त्रैसिक काल में समुद्र न केवल जीवन से भरे हुए थे बल्कि ऐसे शिकारी भी थे जो अपने समय की खाद्य श्रृंखला के शीर्ष पर खड़े थे। यह जीवाश्म न केवल वैज्ञानिक दृष्टि से असाधारण है बल्कि यह भी दिखाता है कि जीवन की विशालता और विविधता किस तरह धरती के हर कालखंड में नए रूपों में सामने आती रही। 2020 में खोजा जबड़े के दूसरा टुकड़ा इसकी विशालता देखकर इसे पहले डायनासोर की हड्डी समझ लिया गया था। लेकिन सूक्ष्म विश्लेषण के बाद इसे इक्थियोसॉर का हिस्सा बताया गया।

# अमेरिका में बड़े धमाके की साजिश नाकाम, यूटा में न्यूज चैनल की गाड़ी के नीचे मिला विस्फोटक, दो गिरफ्तार

**वाशिंगटन/यूटा, एजेंसी।** अमेरिका के यूटा राज्य में एक बड़े धमाके की साजिश नाकाम कर दी गई। फॉक्स 13 न्यूज चैनल की गाड़ी के नीचे एक विस्फोटक डिवाइस मिलने के बाद इलाके में अफरा-तफरी मच गई। यह डिवाइस असली थी और उसे जलाया भी गया था, लेकिन उसमें विस्फोट नहीं हो सका। इस मामले में 58 वर्षीय अदीब नसीर और 31 वर्षीय आदिल जस्टिस अहमद नसीर नाम के दो लोगों को गिरफ्तार किया गया है।

**एफबीआई ने संभाला मामला :** फॉक्स 13 की रिपोर्ट के मुताबिक, यह डिवाइस शुक्रवार को गाड़ी के नीचे मिली थी। जांच में पता चला कि यह डिवाइस बेहद खतरनाक थी और अगर यह सक्रिय हो जाती तो आसपास के लोगों की जान को बड़ा खतरा हो सकता था। इसके बाद फेडरल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन (एफबीआई) ने

मामला अपने हाथ में ले लिया क्योंकि यह राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा हुआ मामला माना गया। शनिवार को एफबीआई ने सॉल्ट लेक सिटी पुलिस और यूनिफाइड फायर बम स्क्वॉड के साथ मिलकर संदिग्धों के घर पर छापा मारा। छापेमारी के दौरान घर और आस-पड़ोस के कई घरों को खाली कराया गया ताकि किसी और विस्फोटक के खतरे को टाला जा सके।

**घर से मिले कई हथियार और ड्रग्स :** छापेमारी में एफबीआई को सिर्फ विस्फोटक ही नहीं, बल्कि कई अन्य खतरनाक चीजें भी मिलीं। इसमें हथियार और गोलियां, विस्फोटक से जुड़ा सामान, अवैध नशीले पदार्थ और उनके उपकरण, इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस शामिल है, जिनमें सबूत मिलने की संभावना है। पुलिस ने बताया कि दोनों आरोपियों पर पहले से ही प्रोटेक्टिव ऑर्डर लागू था, जिसके तहत उन्हें हथियार रखने की इजाजत नहीं थी। संदिग्धों के खिलाफ बड़े आरोप गिरफ्तार दोनों आरोपियों पर कई गंभीर आरोप लगाए गए हैं। इसमें आतंकवाद की धमकी, विनाशकारी हथियार रखने का आरोप, विस्फोटक उपकरण रखने का आरोप शामिल है। वहीं एफबीआई की जांच में यह भी सामने आया कि आरोपियों ने जांचकर्ताओं से कहा था कि घर में पाए गए दो नकली विनाशकारी हथियार असल में असली थे। न्यूज चैनल ने बढ़ाई सुरक्षा, इलाके में दहशत फॉक्स 13 न्यूज की स्टेशन मैनेजर लीओना वुड ने कहा, हम कानून प्रवर्तन एजेंसियों और अपनी रिस्क मैनेजमेंट टीम के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। हमारे कर्मचारियों की सुरक्षा हमारी सबसे बड़ी प्राथमिकता है। वहीं मैग्ना इलाके में इस घटना के बाद दहशत का माहौल है। पुलिस और एफबीआई ने जांच तेज कर दी है और यह पता लगाने की कोशिश की जा रही है कि इस साजिश के पीछे किसी बड़े नेटवर्क का हाथ है या नहीं। इस पूरे मामले ने अमेरिका में सुरक्षा एजेंसियों को सतर्क कर दिया है। यूटा में ही ट्रंप समर्थक नेता की हत्या यह घटना ऐसे समय में हुई है जब यूटा में ही एक और बड़ी घटना ने पूरे देश को हिला दिया। कंजर्वेटिव नेता और राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के करीबी सहयोगी चार्ली किर्क की बुधवार को यूटा वैली यूनिवर्सिटी में एक कार्यक्रम के दौरान गोली मारकर हत्या कर दी गई। इस वारदात के आरोपी टायलर रॉबिन्सन को गुरुवार की देर रात एफबीआई ने गिरफ्तार किया।

# परमाणु हथियार है और रहेगा, स्टेटस नहीं बदलने वाला, किम जोंग उन के देश ने कर दिया साफ

**प्योंगयाग, एजेंसी।** उत्तर कोरिया ने अपने परमाणु कार्यक्रम को लेकर बड़ा बयान दिया है। इसने कहा कि उसका परमाणु हथियारों वाला देश होने का दर्जा अब हमेशा के लिए है और इसे बदला नहीं जा सकता। सरकारी मीडिया ने बताया कि नॉर्थ कोरिया ने अमेरिका की उस मांग की कड़ी निंदा की, जिसमें उससे परमाणु निरस्त्रीकरण की बात कही गई थी। कोरियाई यूएन मिशन की ओर से कहा गया, हाल ही में इंटरनेशनल एटॉमिक एनर्जी एजेंसी (आईएईए) के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स की बैठक हुई। इस दौरान यूएस ने एक बार फिर हमारी परमाणु हथियारों की मौजूदगी को गैरकानूनी बताया। उसने परमाणु निरस्त्रीकरण की बात छेड़कर

गंभीर राजनीतिक उकसावे का काम किया। नॉर्थ कोरिया ने कहा कि उसका परमाणु हथियारों वाला देश होने का दर्जा स्थायी रूप से हमारे कानून में दर्ज हो चुका है। इसे कोई बदल नहीं सकता। यह भी कहा गया कि पिछले 30 साल से उसका आईएईए के साथ कोई आधिकारिक रिश्ता नहीं है। बयान के मुताबिक, आईएईए के पास न तो कानूनी और न ही नैतिक आधार है कि वो ऐसे परमाणु हथियारों वाले देश के आंतरिक मामलों में दखल दे, जो न्यूक्लियर नॉन-प्रोलिफरेशन ट्रीटी (एनपीटी) का हिस्सा नहीं है। मालूम हो कि 1994 में उत्तर कोरिया ने परमाणु निरीक्षण को लेकर विवाद के बाद आईएईए से नाता तोड़ लिया था। उसे लगता था कि अमेरिका इस एजेंसी का इस्तेमाल उसकी संप्रभुता पर हमला करने के लिए कर रहा है। उत्तर कोरिया ने साफ कर दिया कि वो अपने वर्तमान दर्जे को बदलने की किसी भी कोशिश का डटकर विरोध करेगा। साथ ही, एक जिम्मेदार परमाणु हथियारों वाला देश होने के नाते अपनी स्थिति बनाए रखेगा। यह बयान ऐसे समय आया है, जब पिछले हफ्ते नॉर्थ कोरिया के नेता किम जोंग उन ने वेपन रिसर्च फैलिसिटी का दौरा किया था।

# हम ड्रोन हमलों से निपटने में सक्षम नहीं, रूसी हमलों के बीच नाटो की चिंता

वारसॉ, एजेंसी। बीते सप्ताह पोलैंड के आसमान से रूसी ड्रोन गुजरने पर हड़कंप मच गया था। खबर है कि 19 ड्रोन पोलैंड के आसमान से गुजरे थे, जिनमें से 7 को ही उसकी ओर से इंटरसेप्ट किया जा सका। इसे उसकी एक असफलता के तौर पर देखा जा रहा है। हाल ही में नाटो देशों की एक मीटिंग हुई है, जिसमें ड्रोन हमलों से निपटने में अक्षमता की बात कही गई। गुरुवार को नाटो महासचिव मार्क रुट और यूरोपियन यूनियन के राजदूतों की मीटिंग हुई। इस मीटिंग में मौजूद कई प्रतिनिधियों ने कहा कि ड्रोन हमलों से निपटने के लिए नाटो के सदस्य देशों की तैयारी कमतर है। यह भी चिंता जाहिर की गई कि ड्रोन हमले बेहद कम लागत से होते हैं और उनके जवाब में बड़ी पूंजी खर्च की जा रही है। इस दौरान एक मजेदार तथ्य यह भी पेश किया गया कि रूस की ओर से करीब 11 हजार डॉलर के ड्रोन से ही हमले किए जाते हैं। उनके जवाब में हमारी तरफ से एयर-टू-एयर मार करने वाली 4 लाख डॉलर की मिसाइल चलाई जाती है। यह बेहद खर्चीला और जटिल है। इस संबंध में ऑस्ट्रिया के अखबार कुरियर डेली ने भी महत्वपूर्ण बात अपनी रिपोर्ट में कही है। अखबार लिखता है कि ड्रोन के जवाब में एफ-35 फाइटर जेट को तैनात किया गया। इसके अलावा इटली के सर्विलांस प्लेन लगे थे। यही नहीं जर्मन पैट्रियाट एयर डिफेंस सिस्टम भी लगा था। इसके बाद भी रूस की ओर से उड़े 19 ड्रोन्स में से 7 को ही इंटरसेप्ट किया जा सका। यही वजह है कि नाटो देशों ने ड्रोन हमलों से निपटने में अपनी असफलता मानी है। पोलैंड की अथॉरिटीज का भी कहना है कि रूस की ओर से भेजे गए ड्रोन्स में से 3 से 4 को ही मार गिराने में सफलता मिली। फिलहाल रूसी ड्रोन्स के कारण नाटो देशों में हलचल की स्थिति है। पौलैंड के आसमान से रूसी ड्रोन गुजरने को संप्रभुता को चैलेंज माना जा रहा है। यहां तक कि पोलैंड ने तो इसी मसले पर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की मीटिंग बुलाने की भी मांग की है। नाटो के अधिकारियों का कहना है कि हम हर ड्रोन की निगरानी या उसे गिराने के लिए हर बार एफ-35 जैसे फाइटर जेट भी तैनात नहीं कर सकते। फिलहाल इस पर बात हुई कि ड्रोन से निपटने के कारगर और कम खर्चीले तरीकों को विकसित किया जाए।

# न्यूयॉर्क की गवर्नर कैथी ने जोहरान ममदानी को मेयर चुनाव में दिया समर्थन, डेमोक्रेट्स में बढ़ी हलचल

**न्यूयॉर्क, एजेंसी।** न्यूयॉर्क सिटी के मेयर चुनाव में बड़ा मोड़ आ गया है। न्यूयॉर्क की गवर्नर कैथी होचुल ने रविवार को डेमोक्रेटिक उम्मीदवार जोहरान ममदानी को समर्थन देते हुए न्यूयॉर्कवासियों से उनके पक्ष में वोट करने की अपील की। यह ममदानी को मिला अब तक का सबसे अहम और बड़ा राजनीतिक समर्थन माना जा रहा है। कैती होचुल ने लिखा आर्टिकल गवर्नर कैथी होचुल ने एक समाचार पत्र के ओपिनियन सेक्शन में एक लेख लिखकर अपने समर्थन का एलान किया। उन्होंने कहा कि भले ही वह और जोहरान ममदानी कुछ मुद्दों पर असहमत हों, लेकिन दोनों का मकसद न्यूयॉर्क को रहने के लिए बेहतर और किफायती बनाना है। होचुल ने लिखा, हमारी बातचीत में मैंने ममदानी में एक ऐसे नेता को देखा जो चाहता है कि न्यूयॉर्क का हर बच्चा सुरक्षित माहौल में बड़ा हो और हर परिवार को अवसर मिले। वह शहर को किफायती बनाने के लिए समर्पित हैं और मैं इस लक्ष्य का पूरे उत्साह के साथ समर्थन करती हूं।

**ममदानी ने कहा- आंदोलन हुआ और मजबूत :** 33 वर्षीय जोहरान ममदानी, जो खुद को डेमोक्रेटिक सोशलिस्ट बताते हैं, ने इस समर्थन को अपनी राजनीतिक मुहिम के लिए बड़ी जीत बताया। ममदानी ने रविवार रात एक बयान जारी कर कहा, गवर्नर होचुल ने हमेशा न्यूयॉर्कवासियों की जेब में पैसे वापस लाने और शहर को सुरक्षित व मजबूत बनाने पर काम किया है। मैं उनके साथ मिलकर काम करने को उत्सुक हूं ताकि कोई भी परिवार सिर्फ खर्च के डर से न्यूयॉर्क छोड़ने को मजबूर न हो। उन्होंने यह भी कहा कि होचुल का समर्थन पार्टी को एकजुट करने और राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की नीतियों का विरोध करने की दिशा में अहम कदम है।

**मेयर चुनाव में चार दिग्गज आमने-सामने :** इस चुनाव में चार बड़े उम्मीदवार मैदान में हैं। जिसमें डेमोक्रेटिक पार्टी से जोहरान ममदानी, मौजूदा मेयर और स्वतंत्र उम्मीदवार एरिक एडम्स, पूर्व गवर्नर और स्वतंत्र उम्मीदवार एंड्रयू क्योमो, रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार करटिस स्लिवा शामिल हैं। डेमोक्रेटिक प्राइमरी में ममदानी ने क्योमो को बड़े अंतर से हराया था। इसके बाद क्योमो ने स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ने का एलान किया। मौजूदा मेयर एडम्स ने भी प्राइमरी छोड़कर स्वतंत्र उम्मीदवार के तौर पर चुनावी मैदान में उतरने का फैसला किया। रिपब्लिकन की तीखी आलोचना गवर्नर होचुल के इस फैसले पर रिपब्लिकन नेताओं ने कड़ी प्रतिक्रिया दी है। यूएस हाउस रिपब्लिकन लीडरशिप चेयरवुमन एलीस स्टेफानिक ने बयान जारी कर कहा, न्यूयॉर्कवासी मजबूत नेतृत्व चाहते हैं, लेकिन गवर्नर होचुल ऐसे व्यक्ति का समर्थन कर रही हैं जिसे लोग खतरनाक कम्युनिस्ट मानते हैं। यह शहर को और महंगा व असुरक्षित बना देगा और अपराधियों को बढ़ावा देगा। डेमोक्रेटिक पार्टी में हलचल जोहरान ममदानी की तेजी से बढ़ती लोकप्रियता ने डेमोक्रेटिक पार्टी के भीतर खलबली मचा दी है। कुछ वरिष्ठ नेता उनकी नीतियों और बयानों से पहले असहमत थे, लेकिन अब होचुल का समर्थन यह संकेत देता है कि पार्टी धीरे-धीरे उनके पीछे एकजुट हो रही है। न्यूयॉर्क सिटी मेयर का चुनाव इस साल नवंबर में होगा। राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि होचुल के समर्थन के बाद ममदानी की स्थिति मजबूत जरूर हुई है, लेकिन क्योमो, एडम्स और स्लिवा का मुकाबला करना उनके लिए आसान नहीं होगा।

# स्किन में निखार और कसाव लाता है विटामिन-सी

## आहार में इन चीजों को करें शामिल

विटामिन-सी त्वचा के लिए बहुत खास होता है। त्वचा की रंगत निखारने से लेकर दाग-धब्बों से छुटकारा दिलवाने और यहां तक कि चोट आदि के निशान को भी हल्का करने में यह काफी उपयोगी साबित होता है।

विटामिन-सी युक्त खाद्य पदार्थों का सेवन करना इस विटामिन के फायदे हासिल करने का सबसे आसान और प्रभावी तरीका है। संतरा, किवी, टमाटर, हरा सेब, नीबू और केला आदि विटामिन-सी के अच्छे स्रोत हैं। इसके अलावा इस विटामिन को अपने ब्यूटी रूटीन में शामिल करने के लिए आप विटामिन-सी युक्त क्रीम का इस्तेमाल कर सकती हैं। एल-एस्कॉर्बिक एसिड के रूप में यह स्किन केयर प्रोडक्ट्स में पाया जाता है। इसके अलावा बाजार में विटामिन-सी वाला सीरम, पाउडर, लोशन, क्रीम और मास्क भी उपलब्ध है। विशेषज्ञ भी त्वचा से जुड़ी परेशानियों के निदान के लिए इसे इस्तेमाल करने की सलाह देते हैं। शुरुआत में हमेशा कम मात्रा में विटामिन-सी युक्त प्रोडक्ट्स का त्वचा पर इस्तेमाल करें, क्योंकि इस विटामिन को ग्रहण करने की त्वचा की क्षमता में धीरे-धीरे इजाफा होता है। विटामिन-सी का इस्तेमाल त्वचा पर सुबह या रात में करें। दोपहर में इसका इस्तेमाल करने से बचें, क्योंकि विटामिन-सी त्वचा को सूरज की किरणों के प्रति ज्यादा संवेदनशील बना देता है।

### कुछ सावधानी भी जरूरी

- इस विटामिन के इस्तेमाल के बाद कुछ लोगों की त्वचा पर दाने निकल आते हैं। अगर आपके साथ भी ऐसा होता है तो त्वचा रोग विशेषज्ञ की सलाह लें।
- विटामिन-सी के इस्तेमाल से त्वचा थोड़ी संवेदनशील बन जाती है। बेहतर होगा कि आप पैच टेस्ट (त्वचा के थोड़े हिस्से में लगाकर देखने) लेने के बाद ही चेहरे पर इसका इस्तेमाल करें। अगर चेहरे पर जलन एवं खुजली हो या लाल धब्बे निकल आएं तो इस्तेमाल बंद कर दें ।
- क्रीम को ठंडी जगह में सूरज की रोशनी से दूर रखें।

### विटामिन सी के फायदे

- एक्ने (कील-मुहांसे) की समस्या से आप भी कभी-न-कभी जूझी होंगी। एक्ने तो देर-सवेर ठीक हो जाते हैं, पर चेहरे पर निशान छोड़ जाते हैं। विटामिन-सी त्वचा की नई कोशिकाओं की निर्माण प्रक्रिया को बढ़ावा देकर इन निशानों को हल्का करने में मदद करती है। विटामिन-सी मेलानिन की निर्माण प्रक्रिया को बाधित कर त्वचा के निशान जल्द ठीक करने में मददगार साबित होती है।
- पिग्मेंटेशन यानी झाइयां होने की ढेर सारी वजहें हैं। पर, विटामिन-सी लोशन का इनके ऊपर नियमित इस्तेमाल कर आप इन झाइयों से छुटकारा पा सकती हैं। विटामिन-सी भले ही झाइयों को पूरी तरह से खत्म न करे, पर यह उन्हें बहुत ही ज्यादा हल्का तो जरूर कर देगा।
- विटामिन-सी के नियमित उपयोग से त्वचा पर अनूठी चमक आती है। यह दाग-धब्बों को हटाकर और रंगत को निखारकर त्वचा को चमकदार बनाता है। विटामिन-सी में एंटीऑक्सिडेंट्स प्रचुर मात्रा में होता है। यह कॉलेजन का निर्माण बढ़ाकर त्वचा को लचीला बनाता है। इसके इस्तेमाल से त्वचा पर झुर्रियां और बारीक रेखाएं भी कम दिखती हैं। विटामिन-सी सूरज की हानिकारक अल्ट्रावायलट किरणों से भी त्वचा की रक्षा करता है और सुरक्षा परत बनाता है।

# Workout का विकल्प नहीं हैं विटामिन सप्लीमेंट

थकान महसूस होने या कमजोरी लगने पर लोग अक्सर हेल्थ सप्लिमेंट्स ले लेते हैं। टीवी पर हेल्थ सप्लीमेंट्स के एड भरे पड़े हैं। मगर डॉक्टर अपना खानपान सुधारने या वर्कआउट करने की सलाह देते हैं। आपको लगता है कि जो विटामिन या मिनरल हम खा नहीं पाते हैं, उन्हें गोलियों के रूप में लेने में हर्ज ही क्या है और सबसे ज्यादा नुकसान करती है यह सोच कि फायदा नहीं करेगा तो कोई नुकसान भी नहीं होगा। हाल ही में हुए एक रिसर्च में आपकी इस परेशानी का हल निकालने की कोशिश की गई है।

डॉक्टर एरिन मिकोस ने बताया कि गोलियों के रूप में लिए जाने वाले ज्यादातर विटामिन न तो असमय मृत्यु के खतरों को कम करते हैं और न ही दिल की सेहत को बेहतर बनाते हैं। यह अध्ययन पिछले महीने में प्रकाशित किया गया था। यह अध्ययन दरअसल विटामिन, मिनरल और अन्य सप्लिमेंट्स का हमारे दिल की सेहत पर पड़ने वाले असर पर किया गया था।

शोधकर्ताओं का कहना है कि विटामिन सप्लीमेंट्स का दिल की सेहत या उम्र में इजाफा (lifespan) करने में कोई योगदान नहीं होता है। समझा जा रहा है कि इस शोध का अरबों डॉलर की सप्लीमेंट इंडस्ट्री पर व्यापक असर होगा। इस शोध पत्र में दिल की सेहत पर खानपान और सप्लिमेंट्स के प्रभाव का अध्ययन अलग-अलग रैंडम क्लीनिकल ट्रायल के जरिए किया गया। उनका कहना है कि इस रिसर्च के नतीजों से उस सोच पर मुहर लगी है, जिसके मुताबिक अच्छी डाइट का कोई विकल्प नहीं है। जब भी कोई अहम तत्व खाने के जरिए और सप्लिमेंट के रूप में लेने के बीच तुलना की गई है, तो खाने के जरिए लिए जाने वाले तत्वों ने हमेशा बाजी मारी है। लिंडर कहते हैं भोजन हमारे शरीर की विटामिन और मिनरल दोनों की जरूरतों को पूरा करते हैं, क्योंकि हमारी बॉडी उन्हें अवशोषित करने के लिए ही बनाई गई है।विशेषज्ञों का कहना है कि बिना स्पष्ट निर्देशों के लोग न सिर्फ अपने पैसे बरबाद करते हैं, बल्कि कई मामले ऐसे भी हुए हैं जब ये सप्लिमेंट्स सेहत पर भी भारी पड़े हैं। इस अध्ययन में यह तो कहा गया है कि ओमेगा 3 फैटी एसिड के सप्लिमेंट्स हार्ट अटैक रोकने में मदद करते हैं। दूसरी तरफ कैल्शियम और विटामिन डी साथ लेने से स्ट्रोक के बढ़ते खतरों के लिए सतर्क भी किया गया है। विशेषज्ञों का कहना कि दिल की सेहत दुरुस्त रखने के लिए ताजे फल, सब्जियां और साबुत अनाज खाने चाहिए। इसके साथ ही स्मोकिंग से दूर रहना चाहिए और रेगुलर एक्सरसाइज करना चाहिए।

# रेसिपी

## फिरनी

### सामग्री

- दूध: 1 लीटर
- चावल: 100 ग्राम
- चीनी: 200 ग्राम
- इलायची पावडर: 2 चम्मच
- मलाई: 2 चम्मच
- मिक्स ड्राई फ्रूट: 1/2 कप
- थोड़ी सी केसर

### विधि

चावल को धोकर 1 कप पानी में 30 मिनट के लिए भिगोकर रखें। फिर इसका पानी निथारें और चावल को दरदरा पीस लें। एक गहरा पैन लें, उसमें दूध उबालें। जब दूध उबलने लगे, तब उसमें चावल का पेस्ट और चीनी डालें। ऊपर से इलायची पाउडर डालें। इसे 10-15 मिनट तक धीमी आंच पर पकने दें। इसे बीच-बीच में चलाती रहें, जिससे यह आपस में चिपके नहीं। इसे तब तक पकाएं जब तक कि यह गाढ़ा न हो जाए। केसर को 1 चम्मच दूध में घोल लें। केसर के घोल को फिरनी में डालें। इसे सूखे मेवों से गार्निश करें। अब आप फिरनी को फ्रिज में ठंडा होने के लिए रख दें और सर्व करें।

## दम आलू

### सामग्री

- आलू 4
- नमक: स्वाद के अनुसार
- घी या तेल
- बड़ा प्याज 1
- टमाटर का गूदा: 4 चम्मच
- गर्म पानी: 4 चम्मच

### विधि

कश्मीरी दम आलू बनाने के लिए सबसे पहले आलुओं को छील लें, इसके बाद उसमें कांटे से छोटे-छोटे छेद कर दें। इसके बाद पानी में हल्का सा नमक डालकर इन्हें दो घंटे तक रख दें। दो घंटे बाद इन्हें निकालकर डीप फ्राई कर लें। इसके बाद दूसरे पैन में घी गर्म करें उसमें प्याज और सभी मसाले लौंग, तेजपत्ता, काली मिर्च के दाने, हरी इलाइची, भूरी इलाइची, टुकड़ा दालचीनी की लकड़ी अच्छी तरह भूनें। इसके बाद थोड़ा बड़ा कटा हुआ प्याज लहसुन की कलियां, चम्मच अदरक, काली मिर्च के दाने,1 चम्मच खसखस, 1चम्मच धनिया बीज, जीरा, सूखी लाल मिर्च, हल्दी पाउडर, एक चुटकी जायफल का मिक्सर बनाकर अच्छे से मसाले में मिलाकर भून लें। अब इसमें बारीक कटे हुए टमाटर, दही और नमक को अच्छी तरह मिलाएं। इसके बाद इसमें फ्राई आलू मिलाकर अच्छे से पकने दें। गर्म मसाला और बारीक धनिया डालकर परोसें।

# टाईम पास

## आज का राशिफल

**मेष** (चू चे चो ला ली लू ले लो आ): जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा। व्यापार व नौकरी में स्थिति अच्छी रहेगी। शुभ कार्यों का लाभदायक परिणाम होगा। कामकाज की अधिकता रहेगी। व्यवसायिक अभ्युदय भी होगा और प्रसन्नताएं भी बढ़ेंगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अर्थपक्ष मजबूत रहेगा। धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। शुभांक-7-8-9

**वृष** (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो): प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। अवरुद्ध कार्य संपन्न हो जाएंगे। कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा। मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। श्रेष्ठजनों की सहानुभूतियां होगी। यात्रा प्रवास का सार्थक परिणाम मिलेगा। आनन्ददायक वातावरण बनेगा। शुभांक-2-7-9

**मिथुन** (का की कू घ ङ छ के को हा): कारोबारी यात्रा को फिलहाल टालें। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। अपने हितैषी समझे जाने वाले ही पीठ पीछे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। होश में रहकर कार्य करें। कामकाज सीमित तौर पर ही बन पाएंगे। स्वास्थ्य का पाया भी कमजोर बना रहेगा। कुछ आर्थिक संकोच पैदा हो सकते है। शुभांक-3-7-9

**कर्क** (ही हू हे हो डा डी डू डे डो): राजकीय कार्यों से लाभ। पैतृक सम्पत्ति से लाभ। कारोबारी यात्रा को फिलहाल टालें। शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। श्रम साध्य कार्यों में सफल होंगे। कुछ महत्वपूर्ण कार्य बनाने के लिए भाग-दौड़ रहेगी। शुभांक-4-8-9

**सिंह** (मा मी मू मे मो टा टी टू टे): व्यापार में स्थिति नरम रहेगी। शत्रुभय, चिंता, संतान को कष्ट, अपव्यय के कारण बनेंगे। भ्रातृपक्ष में विरोध होने की संभावना है। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। स्वास्थ्य का पाया भी कमजोर बना रहेगा। कामकाज सीमित तौर पर ही बन पाएंगे। सिर्फ आश्वासनों से संतोष करना पड़ेगा। शुभांक-3-6-8

**कन्या** (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो): मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। यात्रा का दूरगामी परिणाम मिल जाएगा। कामकाज में आ रही बाधा को दूर कर लेंगे। सुविधा और समन्वय बना रहने से कामकाज में प्रगति बनेगी। शुभांक-4-5-9

**तुला** (रा री रु रे रो ता ती तू ते): यात्रा प्रवास का सार्थक परिणाम मिलेगा। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। नवीन जिम्मेदारी बढ़ने के आसार रहेंगे। परिवारजनों का सहयोग बना रहेगा। मेहमानों का आगमन होगा। शुभांक-3-7-9

**वृश्चिक** (तो ना नी नू ने नो य यी यू): मेहमानों का आगमन होगा। राजकीय कार्यों से लाभ। पैतृक सम्पत्ति से लाभ। पुरानी गलती का पश्चाताप होगा। विद्यार्थियों को लाभ। दाम्पत्य जीवन सुखद रहेगा। ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। धीरे-धीरे लाभ का मार्ग प्रशस्त होगा उचित समय का इन्तजार करें। शुभांक-2-7-8

**धनु** (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे): आय के अच्छे योग बनेंगे। संतान की उन्नति के योग हैं। स्त्री-संतान पक्ष का सहयोग मिलेगा। आत्मचिंतन करें। पुराने मित्र से मिलन होगा। स्वविवेक से कार्य करें। शत्रुपक्ष से सावधान रहें। भाई-बहनों का प्रेम बढ़ेगा। आत्मविश्वास बढ़ेगा। अर्थपक्ष मजबूत रहेगा। इच्छित कार्य सफल होंगे। शुभांक-3-6-9

**मकर** (भे जा जी खी खू खे खो गा गी): 'आगे-आगे गौरख जागे' वाली कहावत चरितार्थ होगी। मेहमानों का आगमन होगा। परिवारजन का सहयोग व समन्वय काम को बनाना आसान करेगा। अपना काम दूसरों के सहयोग से पूरा होगा। कारोबारी काम में नवीन तालमेल और समन्वय बन जाएगा। मीठे बोलने वालों से संभल कर रहें। शुभांक-4-6-8

**कुंभ** (गू गे गो सा सी सू से सो दा): पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। शुभ कार्यों में व्यय होगा। जीवन साथी अथवा यार-दोस्तों के साथ साझे में किए जा रहे काम में लाभ मिलेगा। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभांक-1-3-7

**मीन** (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची): व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। विशिष्ट जनों से मेल-मुलाकात होगी। लाभ में आशातीत वृद्धि तय है मगर नकारात्मक रुख न अपनाएं। आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। स्वास्थ्य मध्यम होगा। व्यापार में स्थिति नरम रहेगी। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। शुभांक-1-5-9

## काकुरो पहेली - 1840

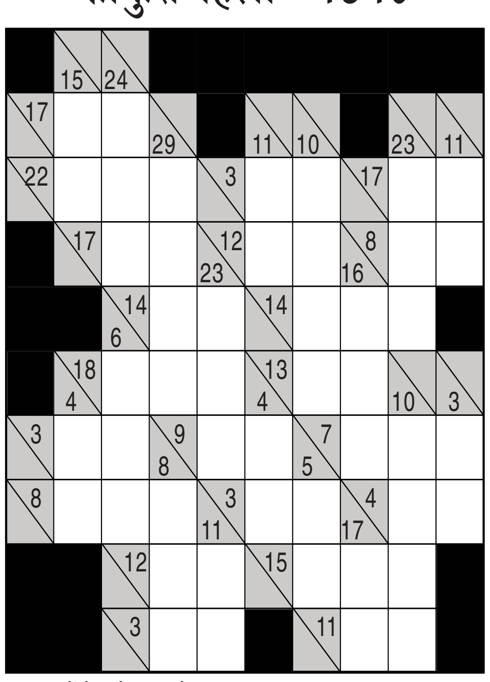

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए,किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरण:

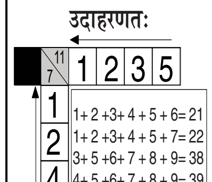


### काकुरो - 1839 का हल

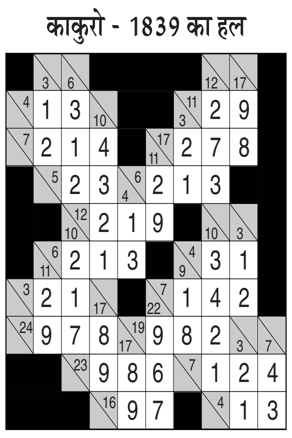

## हंसी के फूव्वारें

दारोगा (रमेश से)- जब तुम्हारे यहां चोरी हुई, उस समय कितना बजा था?

रमेश (दारोगा से)- हम पर चार लट्ठ और हमारे भाई पर दो लट्ठ बजे थे.

दारोगा (रमेश से)- अरे मै घड़ी का पूछ रहा हूं उसमे कितना बजा था?

रमेश (दारोगा से)- साहब घड़ी तो एक ही लट्ठ बजने पर टूट गई.

□ □ □

महेश (संजय से) - मुझे खुशी इस बात की है कि मेरा बॉस एक डॉक्टर है.

संजय (महेश से) - ऐसी क्या खासियत है आपके बॉस में?

महेश (संजय से) - मैं थोड़ा भी बीमार पड़ता हूं, तो वह मुझे फौरन बेड रेस्ट की सलाह दे देता है.

□ □ □

दो मूर्ख वार्तालाप कर रहे थे.

पहला बोला- 'यदि वृक्ष पर हाथी चढ़ जाए और वहां से नीचे उतरना चाहे तो उसे क्या करना चाहिए?'

दूसरा मूर्ख बोला- 'हाथी को वृक्ष की टहनी पर बैठकर पतझड़ के आने की प्रतीक्षा करनी चाहिए.'

□ □ □

राम (मोहन से)- क्या कर रहे हो?

मोहन- दोस्त को पत्र लिख रहा हूं.

राम- लेकिन तुम्हें लिखना नहीं आता.

मोहन (राम से)- तो मेरे दोस्त को कौन सा पढ़ना आता है.

## फिल्म वर्ग पहेली- 1840

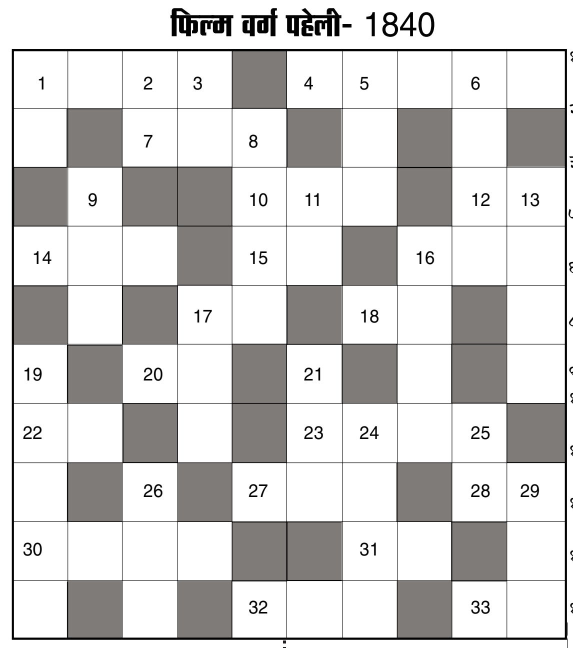

### बायें से दायें:-

१. 'इश्क कभी करियो ना' गीत वाली फिल्म-४
४. 'मैं कहीं कवि न बन जाऊं' गीत वाली धर्मेन्द्र, वैजयंती की फिल्म-२,१,२
७. राहुलराय, दीपक तिजोरी, पूजा भट्ट की फिल्म-३
१०. 'वो लम्हे वो बातें' गीत वाली इमरान हाशमी, उदिता, शमिता की फिल्म-३
१२. 'अमूल स्टार वॉइस ऑफ इंडिया' का एंकर कौन है?-२
१४. 'मोरनी रे मोरनी मैं' गीत वाली धर्मेन्द्र, हेमा मालिनी की फिल्म-३
१५. अमिताभ, जैकी, कैटरीना, सीमा की 'नचना तेरे नाल' गीत वाली फिल्म-२
१६. 'आँखों में तू होठों में तू' गीत वाली जिमी शेरगिल, शेनाज की फिल्म-३
१७. नसीर, अतुल अग्निहोत्री की 'बंद होठों से जो' गीत वाली फिल्म-२
१८. 'पहली बारिश मैं और' गीत वाली कुमार गौरव, माधुरी की फिल्म-२
२०. संजय, शरद, मनीषा की 'ओ गोरी तू चली' गीत वाली फिल्म-२
२२. 'दिल विच तेरा ही खयाल' गीत वाली अमिताभ, अक्षय की फिल्म-२
२३. संजयदत्त, माधुरी, की 'टपका रे टपका' गीत वाली फिल्म-४
२७. संजीवकुमार, जया की फिल्म-३
२८. सलमान खान, स्नेहा की 'सुन जरा सोनिये सुन जरा' गीतवाली फिल्म-२
३०. 'लड़के ने लड़की को देखा' गीत वाली गोविंदा, जूही की फिल्म-४
३१. 'चल प्रेमनगर जाएगा बतला ओ' गीत वाली फिल्म-२
३२. अक्षयकुमार, सुनील शेट्टी, करिश्मा, सोनाली की फिल्म-३
३३. नाना, अजय, फरदीन, रेखा, उर्मिला की फिल्म-२

### ऊपर से नीचे:-

१. 'सुहानी चाँदनी रातें' गीत वाली संजीव, शशि, विद्यासिन्हा, बिंदिया की फिल्म-२
२. रितिक रोशन, करिश्मा कपूर की 'मैं नाचूं बिन पायल' गीत वाली फिल्म-२
३. 'बड़े नाजुक दौर से' गीत वाली अभिषेक, भूमिका चावला की फिल्म-२
५. विनोद मेहरा, डैनी, मौसमी की 'ये कैसी लगी अगन' गीत वाली फिल्म-३
६. 'ये कैसा गम सजना' गीत वाली सुनीलदत्त, फिरोज, शर्मिला की फिल्म-२,२
८. अमिताभ, परवीन की 'देख सकता हूँ मैं कुछ भी होते हुए' गीत वाली फिल्म-४
९. देव आनंद, उषा किरण की फिल्म-३
११. अमिताभ, रजनीकांत, गोविंदा, किमी की 'बम चिकी चिकी' गीत वाली फिल्म-२
१३. 'हम से तुम दोस्ती कर' गीत वाली सनी देओल, डिम्पल की फिल्म-४
१६. संजीवकुमार, सुलक्षणा की 'सुबह और शाम काम ही' गीत वाली फिल्म-४
१७. 'जो तुमको हो पसंद' गीत वाली राजेश खन्ना, फिरोज, शर्मिला की फिल्म-३
१९. नवीन निश्चल, रेखा की 'कान में झुमका चाल में ठुमका' गीत वाली फिल्म-३,२
२१. 'ओ गुड़िया ओ बहना' गीत वाली संजयदत्त, फरहा की फिल्म-३
२४. अनिल धवन, रेहाना की 'दिल बेचैन रहा तुम बिन' गीत वाली फिल्म-२,२
२५. 'इस टूटे दिल की पीर' गीत वाली फिल्म-२
२६. ऋषिकपूर, शाहरूख, दिव्या की फिल्म-३
२९. अक्षय, सैफ, रवीना, सोनाली की फिल्म-३

### फिल्म वर्ग पहेली- 1839

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उ | म्मी | द | ■ | छ | लि | या | ■ | मे | ला |
| त्स | ■ | डॉ | न | ■ | बा | र | द | री | ■ |
| व | च | न | ■ | वा | स | ना | ■ | जं | ग |
| ■ | र | ■ | सौ | दा | ■ | ■ | आ | ग | ■ |
| आ | स | र | ■ | ■ | पा | की | जा | ■ | ग |
| र | ■ | जा | नू | ■ | ल | ■ | द | र | र |
| ध | र्मा | ■ | त | र | की | ब | ■ | ■ | म |
| ना | ■ | जी | न | त | ■ | ना | च | ■ | म |
| ■ | ■ | ने | ■ | न | ज | र | ■ | प्या | सा |
| खा | न | दो | स्त | ■ | ■ | स | नी | ■ | ला |

## सूडोकु -1840

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | 2 | | | | 1 | | |
| | | | | 2 | 5 | 7 | 3 | |
| | 9 | 4 | | 6 | 7 | | | 2 |
| | 5 | | 4 | | 3 | | | 9 |
| | 8 | | | 9 | | | 7 | |
| 1 | | | 6 | | 8 | | 2 | |
| 6 | | | 7 | 4 | | 9 | 5 | |
| | 4 | 5 | 8 | 3 | | | | |
| | | 8 | | | | 6 | | |

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते .
- पहेली का केवल एक ही हल है.

### सूडोकु -1839 का हल

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 9 | 1 | 6 | 2 | 3 | 7 | 4 | 5 | 8 |
| 8 | 2 | 3 | 4 | 5 | 9 | 1 | 7 | 6 |
| 4 | 5 | 7 | 1 | 6 | 8 | 3 | 9 | 2 |
| 5 | 6 | 8 | 7 | 1 | 2 | 9 | 3 | 4 |
| 1 | 7 | 4 | 9 | 8 | 3 | 2 | 6 | 5 |
| 2 | 3 | 9 | 5 | 4 | 6 | 8 | 1 | 7 |
| 7 | 4 | 1 | 8 | 9 | 5 | 6 | 2 | 3 |
| 3 | 8 | 5 | 6 | 2 | 1 | 7 | 4 | 9 |
| 6 | 9 | 2 | 3 | 7 | 4 | 5 | 8 | 1 |

## शब्द पहेली - 1840

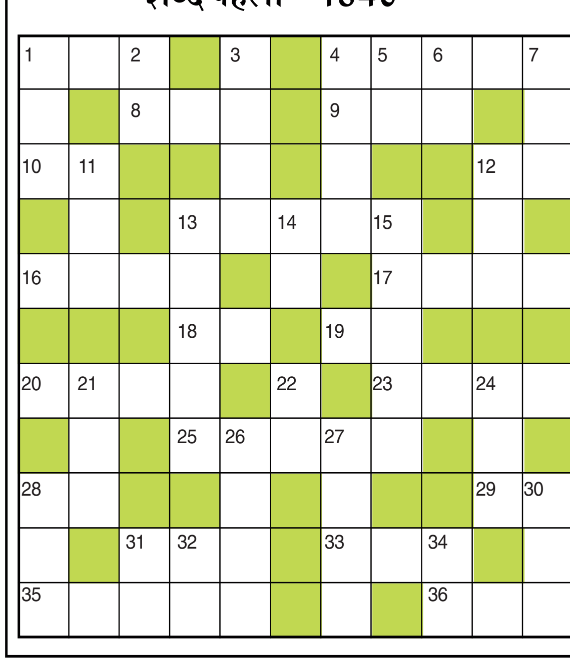

### बाएँ से दाएँ

1.नियंत्रण,घोड़े की रास-3
4.पानी से सराबोर-5
8.अंधकार-3
9.आक्रमण-3
10.दम, सुट्टा-2
12.समय, वक्त-2
13.कहानी लेखक-5
16.अपराधी, गुंडा-4
17.आलोकित होना-4
18.उद्देश्य, मंजिल-2
19.छाती, सिलना-2
20.जागरण-4
23.सफल, उत्तीर्ण-4
25.पत्नी का नाना-2,3
28.मार्ग, रास्ता-2
29.जरा, थोड़ा-2
31.वैमनस्य-3
33.पाजेब-3
35.जरुरतमंद-3,2
36.गदर, क्रांति-3

### ऊपर से नीचे

1.उत्साह-3
2.वोट,राय-2
3.हथियार, गोला-बारूद-4
4.सनसनी, रोमांच-4
5.एक विदेशी शराब-2
6.आफत, मुसीबत-2
7.उपपत्नी-3
11.बलिदानी-3
12.कार्य करने वाला-3
13.सिगरेट का सुट्टा मारना-2,3
14.पानी, जल-2
15.निर्माण करने वाला-5
21.प्रकार-3
22.उम्मीद, आशा-2
24.भिखारी-3
26.ख्यात,प्रसिद्ध-4
27.मदिरापान-4
28.मदद,आराम-3
30.इससे कच्ची शराब बनती है-3
31.उस समय-2
32.नागालैंड की एक जाति-2
34.अधर, होठ-2

### शब्द पहेली - 1839 का हल

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ना | म | क | मा | ना | ■ | स | म | झ | दा | र |
| म | ■ | र | ह | म | ■ | म | द | न | ■ | म |
| र | त | ■ | ■ | ची | ■ | झौ | ■ | ■ | वा | णी |
| ख | स | ■ | ना | न | ख | ता | ई | ■ | रा | य |
| ना | ला | य | क | ■ | त्म | ■ | मा | त | ह | त |
| ■ | ■ | ■ | क | था | ■ | का | न | ■ | ■ | ■ |
| प | न | घ | ट | ■ | आ | ■ | दा | न | वी | र |
| व | र | ■ | ना | ना | स | सु | र | ■ | र | वि |
| न | म | ■ | ■ | म | ■ | चा | ■ | ■ | ता | न |
| सु | ■ | आ | स | व | ■ | ल | ह | र | ■ | य |
| त | ल | ब | गा | र | ■ | न | क | ब | ज | न |

## मुंबई एयरपोर्ट पर दो विदेशी नागरिक फर्जी पासपोर्ट के साथ गिरफ्तार

एजेंसी

**नई दिल्ली।** दांतों के डॉक्टरों के पंजीकरण से लेकर पेशा नियमों और मानकों के साथ दंत चिकित्सा शिक्षा को विनियमित करने वाली दिल्ली डेंटल काउंसिल (डीडीसी) के कार्यालय का स्थानांतरण हो गया है। अब डीडीसी के पदाधिकारी मेटकॉफ हाउस या विकास भवन की जगह मौलाना आजाद दंत चिकित्सा विज्ञान संस्थान (एमएआईडीएस) के भवन परिसर में बैठेंगे। डीडीसी के प्रभारी रजिस्ट्रार डॉ. ज्ञानेंद्र कुमार ने बताया कि दिल्ली सरकार ने दंत चिकित्सकों की सुविधा के लिए डीडीसी का दफ्तर एमएआईडीएस में स्थानांतरित कर दिया है। इसके लिए अस्पताल के मुख्य भवन का सातवां तल नए सिरे से विकसित किया गया है। इसमें चेयरमैन सहित तमाम संवैधानिक पदाधिकारियों के कार्यालय बनाए गए हैं जो डीडीसी में पंजीकृत करीब 2200 दंत चिकित्सकों की नीतिगत समस्याओं का समाधान करेंगे। डॉ. ज्ञानेंद्र के मुताबिक दिल्ली डेंटल काउंसिल का मुख्य काम दंत चिकित्सक अधिनियम 1948 के तहत दिल्ली में दंत चिकित्सकों, डेंटल हाइजीनिस्ट और डेंटल मैकेनिक्स को पंजीकृत करना है, ताकि वे प्रभावी ढंग से अभ्यास कर सकें। साथ ही रोगी को सही और सुरक्षित उपचार उपलब्ध कराने की व्यवस्था सुनिश्चित करती है। उन्होंने उम्मीद जताई कि नया कार्यालय आगामी नवरात्रि महोत्सव के पहले दिन यानि 23 सितम्बर को शुरू हो जाएगा।

## टिटागढ़ रेल सिस्टम्स ने भारतीय नौसेना के लिए तीसरा डाइविंग सपोर्ट क्राफ्ट जलावतरण किया

**कोलकाता।** टिटागढ़ रेल सिस्टम्स लिमिटेड (टीआरएसएल) ने सोमवार को भारतीय नौसेना के लिए तीसरे स्वदेशी डाइविंग सपोर्ट क्राफ्ट (डीएससी) का सफल जलावतरण किया। यह जहाज रक्षा मंत्रालय की मेक इन इंडिया पहल के तहत तैयार की गई पांच श्रृंखलाबद्ध नौकाओं का हिस्सा है। उत्तर 24 परगना जिले में हुगली नदी पर आयोजित जलावतरण समारोह में नौसेना के कमांडर-इन-चीफ वाइस एडमिरल सुराज बेरी की पत्नी कंगना बेरी ने पारंपरिक नामकरण और जलावतरण की रस्म अदा की। डाइविंग सपोर्ट क्राफ्ट कैटामरान प्रकार के विशेष जहाज हैं, जिन्हें पूरी तरह स्वदेशी तकनीक और उपकरणों से बनाया गया है। ये जहाज नौसेना की कमांड क्लियरेंस डाइविंग टीम (सीसीडीटी) को पानी के भीतर मरम्मत, रखरखाव और जहाजों को बचाने जैसे अहम अभियानों में सहायता करेंगे। साथ ही ये नौसेना के गोताखोरों को उन्नत प्रशिक्षण उपलब्ध कराने में भी उपयोगी साबित होंगे। टीआरएसएल के उपाध्यक्ष और प्रबंध निदेशक उमेश चौधरी ने इस मौके पर कहा, 'तीसरे डीएससी का जलावतरण टिटागढ़ की नौसैनिक जहाज निर्माण और रक्षा उत्पादन क्षमता को मजबूत करता है। ये अत्याधुनिक क्राफ्ट नौसेना की पानी के नीचे की परिचालन क्षमता को बढ़ाने में अहम भूमिका निभाएंगे।'

## भारत को 2047 तक विकसित देश बनाने के विजन का अभिन्न अंग है महिला सशक्तीकरण: हरिवंश

**तिरुपति।** राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश ने कहा कि महिला सशक्तीकरण भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने के विजन का एक अभिन्न अंग है। विगत 10 वर्षों में हमने महिलाओं के कल्याण के लिए अनेक नई योजनाएं और नीतियां बनाई हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नियमित रूप से इस बात पर ज़ोर दिया है कि 21वीं सदी में भारत के विकास के लिए महिला सीक्तिकरण आवश्यक है। इनमें से कई योजनाओं ने व्यापक पैमाने पर महिलाओं के जीवन स्तर पर सकारात्मक प्रभाव डाला है। उपसभापति हरिवंश तिरुपति में महिला सशक्तीकरण पर विधायी समितियों के प्रथम राष्ट्रीय सम्मेलन के समापन समारोह को संबोधित कर रहे थे। हरिवंश ने जेंडर बजटिंग के महत्व पर बल दिया और सभी समितियों से न केवल आवंटन बढ़ाने बल्कि व्यय की दक्षता पर भी ध्यान केंद्रित करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि 1997 में महिला सशक्तीकरण संबंधी समिति के गठन के बाद यह पहली बार है कि जब संसद और विभिन्न राज्य विधानमंडलों की समितियां इस प्रकार एक साथ मिल रही हैं। उन्होंने आग्रह किया कि इस तरह के सम्मेलन और अधिक आयोजित किए जाएं।

## सिख श्रद्धालुओं के जत्थे को पाकिस्तान न भेजने के फैसले पर भगवंत सिंह मान ने कड़ा ऐतराज जताया

**चंडीगढ़।** भारत सरकार की ओर से श्री गुरु नानक देव जी के प्रकाश पर्व के अवसर पर सिख श्रद्धालुओं के जत्थे को पाकिस्तान भेजने पर प्रतिबंध लगाने के फैसले पर पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने कड़ा ऐतराज जताया है। मुख्यमंत्री ने अफसोस जाहिर किया कि यह समझना बहुत मुश्किल है कि भाजपा की नीति पाकिस्तान के खिलाफ है या अपने ही लोगों के खिलाफ। उन्होंने कहा कि इससे मोदी सरकार का पंजाब विरोधी रवैया झलकता है। उन्होंने कहा कि अगर एक पाकिस्तानी अभिनेत्री किसी पंजाबी अभिनेता के साथ फिल्म करती है, तो केंद्र सरकार उस फिल्म पर प्रतिबंध लगा देती है और पंजाबियों को गद्दार करार देती है। भगवंत सिंह मान ने सोमवार को पत्रकारों से बातचीत में कहा कि केंद्र सरकार के सौतेले व्यवहार से हमारी फिल्म इंडस्ट्री और पंजाबी कलाकारों को नुकसान हो रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हालांकि, यह फिल्म पुलवामा आतंकी हमले से काफी पहले फिल्माई गई थी।

# देहरादून के सहस्त्रधारा क्षेत्र के कारलीगाढ़ में बाढ़ से तबाही, कई घर व दुकानें बही

एजेंसी

**देहरादून।** उत्तराखंड में सोमवार रात भारी बारिश के चलते देहरादून जिले के सहस्त्रधारा क्षेत्र के कारलीगाढ़ के किनारे कई घरों में मलबा समा गया। पर्यटक स्थल सहस्त्रधारा को भी नुकसान पहुंचा है। यहां कई दुकानें बह गईं। सौंग नदी उफान पर है और इससे खतरा बना हुआ है। रायपुर केशर वाला में सड़क का करीब 90 मीटर हिस्सा भी ध्वस्त हो गया है। हरिद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग पर लालतप्पड़ क्षेत्र में सीमा डेंटल कॉलेज के पास राष्ट्रीय राजमार्ग पर भारी बारिश के कारण पुलिया का एक हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया है। राहत एवं बचाव दल मौके पर मौजूद हैं। बारिश का क्रम मंगलवार को भी जारी है। सोमवार रात तेज बारिश के बाद देहरादून जिले आपदा की चपेट में है। रायपुर क्षेत्र में मालदेवता चौकी से आगे

केशरवाला मार्ग पर नदी का जलस्तर बढ़ने व तेज बहाव के कटाव से सड़क का लगभग सस्ता 80-90 मीटर हिस्सा बह गया है, जिस कारण मार्ग पर यातायात पूर्ण रूप से बाधित हो गया है। देहरादून-मसूरी मार्ग कुठाल गेट के पास व कई अन्य स्थानों पर मलबा आने से अवरुद्ध है। देहरादून- हरिद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग पर लालतप्पड़ क्षेत्र में सीमा डेंटल कॉलेज के पास राष्ट्रीय राजमार्ग पर भारी बारिश के कारण पुलिया का एक हिस्सा क्षतिग्रस्त होने से यातायात को पूर्ण रूप से प्रतिबंधित करते हुए देहरादून से हरिद्वार की ओर आने व जाने वाले वाहनो को भानियावाला व नेपाली फार्म से डायवर्ट किया गया है। जिलाधिकारी सविनय बंसल ने रात को ही राहत एवं बचाव दलों को मौके पर रवाना कर दिया था। जिलाधिकारी के निर्देश पर नदी किनारे रह रहे लोगों को सुरक्षित स्थानों पर भेजा गया। इसके अलावा लोगों को लगातार सचेत किया जा रहा है। पुलिस अधीक्षक अजय सिंह ने बताया कि बारिश को देखते हुए सभी थाना क्षेत्रो में पुलिस टीम रात्रि से ही लगातार नदी, नालों के किनारे व संवेदनशील स्थानों में भ्रमण कर रही है। लोगों को सतर्क किया जा रहा है और नदी के लगातार बढ़ते जलस्तर के कारण नदी नालों के किनारे न जाने की हिदायत दी जा रही है। दून पुलिस को अलर्ट मोड पर रखा गया है, साथ ही हर परिस्थिति पर निगरानी रखी जा रही है।

## केन्द्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने उत्तराखंड के पुष्कर सिंह धामी को दी जन्मदिन की बधाई

एजेंसी

**भुवनेश्वर।** केन्द्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान ने उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी को जन्म दिन पर बधाई दी है । उन्होंने मुख्यमंत्री के स्वस्थ और दीर्घायु होने की कामना भी की। मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान ने सोशल मीडिया के जरिये लिखा, देवभूमि उत्तराखंड के विकास को समर्पित मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी को जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाएं। प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व और आपके कुशल क्रियान्वयन में उत्तराखंड ने पारदर्शी शासन और विकासोन्मुख नीतियों का एक नया अध्याय लिखा है। आपकी कार्यशैली उत्तराखंड की आने वाली पीढ़ियों के लिए उज्ज्वल और सशक्त भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर रही है। ईश्वर से प्रार्थना है कि वे आपको स्वस्थ, दीर्घायु व निरंतर ऊर्जा से परिपूर्ण रखें और आप देवभूमि को और अधिक ऊँचाइयों तक ले जाएं।

# डेंगू नियंत्रण के मामले में सामुदायिक भूमिका जरुरी : नड्डा

एजेंसी

**नई दिल्ली।** केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जगत प्रकाश नड्डा ने कहा कि देश में इस वर्ष डेंगू के मामले 2024 के मुकाबले 47 प्रतिशत कम और मौतें 73 प्रतिशत कम होने का अनुमान है। इस दिशा में सामुदायिक प्रयास जरूरी है। नड्डा दिल्ली एनसीआर में डेंगू की रोकथाम और नियंत्रण की तैयारियों की समीक्षा के लिए आयोजित बैठक में बोल रहे थे। इसमें देश भर में डेंगू की स्थिति और तैयारियों का ब्यौरा भी शामिल था।बैठक में अधिकारियों ने बताया कि 2024 के दौरान, देश में कुल 2,33,519 डेंगू के मामले और 297 मौतें दर्ज की गईं। 2025 (31 अगस्त तक) में, 49,573 मामले और 42 मौतें दर्ज की गई हैं। दिल्ली में इस वर्ष 31 अगस्त तक 964 मामले सामने आए हैं, जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि में 1,215 मामले सामने आए थे। पड़ोसी एनसीआर राज्यों में, उत्तर प्रदेश से 1646, हरियाणा से 298 और राजस्थान से 1181 मामले सामने आए हैं। इस दौरान केंद्रीय मंत्री नड्डा ने डेंगू नियंत्रण के मामले में सामुदायिक भागीदारी के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने राज्यों

से अपनी तैयारियों का पुनर्मूल्यांकन करने का आग्रह किया। साथ ही लंबे समय से जारी बरसात के मौसम और कुछ क्षेत्रों में जलभराव के मद्देनजर जन भागीदारी को बढ़ाने का आग्रह किया ताकि जन जन में चेतना लाई जा सके। इसके साथ ही उन्होंने राज्यों को वेक्टर नियंत्रण को तेज़ करने, निगरानी को मज़बूत करने और त्वरित प्रतिक्रिया देने की सलाह दी। साथ ही अस्पतालों को डेंगू से निपटने के लिए तैयार रहने का निर्देश दिया।इस अवसर पर दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री डॉ पंकज कुमार सिंह, केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव पुण्य सलिला श्रीवास्तव, दिल्ली नगर निगम के महापौर राजा इकबाल सिंह और गाजियाबाद नगर निगम की महापौर सुनीता दयाल आदि उपस्थित रहे। इसके अलावा उत्तर प्रदेश के प्रमुख सचिव (स्वास्थ्य) पार्थ सारथी सेन शर्मा, दिल्ली स्वास्थ्य विभाग के सचिव निखिल कुमार, दिल्ली की विशेष सचिव डॉ. तपस्या राघव, एम्स दिल्ली के निदेशक डॉ. एम. श्रीनिवास के साथ दिल्ली, गुरुग्राम, फरीदाबाद और गाजियाबाद के आयुक्त, नोएडा के सीईओ और सफदरजंग, आरएमएल और एलएचएमसी के अस्पताल प्रतिनिधि भी बैठक में उपस्थित रहे।

## केंद्र सरकार ने तेलंगाना और बिहार में सड़क परियोजनाओं को दी मंजूरी, 2415 करोड़ से अधिक होगा निवेश: गडकरी

एजेंसी

**नई दिल्ली।** केंद्र सरकार ने तेलंगाना और बिहार में सड़क एवं पुल विकास से जुड़ी 2415.55 करोड़ रुपये से अधिक की लागत की दो परियोजनाओं को मंजूरी दे दी है। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी नेअपने एक्स पोस्ट में बताया कि तेलंगाना में 34 सड़क और पुल विकास परियोजनाओं को स्वीकृति दी गई है, जिनकी कुल लंबाई 422.36 किलोमीटर होगी। इन योजनाओं पर 868 करोड़ रुपये का बजट स्वीकृत किया गया है। उन्होंने कहा कि इन पहलों का उद्देश्य राज्य की कनेक्टिविटी और परिवहन नेटवर्क को मजबूत बनाना है। केंद्र सरकार सड़क अवसंरचना के विकास के लिए प्रतिबद्ध है, जिससे तेलंगाना में समावेशी और संतुलित क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा मिलेगा।

गडकरी ने एक अन्य एक्स पोस्ट में बिहार में सड़क परियोजना के बारे में बताते हुए कहा कि बिहार में राष्ट्रीय राजमार्ग-327 ई पर परसमा से अररिया तक 102.193 किलोमीटर लंबे मार्ग को पक्का शोल्डर सहित टू-लेन ब्राउनफील्ड अपग्रेडेशन कार्य के

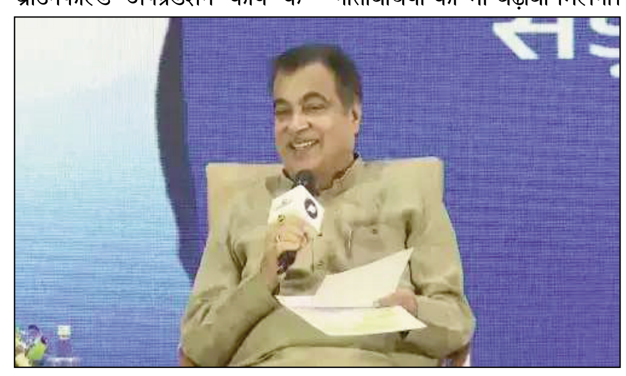

लिए 1547.55 करोड़ रुपये की लागत से मंजूरी दी गई है। यह मार्ग सुपौल, पिपरा, त्रिवेणीगंज और रानीगंज जैसे घनी आबादी वाले शहरी क्षेत्रों को बाईपास करते हुए बनाया जाएगा, जिससे भारी वाहनों का दबाव कम होगा और यात्रा अधिक सुरक्षित व सुगम होगी। उन्होंने कहा कि इस मार्ग विकास परियोजना से न केवल यात्रा के समय और ईंधन की बचत होगी, बल्कि क्षेत्र में सामाजिक-आर्थिक गतिविधियों को भी बढ़ावा मिलेगा। इस परियोजना से विशेष रूप से मछली पालन, मक्का, दुग्ध उद्योग, खाद्य प्रसंस्करण और अन्य छोटे उद्योगों को लाभ होगा। इसके साथ ही किसानों और व्यापारियों को अपने उत्पादों को आसानी से बाजार तक पहुंचाने में सुविधा होगी।

# आधुनिक भारत की औद्योगिक शक्ति का प्रतीक पीएम मित्रा पार्क : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

एजेंसी

**भोपाल।** मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि धार जिले के भैंसोला में बनने वाला देश का पहला पीएम मित्रा पार्क आधुनिक भारत की औद्योगिक शक्ति का प्रतीक बनेगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आगामी 17 सितंबर को अपने जन्मदिन के अवसर पर इस पार्क का भूमिपूजन करेंगे। लगभग 2000 करोड़ की लागत से तैयार होने वाला यह पार्क स्पिनिंग से लेकर डिजाइनिंग, प्रोसेसिंग और एक्सपोर्ट तक की सभी सुविधाएं एक ही परिसर में उपलब्ध कराएगा। उन्होंने कहा कि यह देश का पहला और सबसे बड़ा पीएम मित्रा पार्क होगा, जिसमें कपास से परिधान तक की पूरी वैल्यू चेन विकसित होगी। किसानों को अब कच्चे कपास की बिक्री तक सीमित नहीं रहना पड़ेगा बल्कि उनकी उपज यहीं मूल्य संवर्धन की प्रक्रिया से गुजरकर परिधान बनेगी और वैश्विक

बाजार तक पहुंचेगी। विश्वस्तरीय इन्फ्रास्ट्रक्चर और ग्रीन इंडस्ट्रियल टाउनशिप जैसी आधुनिक सुविधाओं से लैस यह पार्क मध्य प्रदेश को कॉटन कैपिटल की नई पहचान दिलाएगा।

किसानों को मिलेगा वास्तविक मूल्य और वैश्विक पहचानमुख्यमंत्री ने कहा कि मध्य प्रदेश में साढ़े तीन लाख से अधिक कपास उत्पादक किसान हैं। अब तक वे केवल कच्चे कपास की बिक्री तक सीमित थे, लेकिन पीएम मित्रा पार्क के बाद उनकी फसल स्थानीय स्तर पर मूल्य संवर्धन की संपूर्ण श्रृंखला से जुड़ेगी। कपास से यार्न, फैब्रिक, गारमेंट और रेडीमेड परिधान तक की पूरी प्रक्रिया यहीं पूरी होगी। जैविक कपास से बने परिधान सीधे अंतरराष्ट्रीय ब्रांड्स तक पहुंचेंगे। मध्य प्रदेश पहले ही विश्व के 24 प्रतिशत नॉन-जीएमओ ऑर्गेनिक कॉटन का उत्पादक है और अब किसानों को उनकी फसल का वास्तविक मूल्य और वैश्विक पहचान दोनों मिलेंगे।विश्वस्तरीय सुविधाओं से सुसज्जित सबसे बड़ा पार्कउन्होंने कहा कि धार का पीएम मित्रा पार्क आकार और सुविधाओं दोनों में अद्वितीय है। यहां जीरो लिक्विड डिस्चार्ज आधारित कॉमन एफ्लुएंट ट्रीटमेंट प्लांट, 220 केवी सबस्टेशन और 20 एमएलडी पानी की उपलब्धता होगी। स्काडा और आईओटी आधारित यूटिलिटी मॉनिटरिंग सिस्टम इस पार्क को डिजिटल और स्मार्ट बनाएगा। ग्रीन इंडस्ट्रियल टाउनशिप का प्रमाणन इसे टिकाऊ औद्योगिक विकास का मॉडल बनाएगा। भूमि, बिजली और पानी प्रतिस्पर्धी दरों पर उपलब्ध होंगे, जिससे यह पार्क भारत का सबसे किफायती और प्रतिस्पर्धी टेक्सटाइल हब बनेगा।

इज ऑफ डूइंग बिजनेसऔर नीति प्रोत्साहनउन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश लगातार इजी आफ डूइंग बिजनेस में अग्रणी रहा है।

## असम के सोनारी में उल्फा (स्वा.) के दो कैडरों ने किया आत्मसमर्पण

**गुवाहाटी।**

**चराईदेव (असम)।** यूनाइटेड लिबरेशन फ्रंट ऑफ असम (उल्फा) स्वाधीन (स्वा.) के दो सक्रिय कार्यकर्ताओं (कैडर्स) ने असम के चराईदेव जिले में स्थित सोनारी में पुलिस के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया है। चराईदेव जिला मुख्यालय के शहर सोनारी में दोनों उल्फा (स्वा.) कैडरों ने सोनारी पुलिस के सामने आत्मसमर्पण किया। दोनों की पहचान सुभान्त दुवरा उर्फ चुन्मय असम और सदिया के दन्देश्वर बूढ़ागोहाई उर्फ अनुपम असम के रूप में की गयी है। वर्तमान में दोनों उल्फा (स्व) कैडरों से चराईदेव जिला पुलिस सघन पूछताछ कर रही है। पुलिस सूत्रों के अनुसार, जल्द ही अन्य सूचनाओं को सार्वजनिक किया जाएगा।

## कूनो में 20 महीने की चीता शावक की मौत, पार्क प्रबंधन ने जताई तेंदुए से संघर्ष की आशंका

एजेंसी

**भोपाल।** मध्य प्रदेश के श्योपुर जिले में स्थित कूनो राष्ट्रीय उद्यान में सोमवार देर शाम एक और चीता शावक की मौत हो गई। शाम करीब 6:30 बजे मादा चीता 'ज्वाला' की 20 महीने की शावक मृत पाई गई। पार्क प्रबंधन ने शुरुआती जांच में चीता शावक की मौत की वजह तेंदुए के साथ संघर्ष को बताया है। चीता परियोजना के क्षेत्र संचालक उत्तम शर्मा ने बताया कि सोमवार शाम लगभग 6.30 बजे माता चीता ज्वाला की एक 20 माह की मादा उप-वयस्क चीता जंगल में मृत पाई गई। उसे 21 फरवरी 2025 को मां जवाला और तीन शावकों के साथ जंगल में छोड़ा गया था। मृत मादा उप वयस्क चीता ने उसने अपनी मां को एक महीने से अधिक समय पहले और अपने साथी शावकों को कुछ दिन पहले छोड़ दिया था। उन्होंने बताया कि मृत्यु का प्राथमिक कारण तेंदुए के साथ संघर्ष प्रतीत होता है। स्वतंत्र जीवन जीते हुए यह शावक शिकार या अपने क्षेत्र को लेकर तेंदुए से भिड़ गई होगी। विस्तृत जानकारी पोस्टमार्टम रिपोर्ट प्राप्त होने के बाद ज्ञात होगी।

उल्लेखनीय है कि इससे पहले नामीबिया से लाई गई मादा चीता

'नभा' की भी शिकार के दौरान मौत हो गई थी। ताजा घटना के बाद कूनो में अब कुल 25 चीते हैं, जिनमें 9 वयस्क (6 मादा और 3 नर) और 16 भारत में जन्में चीते शामिल हैं। सभी स्वस्थ हैं और प्राकृतिक माहौल में अच्छी तरह रह रहे हैं। चीता परियोजना प्रबंधन लगातार उनकी निगरानी कर रहा है और भविष्य में ऐसी घटनाओं को समझने और आगे की रणनीति बनाने के लिए सघन मॉनिटरिंग जारी रहेगी। कमिश्नरेट पुलिस के 4 चौकी प्रभारियों समेत 9 उपनिरीक्षकों का तबादला, जानिये कौन कहां गया कूनो राष्ट्रीय उद्यान मध्य प्रदेश के श्योपुर और मुरैना जिलों की सीमा पर स्थित है। यह देश के महत्वपूर्ण वन्यजीव अभयारण्यों में गिना जाता है और विशेष रूप से चीता पुनर्वास परियोजना के कारण हाल के वर्षों में अंतरराष्ट्रीय सुर्खियों में रहा है। यहां कई दुर्लभ और विलुप्तप्राय जीव-जंतु भी पाए जाते हैं। इनमें तेंदुआ, भालू, जंगली कुत्ता, लकड़बग्घा, सांभर, नीलगाय और चिंकारा प्रमुख हैं।

### सीबीआई ने बैंक धोखाधड़ी मामले में 15 साल से फरार चार आरोपितों को महाराष्ट्र से दबोचा

**नई दिल्ली।** केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने बैंक धोखाधड़ी मामले में करीब 15 वर्षों से फरार चल रहे एक एक लाख रुपए के इनामी चार आरोपितों को गिरफ्तार किया है। महाराष्ट्र के संभाजी नगर और नागपुर से गिरफ्तार किए गए इन आरोपितों में राजकुमार चुरेवाल, माधव चुरेवाल, दीपक चुरेवाल और राजेश चुरेवाल शामिल हैं। सारे आरोपित एक ही परिवार के हैं। सीबीआई के अनुसार राजकुमार चुरेवाल और माधव चुरेवाल को साल 2007 में और दीपक चुरेवाल व राजेश चुरेवाल को वर्ष 2010 में फरार घोषित किया गया था। परिवार का एक अन्य सदस्य सुरेंद्र कुमार चुरेवाल भी इसी मामले में फरार घोषित हुआ था, जिसकी बाद में मौत हो गई। एजेंसी के अनुसार, फरारी के दौरान आरोपितों ने अपनी असली पहचान छिपाने के लिए फर्जी सरकारी पहचान पत्र बनवाए और काल्पनिक नामों से रह रहे थे। हाल ही में सीबीआई को आरोपितों के नए पते और नामों की जानकारी मिली, जिसके आधार पर 14 सितंबर को कोलकाता की टीमों ने समन्वित अभियान चलाकर इन्हें गिरफ्तार किया।

# देश की कई समस्याओं का समाधान है एक देश-एक चुनाव : सुनील बंसल

एजेंसी

**इंदौर।** भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के राष्ट्रीय महामंत्री सुनील बंसल ने कहा कि विकसित भारत बनाने के लिए एक देश-एक चुनाव जरूरी है। एक देश-एक चुनाव से देश की कई समस्याओं का समाधान हो जाएगा। आजादी के बाद देश में कई तरह के सुधार हुए। प्रशासनिक सुधार, न्यायिक सुधार, शिक्षा नीति में बदलाव की तरह ही चुनाव सुधार के लिए एक देश-एक चुनाव जरूरी है।

भाजपा महासचिव बंसल इंदौर के लता मंगेशकर सभागार में आयोजित ''एक राष्ट्र-एक चुनाव'' छात्र नेता सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि 1947 में जब देश आजाद हुआ, तो उसने लोकतंत्र अपनाया और उस लोकतंत्र को चलाने के लिए चुनाव एक अनिवार्य अंग था। स्वतंत्रता के बाद देश में कई सुधार हुए। प्रशासनिक, न्यायायिक सुधार के साथ शिक्षा नीति में भी बदलाव हुए। अनावश्यक खर्च से देश को बचाने एक देश-एक चुनाव वर्तमान समय की जरूरत है। इसी तरह से हमारी चुनाव व्यवस्था में भी बदलाव की जरूरत है। यह

कई समस्याओं का इकलौता समाधान है। उन्होंने कहा कि वर्ष 1952 में जब देश में पहला चुनाव हुआ, तो कुल मतदाताओं की संख्या 19 करोड़ थी, लेकिन 2024 के लोकसभा चुनाव तक यह बढ़कर 96 करोड़ हो चुकी थी। वर्ष 1995 से 2025 के बीच के 30 सालों में से कोई भी साल ऐसा नहीं बीता, जब देश में चुनाव नहीं हुआ हो।

बंसल ने कहा कि वर्ष 1952 से 1967 तक देश में एक साथ चुनाव होते थे, लेकिन बाद में इस व्यवस्था को बदल दिया गया। उन्होंने कहा कि लगातार चुनावों के कारण अक्सर आचार संहिता लगी रहती है, जिससे विकास बाधित होता है। अनावश्यक खर्च की अगर बात की जाए, आर्थिक विश्लेषकों के अनुसार हर पांच साल में चुनाव आयोग, राजनीतिक दलों, उम्मीदवारों आदि का खर्च मिलाकर 5 से 7 लाख करोड़ रुपये चुनाव पर खर्च होते हैं। पिछले लोकसभा चुनाव में ही चुनाव आयोग को प्रत्येक मतदाता पर 1400 रुपये खर्च करने पड़े। यह अनावश्यक खर्च एक आगे बढ़ते हुए देश के लिए बहुत नुकसानदायक है। एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि हर चुनाव अपने साथ राजनीतिक, सामाजिक वैमनस्यता लेकर आता है, जो हमारे देश और समाज के लिए उचित नहीं है। भाजपा महामंत्री बंसल ने कहा कि हर चुनाव में हमारे प्रशासन और जनप्रतिनिधियों का बहुत अधिक समय खर्च होता है। उन्हें विकास की योजनाएं बनाने और अपने क्षेत्र में काम करने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिलता। इसके अलावा लंबे समय तक आचार संहिता लगे होने से विकास के काम रुक जाते हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने वर्ष 2047 तक विकसित भारत का लक्ष्य तय किया है। इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए समय और धन की बर्बादी रोकना बहुत जरूरी है, जिसका एक ही उपाय है, एक देश-एक चुनाव। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खण्डेलवाल ने कहा कि देश में वन नेशन-वन इलेक्शन अब जरूरी हो गया है। आजादी के बाद देश में राज्यों की विधानसभाओं और लोकसभा के चुनाव एक साथ कराने की परंपरा रही है। वर्ष 1952, 1957, 1962 और 1967 में देश में आम चुनाव और राज्यों की विधानसभाओं के चुनाव एक साथ ही हुए थे।

## सीबीआई ने कर्नाटक के पूर्व मंत्री के परिजनों और सहयोगियों के ठिकानों पर की छापेमारी, करोड़ों की हेराफेरी के दस्तावेज बरामद

एजेंसी

**नई दिल्ली।** केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में कर्नाटक के तत्कालीन अनुसूचित जनजाति कल्याण मंत्री के परिजनों और करीबी सहयोगियों के 16 ठिकानों पर छापेमारी कर करोड़ों रुपये की सरकारी धनराशि के गबन से जुड़े आपत्तिजनक दस्तावेज, संपत्ति के कागजात, बैंक स्टेटमेंट और वाहनों से संबंधित विवरण बरामद किए। यह कार्रवाई कर्नाटक महर्षि वाल्मीकि अनुसूचित जनजाति विकास निगम लिमिटेड (वाल्मीकि कॉरपोरेशन) से फंड की हेराफेरी के मामले में हुई। सीबीआई के अनुसार, मामला 03 जून 2024 को यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के डीजीएम की शिकायत पर दर्ज किया गया था, जिसमें 21 फरवरी से 06 मई 2024 के बीच निगम के खातों से 84.63 करोड़ रुपये के अवैध ट्रांसफर और धोखाधड़ी के आरोप लगे थे। इस जांच की निगरानी कर्नाटक हाई कोर्ट कर रहा है और अब तक सीबीआई चार स्टेटस रिपोर्ट दाखिल कर चुका है। जांच के दौरान सामने आया कि अनुसूचित जनजाति कल्याण विभाग और कर्नाटक जर्मन टेक्निकल ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट (केजीटीटीआई) की धनराशि का भी गबन हुआ। अनुसूचित जनजाति कल्याण विभाग के 2.17 करोड़ रुपये बेंगलुरु

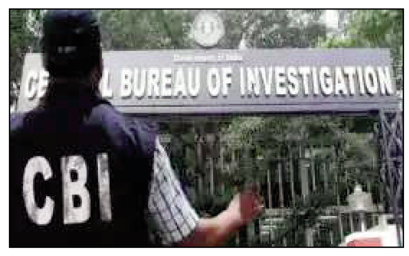


स्थित बैंक ऑफ बड़ौदा से निकाले गए और मंत्री के करीबी सहयोगी की निजी फर्म में ट्रांसफर किए गए। इसमें से लगभग 1.20 करोड़ रुपये मंत्री की बहन, बहनोई और निजी सहायक के खातों में भेजे गए, जबकि कुछ राशि बेल्लारी स्थित एक फार्महाउस मालिक को दी गई। इसी तरह केजीटीटीआई के 64 लाख रुपये केनरा बैंक, विल्सन गार्डन ब्रांच, बेंगलुरु से निकालकर मंत्री के करीबी सहयोगी के भाई और भतीजे के खातों में ट्रांसफर किए गए। छापेमारी जिन लोगों पर हुई, उनमें बी. शारदा (मंत्री की बहन), डी. भरानी प्रसाद (बहनोई), के. विश्वनाथ (निजी सहायक), नेक्कांति नागराज (करीबी सहयोगी व धनलक्ष्मी एंटरप्राइजेज के मालिक), एन. रविकुमार (नागराज के भाई) और एन. यशवंत चौधरी (नागराज के भतीजे) शामिल हैं। मामले की जांच जारी है।

# महिला वनडे बल्लेबाजी रैंकिंग में स्मृति मंधाना फिर से बनीं नंबर 1

**न्यू चंडीगढ़ (एजेंसी)।** भारतीय सलामी बल्लेबाज स्मृति मंधाना ने रविवार को न्यू चंडीगढ़ में खेले गए तीन मैचों की वनडे सीरीज के पहले मैच में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ शानदार अर्धशतक जड़कर आईसीसी महिला वनडे बल्लेबाजी रैंकिंग में शीर्ष स्थान फिर से हासिल कर लिया है।

बाएं हाथ की इस स्टाइलिश सलामी बल्लेबाज ने 63 गेंदों में छह चौकों और दो छक्कों की मदद से 58 रनों की पारी खेली और इंग्लैंड की कप्तान नैट शिवर-ब्रंट को पीछे छोड़कर वह स्थान फिर से हासिल कर लिया है जो उन्होंने पहली बार जनवरी 2019 में हासिल किया था और हाल ही में इस साल जुलाई में हासिल किया था। शीर्ष पर यह उनका चौथा कार्यकाल है।

ऑस्ट्रेलिया ने आठ विकेट से जीत हासिल की और यह शानदार जीत उनकी खिलाड़ियों की रैंकिंग में भी दिखाई दी। बाएं हाथ की बल्लेबाज बेथ मूनी ने 74 गेंदों में नाबाद 77 रनों की पारी खेली जिससे वह तीन पायदान ऊपर चढ़कर पांचवें स्थान पर पहुंच गईं। एनाबेल सदरलैंड अपनी नाबाद 54 रनों की पारी के बाद चार पायदान ऊपर चढ़कर संयुक्त 25वें स्थान पर पहुंच गईं। वह सलामी बल्लेबाज फोएबे लिचफील्ड के साथ संयुक्त रूप से शीर्ष पर हैं। फोएबे लिचफील्ड ने 80 गेंदों पर 88 रनों की पारी खेलकर 13 पायदान ऊपर चढ़कर मैच की सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी बनीं।

मंधना के अलावा ताजासाप्ताहिक अपडेट में जिन भारतीय बल्लेबाजों को फायदा हुआ है उनमें ऋचा घोष शामिल हैं जो अपनी 25 रनों की पारी के बाद 39वें से 36वें स्थान पर पहुंच गई हैं। सलामी बल्लेबाज प्रतीका रावल 96 गेंदों पर 64 रनों की पारी के बाद चार पायदान ऊपर चढ़कर 42वें स्थान पर पहुंच गई हैं। हरलीन देओल 57 गेंदों पर 54 रनों की पारी के बाद पांच पायदान ऊपर चढ़कर 43वें स्थान पर पहुंच गई हैं। गेंदबाजी रैंकिंग में ऑस्ट्रेलिया की किम गार्थ और अलाना किंग क्रमशः चौथे और पांचवें स्थान पर पहुंच गई हैं, जबकि सदरलैंड ने दो पायदान ऊपर चढ़कर 21वें स्थान पर पहुंच गई हैं। तीनों ने एक-एक विकेट लिया है। भारत की स्नेह राणा पांच स्थान ऊपर चढ़कर 16वें स्थान पर पहुंच गई हैं।

# भारतीय क्रिकेट टीम की मुख्य प्रयोजक बनी अपोलो टायर्स : बीसीसीआई

**मुंबई (एजेंसी)।** भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने कहा है कि दिग्गज कंपनी अपोलो टायर्स भारतीय क्रिकेट टीम की नई मुख्य प्रायोजक बनी है। बोर्ड के अनुसार अपोलो ने प्रमुख प्रायोजक के रूप में ड्रीम 11 की जगह ली है। ऑनलाइन गेमिंग पर प्रतिबंध के बाद ड्रीम 11 को प्रायोजक से हटना पड़ा था। बीसीसीआई और अपोलो टायर्स के बीच हुई साल के लिए करार हुआ है ये मार्च 2028 तक रहेगा। इस करार के अनुसार, अपोलो टायर्स का लोगो सभी प्रारूपों में भारतीय पुरुष और महिला राष्ट्रीय टीमों की जर्सी पर रहेगा।

बीसीसीआई ने कहा कि अपोलो टायर्स पहली बार भारतीय क्रिकेट से जुड़ा है। बोर्ड ने का कि कड़ी बोली प्रक्रिया के बाद अपोलों को ये करार मिला है। ये साझेदारी प्रायोजन मूल्य में उल्लेखनीय वृद्धि दर्शाती है, जो भारतीय क्रिकेट की व्यापक और बढ़ती व्यावसायिक अपील को प्रदर्शित करती है।

बीसीसीआई सचिव देवजीत सैकिया ने कहा, अपोलो टायर्स का हमारे नए प्रायोजक के रूप में आना हमारी टीमों की कड़ी मेहनत और निरंतर प्रदर्शन को दिखाता है। हम भारतीय क्रिकेट में अपोलो के प्रायोजन को लेकर उत्साहित हैं, जो इस खेल की अद्वितीय पहुंच और प्रभाव को दिखाता है। यह एक व्यावसायिक समझौते से कहीं बढ़कर है। यह दो संस्थानों के बीच एक साझेदारी है, जिन्होंने लाखों लोगों का विश्वास और सम्मान हासिल किया है।

वहीं बीसीसीआई के उपाध्यक्ष राजीव शुक्ला ने कहा, अपोलो टायर्स को हमारे नए प्रमुख प्रायोजक के रूप में स्वागत करते हुए हमें खुशी हो रही है। यह एक अहम अवसर है, जो भारत की दो सबसे शक्तिशाली और स्थायी विरासतों भारतीय क्रिकेट की अटूट भावना और अपोलो टायर्स की अग्रणी विरासत, को एक साथ ला रहा है। ये बीसीसीआई और टीम इंडिया के वैश्विक ब्रांड में बाजार के मजबूत विश्वास को दिखाता है। हमें विश्वास है कि यह साझेदारी आपसी विकास और सफलता के लिए प्रेरक साबित होगी।

वहीं अपोलो टायर्स लिमिटेड के उपाध्यक्ष और प्रबंध निदेशक नीरज कंवर ने कहा, टीम इंडिया का प्रमुख प्रायोजक बनना हमारे लिए सम्मान की बात है।

# ऑस्ट्रेलिया ए के खिलाफ भारत ए की कप्तानी करना बहुत बड़ा सम्मानः दलीप ट्रॉफी जीत के बाद बोले पाटीदार

**बेंगलुरु (एजेंसी)।** रजत पाटीदार ने इस साल की शुरुआत में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु को इंडियन प्रीमियर लीग का पहला खिताब दिलाया था और हाल ही में दलीप ट्रॉफी जीतने में सेंट्रल जोन की मदद की। पाटीदार का मानना है कि इस अनुभव ने उनकी नेतृत्व क्षमता में जबरदस्त विकास किया है। यह स्टार बल्लेबाज अब 30 सितंबर से शुरू हो रही ऑस्ट्रेलिया ए के खिलाफ तीन मैचों की एकदिवसीय श्रृंखला के पहले मैच में भारत ए की कप्तानी करते हुए इसी सीख का लाभ उठाना चाहता है।

पाटीदार ने कहा, 'ऑस्ट्रेलिया 'ए' के खिलाफ सीरीज के लिए भारत 'ए' टीम की कप्तानी करना मेरे लिए बहुत सम्मान की बात है। मुझे लगता है कि यह मेरे और टीम के लिए एक शानदार मौका है कि हम अपनी क्षमता का प्रदर्शन करें और अपने बेहतरीन प्रदर्शन से भारतीय टीम में जगह बनाने की दौड़ में शामिल हों।'

उन्होंने कहा, 'एक तरह से यह साल मेरे लिए निजी तौर पर बेहद खास रहा है, क्योंकि मैदान पर मेरी क्षमताओं को पहचाना गया और मुझे पुरस्कृत भी किया गया। इसकी शुरुआत प्रथम श्रेणी क्रिकेट में मध्य प्रदेश राज्य टीम की कप्तानी से हुई और ऋष्क्र ने मुझे इस प्रतिष्ठित टीम की कप्तानी की जिम्मेदारी सौंपी। ट्रॉफी जीतना तो सोने पे सुहागा था और इस दौरान मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला जिसका मुझे आगे चलकर फायदा मिलेगा।'

पाटीदार ने आगे कहा, 'एक टीम के कप्तान के तौर पर यह इस बारे में है कि हम एक इकाई के रूप में कैसे एकजुट होते हैं और एक-दूसरे के लिए जान देने को तैयार रहते हैं। इस सीजन में RCB में हमारा यही सौहार्द और विश्वास था, जहां हम सभी ने एक-दूसरे के लिए कदम बढ़ाया और सफलता के लिए मिलकर काम किया। भारत 'ए' के खिलाफ होने वाले मैच में भी हम इसी तरह का रवैया अपनाना चाहेंगे। मैं उत्साहित हूं और नई चुनौती का इंतजार कर रहा हूं।'

# विश्व चैंपियनशिप में अब नीरज चोपड़ा पर निगाह, खिताब का बचाव करने के लिए उतरेंगे

**तोक्यो (एजेंसी)।** भारतीय भाला फेंक सुपरस्टार नीरज चोपड़ा बुधवार को यहां क्वालीफिकेशन राउंड के साथ विश्व चैम्पियनशिप में अपने खिताब का बचाव करने का अभियान शुरू करेंगे जिसमें उन्हें पाकिस्तान के ओलंपिक स्वर्ण विजेता अरशद नदीम और जर्मनी के डायमंड लीग चैंपियन जूलियन वेबर की कड़ी चुनौती का सामना करना पड़ सकता है। चोपड़ा का लक्ष्य पुरुष भाला फेंक में विश्व चैंपियनशिप में अपने स्वर्ण पदक का बचाव करने वाला तीसरा खिलाड़ी बनना होगा। नीरज चोपड़ा ने 2023 में बुडापेस्ट में आयोजित की गई पिछली विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीता था। चेक गणराज्य के दिग्गज और वर्तमान में चोपड़ा के कोच जान जेलेंजी (1993, 1995) और ग्रेनेडा के एंडरसन पीटर्स (2019, 2022) ने ही अब तक लगातार दो मौकों पर विश्व चैंपियनशिप का ताज जीता है। चोपड़ा 2024 पेरिस ओलंपिक के बाद पहली बार नदीम का सामना करेंगे जिससे उन्हें फ्रांस की राजधानी में दूसरे स्थान पर रहने का बदला लेने का मौका मिलेगा। नदीम ने पेरिस में 92.97 मीटर के शानदार थ्रो के साथ स्वर्ण पदक जीता था, जबकि चोपड़ा का उस दिन सर्वश्रेष्ठ थ्रो 89.45 मीटर था और उन्हें रजत पदक से संतोष करना पड़ा था। चोपड़ा और नदीम का मुकाबला बुधवार को नहीं होगा क्योंकि दोनों प्रतिद्वंद्वियों को क्वालीफाइंग दौर में दो अलग-अलग ग्रुप में रखा गया है। गुरुवार को फाइनल में उनके आमने-सामने होने की उम्मीद है। भारत के 27 वर्षीय खिलाड़ी के लिए स्वर्ण पदक जीतना आसान नहीं होगा लेकिन यह वही स्टेडियम है जहां उन्होंने 2021 में ओलंपिक स्वर्ण जीतकर इतिहास रचा था। चोपड़ा ने मई में दोहा डायमंड लीग में 90.23 मीटर थ्रो के साथ प्रतिष्ठित 90 मीटर का आंकड़ा पार किया था, लेकिन अन्य प्रतियोगिताओं में इस साल इस भारतीय सुपरस्टार ने कुछ औसत दूरी भी तय की है। वह दो प्रतियोगिताओं में 85 मीटर की दूरी पार करने में असफल रहे थे। इस वर्ष उनका दूसरा सर्वश्रेष्ठ थ्रो 88.16 मीटर था। फॉर्म के लिहाज़ से वेबर स्वर्ण पदक जीतने के प्रबल दावेदार हैं। इस 31 वर्षीय जर्मन खिलाड़ी ने इस साल तीन बार 90 मीटर से ज्यादा की दूरी तक भाला फेंका है। पिछले महीने डायमंड लीग ट्रॉफी जीतने के बाद वह आत्मविश्वास से भरे होंगे।

# आईसीसी ने मैच रैफरी को हटाने की मांग ठुकरायी, पीसीबी को करारा झटका

दुबई ।अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) की मैच रैफरी एंडी पाइक्रॉफ्ट को एशिया कप से हटाने की मांग ठुकरा दी है। पीसीबी ने मैच रैफरी पर आचार संहित उल्लंघन का आरोप लगाया है। उसका कहना है कि मैच रैफरी ने पाक कप्तान सलमान अली आगा से कहा था कि वह भारतीय कप्तान से हाथ नहीं मिलाये। इस मैच में भारतीय कप्तान सूर्यकुमार यादव ने टॉस के दौरान पाकिस्तान के कप्तान सलमान अली से हाथ नहीं मिलाया था। वहीं मैच खत्म होने के बाद भी भारतीय खिलाड़ियों ने पाक खिलाड़ियों से हाथ नहीं मिलाया था और ड्रेसिंग रूम का दरवाजा भी बंद कर लिया था। इसी को पीसीबी ने अपने खिलाड़ियों की बेइज्जती माना है। पीसीबी इस मामले की शिकायत आईसीसी से की थी और धमकी दी थी कि अगर मैच रैफरी को नहीं हटाया जाता है तो वह एशिया कप का बहिष्कार करेंगे। वहीं आईसीसी ने पीसीबी की उस अर्जी को खारिज कर दिया है। एक रिपोर्ट के अनुसार पीसीबी को बता दिया है कि मैच रैफरी को नहीं हटाया जाएगा। पीसीबी, पाइक्रॉफ्ट की उस भूमिका से नाराज है, जिसमें उन्होंने सलमान को टॉस के दौरान भारतीय कप्तान से हाथ न मिलाने के लिए कहा था।

# अमन सहरावत अधिक वजन के कारण विश्व कुश्ती चैम्पियनशिप के लिए आयोग्य हुए

जगरेब ।ओलंपिक पदक विजेता भारतीय पहलवान अमन सहरावत वजन वर्ग में अधिक पाये जाने के कारण विश्व कुश्ती चैम्पियनशिप में भाग नहीं ले पायेंगे। अहम को इसके लिए अयोग्य घोषित कर दिया गया है। अमन ने पेरिस ओलंपिक में पुरुषों की फ्रीस्टाइल 57 किग्रा में कांस्य पदक जीता था। गौरतलब है कि यूडब्ल्यूडब्ल्यू नियमों के अनुसार विश्व कप, यूडब्ल्यूडब्ल्यू रैंकिंग सीरीज टूर्नामेंट और अंतर्राष्ट्रीय टूर्नामेंटों के लिए दो किग्रा तक ज्यादा वजन ही स्वीकार्य होता है पर विश्व चैंपियनशिप और ओलंपिक जैसे टूर्नामेंटों में कोई राहत नहीं दी जाती है। गौरतलब है कि तय मानक से अधिक वजन होने के कारण ही पेरिस ओलंपिक 2024 में विनेश फोगाट को खिताबी मुकाबले से ठीक पहले बाहर कर दिया गया था। भारतीय दल के अनुसर अमन अपना वजन नियंत्रित नहीं रख पाये। उनका वजन 1700 ग्राम ज्यादा था जो स्वीकार्य नहीं था।

# अभी दो बार फिर आमने-सामने का सकती हैं भारत-पाक टीम

दुबई ।एशिया कप में भारतीय टीम ने अपने दूसरे ही मैच में पाकिस्तान को एकतरफा मुकाबले में हरा दिया है। भारतीय टीम ने पहले मैच में यूएई को हराया था। इससे अब भारतीय टीम का सुपर फोर में पहुंचना तकरीबन तय हो गया है। भारतीय टीम को आगे भी पाक से दो मैच खेलने पड़ सकते हैं। भारतीय टीम को 19 सितंबर को अबुधाबी में अपना आखिरी लीग मैच ओमान से खेलना है। इस मुकाबले को भारतीय टीम अगर जीत ले और पाकिस्तान अपने अंतिम लीग मैच में यूएई को हरा दे तो फिर भारत और पाकिस्तान की टीमें एक बार फिर 21 सितंबर को सुपर फोर मैच में आमने-सामने आ सकती हैं। इसका कारण है कि एशिया कप ग्रुप ए की शीर्ष दो टीमों के सुपर फोर मैच उसी दिन खेले जाने हैं। सुपर फोर मैच में भारत और पाकिस्तान की टीमें फिर दुबई में खेल सकती हैं। वहीं अगर भारत और पाकिस्तान की टीमें अगर सुपर फोर मैच में शीर्ष 2 में रहती हैं तो ऐसी स्थिति में 28 सितंबर को फाइनल में एक बार फिर इन्हें खेलना पड़ सकता है।.दोनो ही टीमें अभी ग्रुप ए की अंकतालिका में पहले और दूसरे नंबर पर हैं। भारतीय टीम के दो मैचों से चार अंक हैं वहीं पाकिस्तान के दो मैचों में दो अंक हैं। भारत ने जहां पहले मैच में यूएई वहीं पाक ने ओमान को हराया।

# ऑस्ट्रेलिया खिलाफ सीरीज में वापसी करना चाहेगी भारतीय टीम

**न्यू चंडीगढ़ (एजेंसी)।** इसमें कोई शक नहीं कि असली परीक्षा यहीं से शुरू होगी। पहले वनडे में आठ विकेट से शानदार जीत के बाद, ऑस्ट्रेलियाई महिला टीम एक और सीरीज जीत के दरवाजे पर दस्तक दे रही है। भारत के खिलाफ पिछले दस मुकाबलों में से नौ में जीत, और कुल 57 में से 47 में जीत। यह एक ऐसा रिकॉर्ड है जो चैंपियन होने का प्रमाण देता है।

भारत को नजरअंदाज मत कीजिए। वे पहले मैच में भले ही जीती न हो, लेकिन हरमनप्रीत कौर की टीम के लिए कुछ सकारात्मक पहलू भी रहे हैं। स्मृति मंधाना और युवा प्रतिका रावल ने शीर्ष क्रम में 117 रनों की शानदार साझेदारी करके एक आक्रामक स्कोर की नींव रखी। मंधाना के कवर पर लगाए गए शानदार ड्राइव और रावल के तेज गेंदबाजों के सामने संयम ने दर्शकों को रोमांचित कर दिया। हरलीन देओल ने शानदार अर्धशतक लगाकर स्कोरबोर्ड को गतिमान रखा और दिखाया कि भारत में ऑस्ट्रेलिया को हराने की क्षमता है।

हरमनप्रीत के एनाबेल सदरलैंड की गेंद पर एलबीडब्ल्यू आउट होने सहित कई विकेट गिरने से भारत की बढ़त थम गई। ऋचा घोष, दीप्ति शर्मा और राधा यादव ने उपयोगी प्रदर्शन किया, लेकिन 281 के लक्ष्य के लिए मैदान पर हमेशा ही तेज प्रदर्शन की जरूरत होती है और यहीं पर बात बिगड़ गई। चार कैच छूटने और कुछ बेतरतीब गेंदबाजी ने ऑस्ट्रेलिया को अपनी रणनीति बनाने की आजादी दे दी।

21 साल की फोबे लिचफील्ड जगह की मालकिन लग रही थीं। उन्होंने पिच को सपाट और गेंदबाजी को बेअसर बना दिया, 80 गेंदों पर 88 रन ठोक डाले, तेज और स्पिन दोनों के खिलाफ पूरी ताकत से खेली। बेथ मूनी ने शांतचित्त होकर नाबाद 77 रनों की पारी खेली, जबकि एनाबेल सदरलैंड ने शांत और कुशल बल्लेबाजी करते हुए बिना किसी नाटकीय अंदाज के लक्ष्य हासिल कर लिया। एलिस पेरी का रिटायरमेंट का दर्द भी ऑस्ट्रेलिया को नहीं रोक सका, उनकी टीम में इतनी मजबूती है।

दूसरे मुकाबले में भारत को पहली गेंद से ही आक्रामक रुख अपनाना होगा। हरमनप्रीत को बल्ले से अगुवाई करनी होगी। उनके रन मंधाना, रावल और देओल को मजबूती से आगे बढ़ा सकते हैं। जेमिमा रोड्रिग्स और ऋचा को बीच के ओवरों में ऑस्ट्रेलियाई टीम के दबाव का सामना करना होगा। गेंद पर दीप्ति शर्मा का नियंत्रण, स्नेह राणा का ऑलराउंड प्रदर्शन और क्रांति गौड़ का विकेट लेने का हुनर अहम हैं। अगर उन्हें लिचफील्ड और मूनी पर लगाम लगानी है तो उन्हें संयम बनाए रखना होगा और अपनी लेंथ पर गेंद फेंकनी होगी।

ऑस्ट्रेलिया के लिए रणनीति सरल है। वही करते रहो जो वे सालों से करते आ रहे हैं। एलिसा हीली की आक्रामक शुरुआत, पेरी का क्लास, गाडर्नर का ऑलराउंड प्रदर्शन और सदरलैंड का बढ़ता कद उन्हें एक ऐसी टीम बनाता है जिसमें कोई कमी नहीं दिखती। अलाना किंग की चतुराई भरी स्पिन और जॉर्जिया वेयरहैम की विविधता को इसमें जोड़ दें तो वे हर विभाग में दबदबा बना सकते हैं। क्रिकेट के एक बेहतरीन दिन के लिए परिस्थितियां तैयार दिख रही हैं। चमकीला आसमान, 30एष्ट तापमान और पिच हर किसी के लिए कुछ न कुछ देती है। शुरुआत में अच्छी उछाल, तेज गेंदबाजों के लिए कुछ और खेल आगे बढ़ने के साथ थोड़ा टर्न भी। आउटफील्ड तेज है इसलिए अगर बल्लेबाज बहादुरी से खेलते हैं तो रन जरूर बनेंगे।

गौर है कि भारत के लिए सीरीज दांव पर है इसलिए उनसे जोरदार वापसी की उम्मीद हैं। ऑस्ट्रेलिया का लक्ष्य जीत का दरवाजा बंद करके अपनी चमक बरकरार रखना होगा। यह इरादे कौशल और दबाव से भरपूर एक मुकाबले के लिए पूरी तरह तैयार है। एक असली भारत बनाम ऑस्ट्रेलिया मुकाबला और जैसा कि कहा जाता है, जब ये दोनों टीमें मिलती हैं तो चिंगारी उड़ती है।

# शोएब अख्तर ने पाक कप्तान पर कसा संज सूर्यकुमार की प्रशंसा की

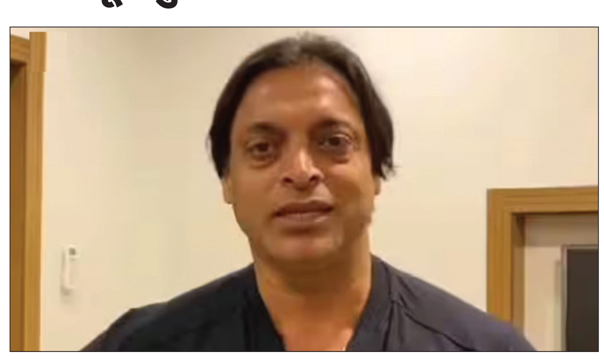

लाहौर ।पाकिस्तान के पूर्व तेज गेंदबाज शोएब अख्तर ने पाक टीम के कप्तान सलमान अली पर निशाना साधा है। अख्तर ने सलमान पर तंज कसते हुए उन्हें आइंस्टीन तक कह दिया। अख्तर ने कहा कि आगा ने भारतीय टीम के खिलाफ मैच में पहले बल्लेबाजी कर सबसे बड़ी गलती की थी। इस पूर्व तेज गेंदबाज के अनुसार आगा ने पहले बल्लेबाजी चुनी थी जबकि हालातों के अनुसार उनको पहले गेंदबाजी लेनी थी। शोएब ने भारतीय कप्तान सूर्यकुमार यादव के रवैये की जमकर प्रशंसा की। इस मैच में भारतीय टीम ने एकतरफा जीत दर्ज की थी। पाकिस्तान की टीम ने 127 रन 9 विकेट बनाये। वहीं भारतीय टीम ने 16वें ओवर में ही 128 रनों के लक्ष्य को 3 विकेट के नुकसान पर ही हासिल कर लिया। इस मैच में पाक बल्लेबाज भारतीय स्पिनरों के आगे बेबस नजर आये। कुलदीप यादव ने 3 और अक्षर पटेल ने 2 विकेट लिए। अख्तर के अनुसार दुबई की पिच स्पिनरों की सहायता कर रही है और लक्ष्य का पीछा करना आसान था पर आगा ने इसके बाद भी पहले बल्लेबाजी का फैसला किया। अख्तर ने एक वीडियो में कहा, 'उनको शुभकामनाएं। सूर्यकुमार ने पूरी पिच रिपोर्ट पहले ही बना ली थी। उसने कहा, बाद में ओस गिरेगी। ऐसे में बल्लेबाजी आसान होती है। हमारी बल्लेबाजी लंबी है। हम लक्ष्य का पीछा ही करना चाहते थे। हम पहले बल्लेबाजी ही करना चाहते थे पर हमारे आइंस्टीन ने कहा कि हमें पहले बल्लेबाजी करनी है।' इस मैच की दूसरी गेंद पर ही पाक का पहला विकेट गिर गया था। इसके बाद पाक टीम संभल नहीं पाई, जबकि पूरे मैच को भारतीय टीम हावी रही।

# डुप्लांटिस ने 14वीं बार पोल वॉल्ट का विश्व रिकॉर्ड तोड़ा, लगातार तीसरा विश्व खिताब जीता

**टोक्यो (एजेंसी)।** वह कूद पड़ा, वह चिल्लाया, उमस भरी सोमवार की रात टोक्यो के नेशनल स्टेडियम में 50,000 से ज्यादा दर्शकों की तालियों की गड़गड़ाहट के बीच उसने अपनी बाहें फैला दीं। आर्मंड डुप्लांटिस ने फिर जीत हासिल की। और एक बार फिर, उसने विश्व रिकॉर्ड तोड़ दिया। फरवरी 2022 के बाद से यह 14वीं बार था जब इस स्वीडिश खिलाड़ी ने पुरुषों की पोल वॉल्ट में विश्व रिकॉर्ड को फिर से बनाया, जब यह 'सिर्फ' 6.17 मीटर था।

विश्व खिताब तो आसानी से मिल गया था। डुप्लांटिस ने 5.75, 5.85, 5.95, 6.00 और 6.10 मीटर की दूरी आसानी से पार करने के बाद, पहले ही प्रयास में 6.15 मीटर की ऊंचाई पर शानदार प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक हासिल किया। लेकिन रिकॉर्ड ऊंचाई की बात ही कुछ और थी। डुप्लांटिस ने कहा, 'मैं बहुत खुश हूं, मैं इसे बयां नहीं कर सकता। मुझे लगा कि जापान छोड़ने का एकमात्र तरीका विश्व रिकॉर्ड बनाना ही है।'

हर असफल प्रयास ने उनके आत्मविश्वास को और बढ़ा दिया। पहली कोशिश में, उन्होंने लगभग बार पार कर लिया; दूसरी कोशिश में, बार डगमगाया, लेकिन गिरने से पहले आखिरी क्षण तक टिका रहा। आखिरकार, अपने तीसरे प्रयास में, डुप्लांटिस 6.30 मीटर से ऊपर पहुंच गए - जो कि सिर्फ़ 27 दिन पहले उनके द्वारा बनाए गए रिकॉर्ड से एक सेंटीमीटर ज्यादा था। उन्होंने बताया, 'यही मेरी मानसिकता थी। मुझे पता था कि मेरे पास रिकॉर्ड है। जैसे ही मैं उड़ान भरता हूं - जमीन से हवा में कदम रखते ही - मुझे पता चल जाता है कि मेरी छलांग सही रहेगी या नहीं। मुझे पता चल जाता है कि मैंने पर्याप्त ऊर्जा लगाई है या नहीं, या यह वास्तव में कारगर नहीं होगा।'

सिर्फ 25 साल की उम्र में डुप्लांटिस ने सब कुछ जीत लिया है। चार साल पहले टोक्यो के इसी स्टेडियम में, लेकिन महामारी के कारण खाली सीटों के सामने, उन्होंने ओलंपिक स्वर्ण पदक जीता था। तब से उन्होंने यूजीन और बुडापेस्ट में विश्व खिताब जीते हैं, पेरिस में दूसरा ओलंपिक खिताब जीता है और अब एक और विश्व चैंपियनशिप जीत ली है, हर बार रिकॉर्ड को और ऊंचा करते हुए। टोक्यो में इस रात ने इस खेल के महानतम खिलाड़ी के रूप में उनकी विरासत को और मजबूत किया, जहां माहौल उनके प्रदर्शन से मेल खाता था। मुझे उस समय विश्व चैंपियनशिप जीतने पर गर्व है जब इसकी सबसे ज्यादा जरूरत थी। विश्व रिकॉर्ड बनाना एक बोनस है।'

उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि मेरे लिए कोई सीमा नहीं है। शायद मुझे ही पता चलेगा कि पोल वॉल्ट में असल में सीमा क्या है। आज का मुकाबला लगभग एक स्वप्निल प्रतियोगिता थी।' डुप्लांटिस और बाकी प्रतियोगियों के बीच का अंतर बहुत बड़ा था। ग्रीस के इमैनुएल करालिस ने 6.00 मीटर पर रजत पदक जीता, जबकि ऑस्ट्रेलिया के कुटिर्स मार्शल ने 5.95 मीटर पर काउंटबैक में कांस्य पदक जीता। 2012 के ओलंपिक चैंपियन और पूर्व विश्व रिकॉर्ड धारक, फ्रांस के रेनॉड लाविल्लेनी 5.75 मीटर के साथ आठवें स्थान पर रहे। मार्शल, जो दो साल पहले बुडापेस्ट में भी कांस्य पदक जीत चुके हैं, के लिए इस पल का हिस्सा बनना अपने आप में एक सम्मान की बात थी। उन्होंने कहा, 'यह एक अद्भुत रात थी। मेरा मानना है कि यह इतिहास की सबसे उच्च स्तरीय प्रतियोगिता थी।'

# ईडी ने अवैध ऑनलाइन सट्टेबाजी ऐप के मामले में पूर्व क्रिकेटर उथप्पा को पूछताछ के लिए बुलाया

नई दिल्ली ।पूर्व क्रिकेटर रॉबिन उथप्पा की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने अवैध ऑनलाइन सट्टेबाजी ऐप से जुड़े मामले में उथप्पा को 22 सितंबर को पूछताछ के लिए बुलाया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार उथप्पा को एक अवैध सट्टेबाजी ऐप से जुड़े मामले में धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत अपना बयान दर्ज कराने के लिए बुलाया गया है। इससे पहले इसी मामले में पूर्व क्रिकेटर सुरेश रैना और शिखर धवन से भी पूछताछ हुई थी। इस प्रकार उथप्पा इस मामले में फंसे तीसरे क्रिकेटर हैं। इसके अलावा इस मामले में पूर्व टीएमसी सांसद और अभिनेत्री मिमी चक्रवर्ती का भी बयान दर्ज किया गया है। वहीं बंगाली फिल्मों के अभिनेता अंकुश हाजरा इस मामले में अपने निर्धारित समन पर मंगलवार को ईडी के समक्ष पेश हुए। इस मामले में बॉलीवुड अभिनेत्री अभिनेत्री उर्वशी रौतेला भी बुलाया गया है। ईडी अवैध सट्टेबाजी ऐप्स से संबंधित मामले में कई लोगों से करोड़ों रुपये की ठगी के साथ ही कर चोरी के मामले में भी पूछताछ कर रही है। वहीं आरोपी कंपनी के अनुसार, वह एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त फर्म है, जो सट्टेबाजी कारोबार में डेढ़ दशक से काम कर रही है। कंपनी के अनुसार, इस ब्रांड के ग्राहक हजारों खेल आयोजनों पर दांव लगा सकते हैं और कंपनी की वेबसाइट और ऐप 70 भाषाओं में उपलब्ध है। वहीं पिछले माह भारत में ऑनलाइन सट्टेबाजी गेम्स को प्रतिबंधित कर दिया गया था। इसी कारण ड्रीम 11 को भी भारतीय टीम के प्रायोजक से हटा दिया गया था।

# मैंने इनकार करना सीखा है

हेट स्टोरी-2, अग्ली जैसी फिल्मों में नजर आ चुकीं सुरवीन चावला ने सेक्रेड गेम्स, क्रिमनल जस्टिस जैसी वेब सीरीज से उन्होंने ओटीटी पर अपना जलवा बिखेरा। वेब सीरीज मंडला मर्डर्स को लेकर चर्चा में रहीं सुरवीन ने अपनी फैमिली और पर्सनल लाइफ को लेकर बातें की हैं।

सुरवीन ने कहा कहते हैं ना कि इंसान कितनी भी कोशिश करे पर वही होता है, जो मंजूर-ए-खुदा होता है। हमारे प्लान से कोई फर्क नहीं पड़ता। आप लक्ष्य अपने दिमाग में रख सकते हैं लेकिन वहां पहुंचने के कई रास्ते हो सकते हैं। ये जरूरी नहीं कि सिर्फ एक ही तरह से मंजिल पर पहुंचा जाए। आप जो चीजें चुनते हो वो यह तय करती हैं कि आगे का रास्ता कैसा हो सकता है। मेरे नियंत्रण में जो चीजें हैं, उन पर ध्यान देती हूं। किसी भी काम के लिए हां, बोलना बेशक आसान होता है लेकिन मैंने इनकार करना भी सीख लिया है। मेरे हिसाब से ना बोलना बहुत ज्यादा मुश्किल होता है। वो ना आपने जो भी अब तक काम किया हुआ है, उसकी क्लास को दर्शाता है। अगर अपनी जरूरतों को पूरा नहीं करूंगी तो नाखुश रहूंगी। मैं यही मानती हूं कि जो इंसान खुद खुश है, वो ही दूसरों को भी खुशी दे सकता है। एक पत्नी, एक मां से पहले मैं भी एक इंसान हूं तो यह जरूरी नहीं कि मैं इन सब बातों को ध्यान में रखकर ही हमेशा कुछ सोचूं। बतौर सुरवीन भी तो मैं बहुत कुछ सोच सकती हूं ना। पर्दे पर इस रूप, रंग और अंदाज में मुझे पहले कभी नहीं देखा गया है। मेरी कोशिश यही रहती है कि हर बार कुछ अलग लेकर आऊं। गोपी पुथरण सर (लेखक निर्देशक) की फिल्म मर्दानी बहुत पसंद थी। वह अपने प्रोजेक्ट में औरतों को सशक्त रूप में पेश करते हैं। उनकी कहानियों में महिलाओं को पावरफुल रोल्स ही मिलते हैं। यह पहला मौका है, जब मैं किसी पॉलिटिशियन का किरदार निभा रही हूं। अनन्या भारद्वाज बहुत ही महत्वाकांक्षी महिला है, जो कि बहुत कुछ करना चाहती है। उस किरदार को मैं ब्लैक एंड वाइट तो नहीं बोल सकती लेकिन वह पूरी तरह से ग्रे भी नहीं है।

# मंकी इन ए केज फिल्म को नजरअंदाज करना मुश्किल

**टोरंटो इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल (टीआईएफएफ) के स्पेशल प्रेजेंटेशंस सेक्शन में फिल्म मंकी इन ए केज को प्रदर्शित किया गया। अनुराग कश्यप की निर्देशित फिल्म में सबा आजाद ने मुख्य भूमिका निभाई। अपने किरदार को लेकर एक्ट्रेस ने खुलकर बात की। सबा आजाद ने बताया कि उनके किरदार खुशी को निभाने के लिए उन्हें एक जटिल और नैतिक रूप से पेचीदा दुनिया में कदम रखना पड़ा।**

उन्होंने कहा, अभिनय का मतलब यह नहीं है कि हमें उन सभी अनुभवों से गुजरना पड़े जो हमारे किरदारों ने किए हैं, बल्कि यह है कि हम उन पात्रों के साथ सहानुभूति कर सकें, चाहे वे कितने भी नैतिक रूप से उलझे हुए हों। मैंने खुशी के किरदार के साथ-साथ सहानुभूति रखने की पूरी कोशिश की। सबा ने आगे कहा कि अनुराग कश्यप की फिल्में दर्शकों के मन में लंबे समय तक रहती हैं। न्होंने कहा, अनुराग कश्यप की फिल्में दर्शकों पर गहरी छाप छोड़ती हैं। दर्शक जब थिएटर से बाहर निकलते हैं तो उनके दिमाग में फिल्म की कहानी का असर होता है। यह भी ऐसी ही फिल्म है, जो जरूर चर्चा पैदा करेगी और अलग-अलग लोगों में विरोधाभासी भावनाएं जगाएगी। लोग इसे पसंद करेंगे, हो सकता है कुछ लोग इसे नापसंद भी करें, लेकिन इसे नजरअंदाज नहीं कर पाएंगे। ल्म में बॉबी देओल, सान्या मल्होत्रा और सपना पब्बी जैसे कलाकार भी हैं।

मंकी इन ए केज एक संवेदनशील विषय पर बनी फिल्म है, जो एक सुपरस्टार पर लगे रेप के आरोप और इसके आसपास के सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों को दिखाती है। देओल के साथ अपनी ऑन-स्क्रीन केमिस्ट्री के बारे में सबा ने बताया कि उनकी शुरुआत में सामान्य बातचीत हुई, लेकिन जैसे-जैसे काम करना जारी रखा, उनकी बॉन्डिंग और भी मजबूत हो गई। उन्होंने बॉबी की तारीफ करते हुए कहा, बॉबी एक बड़े दिल वाले कलाकार हैं, वह फिल्म में पूरी ईमानदारी के साथ अपना किरदार निभाते हैं। उनके साथ काम करना एक शानदार अनुभव था।

# लक्ष्मी मांचू ने अपने ऊपर चल रहे बेटिंग एप मामलों पर प्रतिक्रिया दी

**तेलुगु अभिनेत्री लक्ष्मी मांचू उस समय सुर्खियों में आ गई थीं, जब उन्हें ईडी द्वारा समन भेजा गया था। जांच एजेंसी के अनुसार इनपर कथित तौर पर अवैध तरीके से पैसा जुटाने वाले ऑनलाइन सट्टेबाजी एप्स को सपोर्ट देने का आरोप था। इसी के बाद से एक्ट्रेस विवादों में घिर गई थीं। अब उन्होंने इस पर प्रतिक्रिया दी है।**

लक्ष्मी मांचू ने अपने ऊपर चल रहे बेटिंग एप मामलों पर प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा, आप जानते हैं, यह ईडी की बैठक है। मुझे यह बहुत अजीब लगता है कि हमारी सरकार उस व्यक्ति के पीछे पड़ जाएगी। मैं सोचती हूं, भाई देखो तो इसकी शुरुआत किसने की थी।

## केस को गलत तरीके से पेश किए जाने पर निराश

आगे उन्होंने कहा, मैं बहुत परेशान थी, क्योंकि लोग कुछ भी बोलते हैं, हमने जो किया वो कुछ और है। बेचारे, वो तो सच में इस बात की जांच कर रहे हैं कि पैसा कहां जा रहा है। 100 और सेलिब्रिटीज ऐसा करते हैं। वो मुझे कोई और सेलिब्रिटी दिखाते हैं, जिसने ऐसा किया है और फिर मेरे पास आते हैं, है ना? ये तो बस एक मिनट की बात है।'

## इन एक्टर्स पर लगे आरोप

ईडी इन दिनों ऑनलाइन सट्टेबाजी के जरिए अवैध तरीके पैसा जुटाने मामले पर जांच कर रही है। इसी मामले के तहत लक्ष्मी मांचू के अलावा राणा दग्गुबाती, प्रकाश राज और विजय देवरकोंडा जैसी कई हस्तियां जांच के दायरे में आए थे। ईडी के सोर्स के अनुसार इन सेलिब्रिटी पर जंगली रम्मी, जीतविन, लोटस365 जैसे ऑनलाइन सट्टेबाजी एप्स को सपोर्ट करने का शक था। हालांकि, कई एक्टर्स ने इन एप्स का प्रचार भी किया था। सूत्रों के अनुसार ही बैटिंग प्लेटफार्म पर अवैध सट्टेबाजी और जुए के जरिए से करोड़ों रुपये का अवैध पैसा हासिल किया गया है। अभी भी इसकी जांच चल रही है।

# शाहिद कपूर ने शुरू की कॉकटेल 2 की शूटिंग

## कृति-रश्मिका भी आएंगी नजर

साल 2012 में आई फिल्म कॉकटेल ने अपनी कहानी, म्यूजिक और स्टारकास्ट से दर्शकों का दिल जीता था। अब निर्देशक होमी अदजानिया इसका सीक्वल लेकर लौट रहे हैं, जिसमें इस बार नजर आएंगे शाहिद कपूर, कृति सेनन और रश्मिका मंदाना। कॉकटेल 2 को लेकर जब से अपडेट आया है तब से ही इन सितारों के फैंस काफी एक्साइटेड हैं।

### कृति और रश्मिका की एंट्री

फिल्म में कृति सेनन और रश्मिका मंदाना भी नजर आने वाली हैं। कृति सेनन इससे पहले भी शाहिद के साथ स्क्रीन शेयर कर चुकी हैं। फिल्म तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया में दोनों के काम को पसंद किया गया था। वहीं, रश्मिका मंदाना अपनी ताजगी और चार्म से दक्षिण भारत के साथ-साथ हिंदी दर्शकों के बीच भी लोकप्रियता हासिल कर चुकी हैं। तीनों कलाकारों का एक साथ आना फैन्स के लिए किसी ट्रीट से कम नहीं है।

### यूरोप और भारत में होगी शूटिंग

फिल्म की शूटिंग भारत के अलग-अलग हिस्सों और यूरोप के खूबसूरत लोकेशन्स पर की जाएगी। माना जा रहा है कि कॉकटेल केवल कहानी और किरदारों की वजह से ही नहीं, बल्कि अपने शानदार बैकग्राउंड और विजुअल ट्रीटमेंट से भी सभी को हैरान कर सकती है। रिपोर्ट्स के अनुसार, फिल्म का शेड्यूल जनवरी 2026 तक पूरा कर लिया जाएगा।

### होमी अदजानिया ही करेंगे डायरेक्ट

हाल ही में निर्देशक होमी अदजानिया की पत्नी और सेलिब्रिटी स्टाइलिस्ट अनैता श्रॉफ अदजानिया ने सोशल मीडिया पर फिल्म की स्क्रिप्ट की एक झलक साझा की थी, जिसमें वर्क इन प्रोसेस हैशटैग लिखा था। इसके बाद से ही लोगों को इस फिल्म की शुरुआत का अंदाजा हो गया था।

# दिल से बनी कहानियां ही परदे पर टिकती हैं...

मोहित सूरी कहते हैं... सैय्यारा कहानी हमने खुद को दर्शकों से अलग रखकर नहीं बनाई। इसमें पहले प्यार के जज्बात, स्ट्रॉन्ग कमिटमेंट और हमारी अपनी सोच का मेल है। यह एक कंप्लीट कहानी है। फिलहाल इसके सीक्वल पर कोई चर्चा नहीं हुई लेकिन इसने इंडस्ट्री के विश्वास को जरूर मजबूत किया है। कोविड के बाद जब हर कोई बड़े बजट की एक्शन फिल्में बना रहा था, हेलिकॉप्टर उड़ रहे थे, इमारतें गिर रही थीं। मुझे अचानक एहसास हुआ कि इस दौड़ में कहीं असली इमोशन खो गया है। मैंने भी एक्शन फिल्म बनाई थी और खुद को उसी भीड़ में खोया पाया। तभी सोचा कि क्यों न वह करूं, जो बाकी नहीं कर रहे। मैंने अपने असिस्टेंट्स संकल्प सदाना और रोहन शंकर को बुलाया और अपने दिल में पल रहे एक विचार पर काम शुरू किया। तब हमारे पास कोई प्रोड्यूसर तक नहीं था।

### पठान की सफलता के बाद आदित्य चोपड़ा एक लव स्टोरी की तलाश में थे

दिलचस्प किस्सा है कि जब मोहित ने यह स्क्रिप्ट आदित्य चोपड़ा को सुनाई तो वह तुरंत कनेक्ट हो गए। मोहित कहते हैं... आदित्य सर उस वक्त पठान जैसी बड़ी एक्शन फिल्म बना चुके थे और टाइगर जैसी फ्रेंचाइजी पर काम कर रहे थे। फिर भी उनका विजन था कि अब एक नई तरह की लव स्टोरी बनाई जाए। उन्होंने खुद बताया कि वह तीन-चार साल से एक अच्छी लव स्टोरी की तलाश में थे। दिल से बनाई गई चीज ही दर्शक ढूंढते हैं।

### दूसरों के मापदंडों पर चला तो असफल रहा...

मोहित खुद 21 साल से अपनी पत्नी के साथ हैं और मानते हैं कि रिश्तों की अहमियत उनकी फिल्मों में झलकती है। उन्होंने कहा... मेरी मां के न होने की वजह से शायद मैं रिश्तों को ज्यादा गहराई से समझता हूं। इसीलिए मेरी कहानियों में नायक भले आवारा दिखें, पर वे कभी भी कमिटमेंट से नहीं भागते। अपनी फिल्मों के अनुभव पर वह कहते हैं... जब-जब मैंने दूसरों के मापदंडों पर चलने की कोशिश की, मैं असफल हुआ लेकिन जब मैंने अपनी भावनाओं और अनुभवों से कहानियां बनाई, तब वह चलीं। फिल्मों का सच यही है, जितना व्यक्तिगत और ईमानदार आप होंगे, उतना ही दर्शक जुड़ेंगे।

### मैं दर्शकों से खुद को अलग नहीं रखता...

अपनी ऑडियंस अप्रोच पर मोहित का कहना है कि वह खुद को दर्शकों से अलग नहीं रखते। वे कहते हैं... मैं कोई बिजनेसमैन नहीं हूं कि सोचें किस वर्ग को टारगेट करना है। अगर कोई कहानी मुझे छूती है, तो मैं मानता हूं कि वह दर्शकों को भी छुएगी। इस फिल्म में हमने कोई कैलकुलेशन नहीं की, बस वही किया जो दिल को सही लगा।

### सीक्वल पर कोई चर्चा नहीं हो रही है...

सैय्यारा की अपार सफलता के बावजूद मोहित का कहना है, अभी तक सीक्वल पर कोई चर्चा नहीं हुई है। यह अपने आप में पूरी कहानी है। आदि सर भी ऐसे नहीं हैं कि तुरंत सीक्वल का सोचें। उनके साथ जो बातचीत होती है, वह हमेशा इमोशनल और मेंटरिंग लेवल पर होती है।

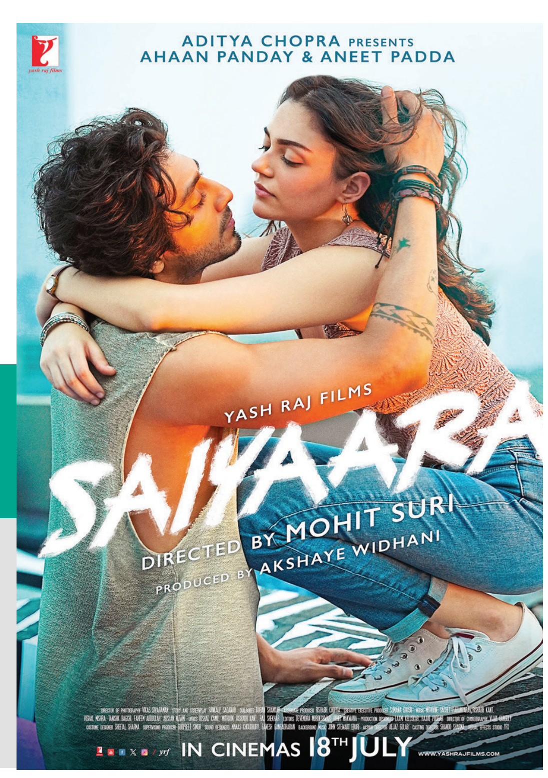

# तटीय दीव

## में पर्यटकों के लिए है बहुत कुछ

**यह** स्थान वर्ष 1961 से पहले पुर्तगाली शासन के अधीन था तथा गोवा और दमन के साथ ही इसे स्वतंत्रता प्राप्त हुई थी। ठंडी समुद्री हवा के झोकों तथा प्रदूषण रहित वातावरण के कारण यहां आकर सैलानियों को काफी राहत महसूस होती है।

लंबे विदेशी शासन के कारण दीव के भवनों, किलों, भाषा व संस्कृति तथा जीवनशैली पर पुर्तगाली सभ्यता का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। यहां गुजराती, हिन्दी, अंग्रेजी तथा पुर्तगाली भाषाएं बोली व समझी जाती हैं। यहां के निवासियों को फूलों से बेहद लगाव है इसलिए लगभग हर मकान में फूलों के पौधे आपको अवश्य देखने को मिलेंगे।

दीव का प्रमुख आकर्षण यहां का किला है जोकि लगभग 5.7 हेक्टेयर क्षेत्र में बना हुआ है और सागर के अंदर समाया हुआ प्रतीत होता है। इस किले का निर्माण वर्ष 1535-41 के बीच में गुजरात के सुलतान बहादुरशाह व पुर्तगालियों द्वारा किया गया था। किले के बीच में पुर्तगाली योद्धा डाम नूनो डी कुन्हा की कांसे की मूर्ति भी बनी हुई है। यहां एक प्रकाश स्तंभ भी बना हुआ है जहां से पूरे दीव का नजारा दिखता है। प्रकाश स्तंभ से आवाज देने पर उसकी प्रतिध्वनि भी सुनाई देती है।

पानीकोट का दुर्ग पत्थर की विशाल शिलाओं से बना हुआ है। यह दुर्ग एक समुद्री जहाज के आकार का नजर आता है। इस सुंदर दुर्ग तक पहुंचने के लिए नाव अथवा मोटरबोट की सहायता लेनी पड़ती है क्योंकि यह खाड़ी के मुहाने पर तट से लगभग दो किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। दुर्ग के बीचोंबीच एक गिरजाघर व प्रकाश स्तंभ भी है।

आप सेंट पाल चर्च भी देखने जा सकते हैं। वर्ष 1610 में बनी यह चर्च धार्मिक और ऐतिहासिक, दोनों ही दृष्टि से महत्वपूर्ण है। आप दीव घूमने आए ही हैं तो नगोआ बीच जरूर जाएं। इस बीच को भारत के सुंदरतम तटों में से एक माना जाता है। इसका आकार घोड़े की नाल के समान है, जिस पर सुनहरी रेत बिखरी हुई है। इसकी लंबाई दो किलोमीटर है तथा रहने के लिए यहां तंबू लगाने की सुविधा भी है।

सनसेट प्वाइंट सागर तट की गरजती लहरों के बीच एक पहाड़ी पर स्थित है। यहां पर एक उद्यान और ओपन एअर थियेटर बनाया गया है तथा स्नान के बाद कपड़े बदलने के लिए कमरों की भी व्यवस्था है।

दीव के अन्य दर्शनीय स्थलों की बात करें तो केवड़ी में स्थित संगीत फुहारे, सेंट थामस चर्च, नवलखा पार्श्वनाथ मंदिर, सोमनाथ मंदिर, जामा मस्जिद, दीव संग्रहालय, गोमती माता सागर तट, घोघला सागर तट व मांडवी नगर आदि प्रमुख हैं। दीव में एक विचित्र आकार का ताड़ का पेड़ होता है जिसमें ऊपर एक के स्थान पर दो तने होते हैं, यह पेड़ अंग्रेजी के वाई आकार का दिखता है, इसको होक्का ताड़ भी कहते हैं।

दीव के हवाई अड्डे पर जेट एअर की मुंबई से प्रतिदिन की उड़ाने हैं। यदि यहां रेल मार्ग से आना चाहें तो आपको निकटतम रेलवे स्टेशन वेरावल पड़ेगा। जहां से आपको दीव तक के लिए बस सेवा उपलब्ध हो जाएगी।

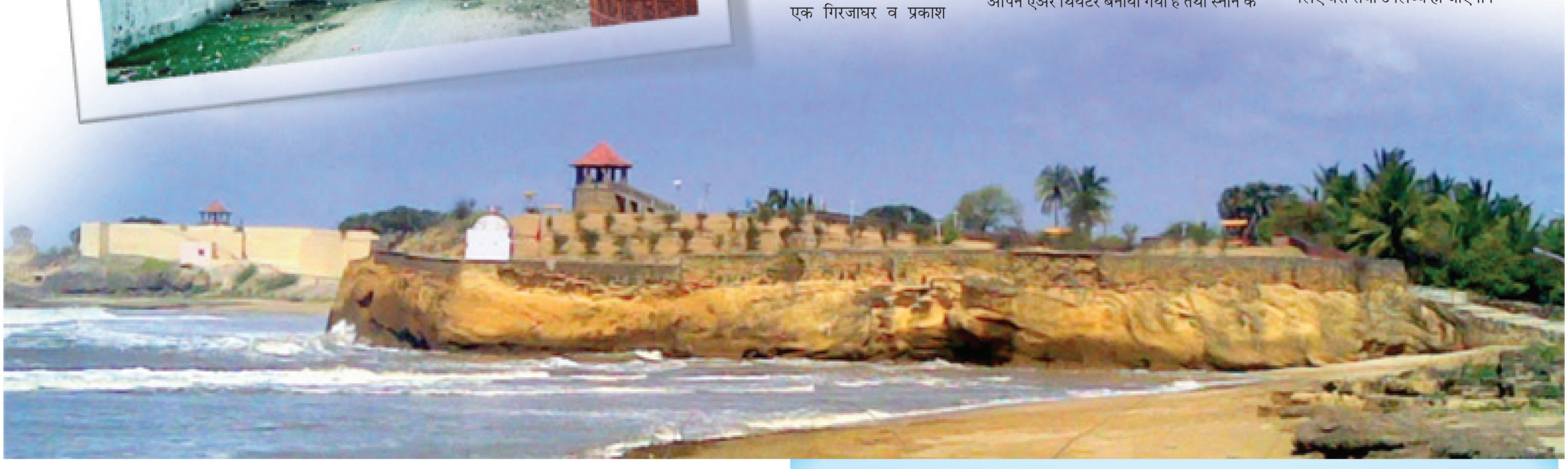

# चीन में कीजिए बाघ की सवारी

बीजिंग। बाघ को देखकर लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। लेकिन चीन के एक चिड़ियाघर में पर्यटकों को बाघ की सवारी कराई जा रही है। पर्यटक भी बेखौफ होकर इसका लुत्फ ले रहे हैं। इसका खर्चा मात्र 30 युआन (करीब दो सौ रुपए) है। झेजियांग राज्य के वेनझोऊ चिड़ियाघर में पर्यटकों को बाघ की सवारी करवाई जा रही है।

यही नहीं बाघ पर बैठकर वह अपनी फोटो भी खींचा सकते हैं। हालाँकि कई लोग इसकी आलोचना भी कर रहे हैं। वेनझोऊ मेट्रोपोलिटन न्यूज के अनुसार यहां प्रतिदिन बाघ का शो किया जाता है। करीब बीस मिनट के शो के बाद पर्यटकों को बाघ को छूने के लिए बुलाया जाता है।

चिड़ियाघर के तीन कर्मचारी इस दौरान बाघ पर नियंत्रण रखते हैं। एक कर्मचारी पर्यटक को बाघ पर बैठाकर फोटो खींचता है। इसके एवज में वहाँ मौजूद एक महिला शुल्क वसूलती है। महिला ने बताया यह बाघ पालतू हैं और उसके दाँत और नुकीले नाखून निकाल दिए गए हैं।

वहीं एक पर्यटक लाओ शिबो ने इस पर नाराजगी जाहिर की । उसने कहा यह काफी खतरनाक है। यह जानवरों के साथ दुर्व्यवहार करने जैसा है।

चिड़ियाघर को पर्यटकों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए फोटो खिंचाने की इजाजत नहीं देनी चाहिए। चिड़ियाघर के प्रवक्ता ने बताया कि हमने इसके लिए प्रशिक्षित लोगों को रखा है। हम उन्हें इसके लिए भुगतान करते हैं।

# घर बैठे घूमें रूस और यूरोप

ट्रांस साइबेरियन रेलवे की विश्व प्रसिद्ध छह दिनी रेल यात्रा का लुत्फ अब अपने कम्प्यूटर पर लिया जा सकता है। यह यात्रा रूस की राजधानी मॉस्को से शुरू होकर व्लादिवोस्तक के प्रशांत महासागर के तट पर समाप्त होती है।

गूगल रशिया और रशियन रेलवे के संयुक्त प्रयासों से एक नई वेबसाइट के जरिए ट्रांस साइबेरियन रेलवे की वर्चुअल जर्नी लॉन्च की गई है।

गूगल पर छह दिन की वीडियो फुटेज लॉन्च की गई है, जो मॉस्को से व्लादिवोस्तक की लगभग छह हजार मील की यात्रा कवर करती है। 6590 रूबल यानि 9836 रुपए प्रति व्यक्ति टिकट वाली यह यात्रा इंटरनेट पर मुफ्त में की जा सकती है।

छह दिनों के इस फुटेज को अगस्त 2009 में तैयार किया गया। इस छह दिन की यात्रा को फिल्माने में कुल 30 दिन लगे। चूंकि इसे केवल दिन की रोशनी में ही रेल की खिड़की से फिल्माया गया है।

### यूरोप-एशिया के खूबसूरत नजारे

इस यात्रा के दौरान ट्रांस साइबेरियन रेलवे से दिखने वाल सारे नजारे गुजरते हैं। शीशे सी चमकती खूबसूरत बैकाल झील, वोल्गा नदी, बरगुजीन के पर्वत, तमाम गाँवों के नजारे, बादलों से ढकी पर्वत श्रृंखलाएँ, धुंध में लिपटी वादियाँ और भी ढेरों खूबसूरत नजारे।

लियो तोलस्तोय, रूसी लोकगीत यात्रा में रेल की मधुर ध्वनि का साथ भी चुन सकते हैं और रूसी लोकधुनों का भी आनंद ले सकते हैं। इनसे ऊबे तो लियो तोलस्तोय की क्लासिक रचना 1400 पन्नों की 'वार एण्ड पीस' को भी सुन सकते हैं। साथ ही निकोलाय गोगोल की 'डेड सोल' भी उपलब्ध है। रास्तों को समझने में वर्चुअल गाइड डीजे येलेना भी मदद करेगी।

आँकड़ों में ट्रांस साइबेरियन रेलवे 5753 मील मॉस्को से व्लादिवोस्तक
2 महाद्वीप यूरोप और एशिया
7 टाइम जोन
6 दिन बिना रूके यात्रा
87 रूसी शहर
150 घंटे की वीडियो फुटेज वर्चुअल यात्रियों के लिए